ऐतिहासिक जैन नाटक

रचयिता :

सौ० प्रेमलतादेवी

"कौमुदी"

प्रकाशक :

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,

दिगम्बर जैन पुस्तकालय,

गांधीचौक–सूरत।

स्व० श्री० नंदकोरबाई ध० प०

स्व० सेठ चुन्नीलाल हेमचंद

जरीवालोंके स्मरणार्थ

'जैन महिलादर्श'

के ३३वें वर्षके

ग्राहकोंको

भेंट।

卐

मूल्य :

डेढ़ रुपया।

अनंतमती

ॐ ३५६४

अनन्तमती

[ऐतिहासिक जैन नाटक]

रचयिता—
श्री० सौ० प्रेमलता कौमुदी, विशारदा,
ध० प० पं० रविचन्द्र जैन शशि, साहित्यरत्न—दमोह ।

प्रकाशक—
मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
दिगम्बर जैन पुस्तकालय, गांधीचौक—सूरत ।

स्व० श्रीमती नंदकौरबाई (उर्फ काशीबहिन) ध० प०
स्व० सेठ चुन्नीलाल हेमचन्द जरीवाले—बम्बईकी
विधवाके स्मरणार्थ "जैन महिलादर्श" के
३३ वें वर्षके ग्राहकोंको सादर भेंट ।

प्रथमावृत्ति] वीर सं० २४८० [प्रति १०००

मूल्य १-८-०

" जैनविजय " प्रि० प्रेस, गांधीचौक—सूरतमें मूलचन्द किसनदास
कापड़ियाने मुद्रित किया ।

इस 'अनंतमती' नाटक ग्रन्थकी लेखिका श्रीमती सौ० पुष्पलता कौमुदी विशारदा जो कि श्री पं० मूलचन्दजी जैन वत्सल दमोहकी विदुषी पुत्री हैं, तथा पं० रविचन्द्र जैन शशि साहित्यरत्नकी पत्नी हैं व वर्तमानमें दमोहमें ही रहती हैं उन्होंने यह नाटक सेवाभावसे व जैन समाजके कल्याणके लिये लिखा है जिसका भाव समाज सुधार व धर्म प्रचार ही है। आपकी प्रस्तावना आदि पढ़नेसे पाठकोंको मालूम होगा कि आप कैसी विदुषी व कैसी सेवाभावी हैं।

आपकी यह कृति हमारे पास दो तीन सालसे पड़ी थी जो आज प्रकटमें आ रही है। आशा है श्री० सौ० प्रेमलता कौमुदी ऐसी अन्य रचनायें भी करके जैन स्त्री समाज कर कल्याण करेंगी। "जैन महिलादर्श" के उपहारके सिवाय इस ग्रन्थकी कुछ प्रतियां विक्रयार्थ भी निकाली गई हैं, आशा है इसकी इस प्रथमावृत्तिका शीघ्र ही प्रचार हो जायगा।

सूरत।
ता० २–१०–'४४.

निवेदकः—
मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
—प्रकाशक।

अपनी बात।

यह नाटक मेरे छाया-जीवनका स्मृति पुष्प है। जिसमें शैशवकी पावन अनुभूतियोंका सौरभ, कल्पनाकी भोली सुकुमारता एवं अकृत्रिम भावनाओंका सहज सौन्दर्य है।

श्रद्धेय ब्र० पं० चन्दाबाईजी आराके सान्निध्यसे हृदयमें जिन पूत भावनाओंने अपना साम्राज्य स्थापित किया था उन्हींकी यह सरल झांकी है।

उनकी गंभीर संयमित तपोमयी जीवन कलाओं, सद्विचारोंसे भरी प्रेरणाओं तथा उनसे उत्पन्न उनके तेजस्वी ओजपूर्ण तथा दर्शन करते ही श्रद्धेय मुखमण्डलके समीप ऐसे विचारोंका विकास पाना अनिवार्य ही था।

वर्तमानके विषाक्त भौतिक वातावरणमें मानवता ठुकराई जा रही है, संयम, तपस्या, सदाचार ठीक गतिसे मृत्युके मुखकी ओर बढ़ रहे हैं, यह नाटक ऐसे समयमें अमर प्रकाशस्तंभ साबित होगा।

प्रवृत्तियोंके आगे सिर झुकानेकी अपेक्षा उन पर विजय प्राप्त करना ही वीरता है। समय कभी अच्छा या बुरा नहीं होता--किसीके आगे कभी न झुकनेवाला, धैर्य एवं साहसको न खोनेवाला सबल साधनामयी हृदय कभी भी किसीके भी द्वारा जीता जा सकता है। आत्मिक बल ऐसा अमोघ अपराजित शस्त्रास्त्र है जिसके आगे संसारकी समस्त शक्तियां बरबस हार मान लेती हैं।

समय तथा परिस्थितियां सदा नहीं आतीं, सदा नहीं रहतीं। वे मानवकी परीक्षिका हैं। विपत्तियोंकी कसौटीमें तपकर ही सद्गुण-स्वर्णकी परख होती है।

संसारमें सौन्दर्य तथा वैभवकी सीमा नहीं है। पारिवारिक जीवनमें सन्तोष पारसके स्पर्शसे समस्त दुर्गुण उज्वल हो जाते हैं।

कहा जाता है वैधव्य हिन्दू समाजका कलंक है किन्तु विचारमें यह समाजका "**अनुपम शृङ्गार**" "**अनमोल मुकुटमणि**" तथा "**निर्मल आदर्श**" है।

भारतीय नारी स्वभावसे ही त्याग तपस्या तथा समपर्णमयी है, दुग्धकी तरह निर्मल हृदयवाली है किन्तु पाश्चात्य सभ्यताकी चहकमें आकर उन्हें वासना विलासिताकी ओर झुकनेको विवश किया गया है। आज तो तलाक ! जैसी खतरनाक चीज भी हमारे समाजके लिए आवश्यक हो गई है ! कितना पतन होगया है हमारा ?

प्रवृत्तियोंकी वागडोर ढीली करनेसे उन पर विजय नहीं पाई जा सकती।

अनन्तमतीका जीवनचरित्र बताता है कि सुकुमार किन्तु दृढ़ प्रतिज्ञ साध्वी बालिका किस तरह हँसते२ सब विपत्तियोंको झेल सकती है, किस प्रकार शक्ति एवं वैभवके मदमें अन्धे पुरुषोंको पराजित कर सकती है।

मेरा अमिट विश्वास है यह नाटक विलास-प्रिय एवं दुर्बल हृदयवाली भोली बहिनोंको पथ-प्रदर्शकका काम देगा, उनमें साहस धैर्य एवं दृढ निश्चयकी जड़ मजबूत करेगा।

मुझे यह स्वीकार करनेमें तनिक भी संकोच नहीं होता कि इस नाटकमें शैशवकी कल्पना मयी भावुकता अधिक है किन्तु प्रौढ़ तथा गंभीर विचार-धाराओंका अभाव है। फिर भी "अनन्तमती" समालोचक ही समाजमें उसका मूल्य निर्धारित करेंगे।

जबलपुर
१ अक्टूबर ५४.

विनीता—
—प्रेमलता कौमुदी।

उज्वल नारीत्वकी प्रतीक, भारतका शृङ्गार—

ब्र० पं० चंदाबाईजी

आराके

कराम्बुजोंमें—

सादर समर्पण।

ज्ञान नभ तारिका तारिका स्नेहकी,
हैं सजीव मूर्ति आप त्याग तप संयमकी।
बालब्रह्मचारिणी विवेक ज्योतिसे हरी,
घोर घटा वासना विलासिताके तमकी।
शूल वन पार कर अपार विपदाओंका,
मंजुल पुनीत आत्मज्योति चमकाई है।
आत्म त्याग आत्मबल समतासे क्षमतासे,
पूर्व नारियों सी दिव्य दीप्ति दमकाई है।
विज्ञ करुणामयी, दानमयी त्याग शीला,
मंजु कुसुमोंसे भर आज हृदयाञ्जलि।
नवलप्रभा भरी अनन्तमती नाटिका,
सादर सप्रेम है विनीत श्रद्धाञ्जलि।

गुणानुरागिणी—"प्रेम"

अनन्तमती नाटकके पात्र ।

अभिनेता ।

प्रियदत्त ... ...

भीलराज ... ... असभ्य कामुक पुरुष

सुशीलकुमार ... ... क्रांतिकारी युवक सुधारक

कचौड़ीमल ... ... आंखका अन्धा गांठका पूरा सेठ

रामभजनसिंह ... ... सीतापुरका चौधरी

सुमनकुमार ... ... रसिक कामलोलुप युवक

पुष्पक ... ... धर्मात्माके नामसे मशहूर पापी सेठ

सिंहराज ... ... राजा

वर्फीमल, मलाईमल, मस्तराम ... ... मस्त नागरिक

अभिनेत्री—

अङ्गवती ... ... सेठ प्रियदत्तकी स्त्री

अनन्तमती ... ... अङ्गवतीकी पुत्री

कमलावती ... ... एक विधवा गरीब महिला

सरोजनी, माधुरी ... ... अनन्तमतीकी सखियां

शारदा, शीला ... ... कमलावतीकी लड़कियां

कामसेना ... ... प्रसिद्ध वेश्या

चन्द्रकला ... ... भोली दुखिया स्त्री

शान्ता, विमला ... ... नारी सेवा-सदनकी कार्य-कर्त्री

तपस्विनी, वृद्धा आदि...............

विषय-सूची।

स्व० श्रीमती नंदकौरबाई उर्फ काशीबहिन।
रुग्णावस्थामें १ वर्ष पहिले लिया गया चित्र। पासमें आपकी
सेवाभावी विधवा पुत्री नवलबहिन खड़ी हैं।

Jain Vijaya P Surat.

स्वर्गीय श्रीमती नंदकोरबाई उर्फ काशीबहिन,

धर्मपत्नी स्व० सेठ चूनीलाल हेमचन्द जरीवाले–बम्बई।

जन्मः–सूरतमें | स्वर्गवासः–बम्बईमें

सं० १९२२ पौष वदी १२ | सं० २०११ वैशाख वदी १

(यह चित्र स्वर्गवासके दो वर्ष पहलेका है)
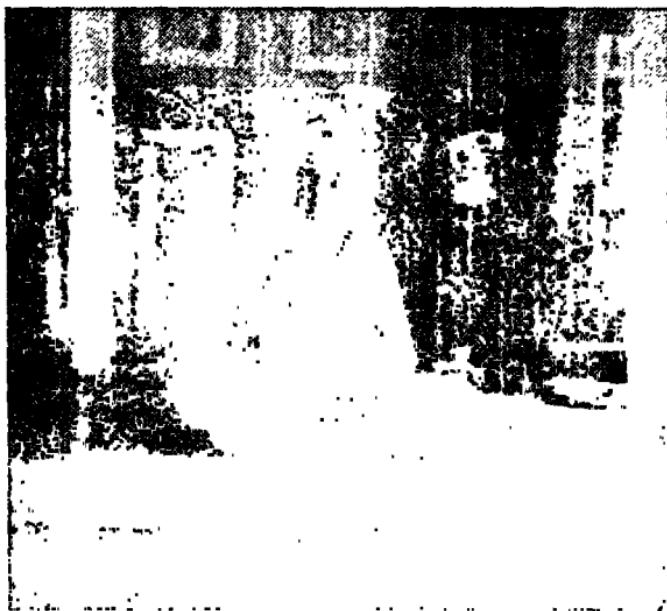
स्व० श्रीमती नंदकौरबाई (उर्फ काशी बहिन)

धर्मपत्नी, स्व० सेठ चुन्नीलाल हेमचन्द जरीवाले—बम्बईका—

संक्षिप्त जीवनचरित्र ।

बम्बई निवासी महान् धर्मात्मा, परोपकारी और वयोवृद्ध हमारी ज्येष्ठ भगिनी स्व० श्री० काशीबहिन उर्फ नंदकौरबाई, (बीसाहूमड़ दिगम्बर जैन) कि जिनके स्मरणार्थ यह ग्रन्थ "जैन महिलादर्श" के २३ वें वर्षके ग्राहकोंको भेंट दिया जाता है उनका संक्षिप्त जीवन परिचय उपयोगी और अनुकरणीय होनेसे यहां देना योग्य मालूम होता है ।

— जन्म —

श्रीमती काशीबहिनका जन्म सूरतमें श.ह कल्याणचन्द्र पूनमचन्द्रके यहां सं० १९२३ में हुआ था और आपकी माता आपको १५ दिनकी छोड़कर स्वर्गवासी हुई थी तो पिताजी ९ वर्षकी छोड़कर शिखरजीकी यात्रासे लौटते हुए बनारसमें स्वर्गवासी हो गये थे अतः काशीबहिनकी सार सम्हाल व शिक्षा हमारे यहां हमारे पिताजी श्री किसनदास पूनमचन्दजी कापड़ियाने की थी क्योंकि आप पिताजीके ज्येष्ठ भ्राता थे । काशीबहिनकी शिक्षा गुजराती पांचवीं कक्षा तक हुई थी लेकिन नियमित स्वाध्यायके अनुभवसे आप हिन्दी, मराठी, संस्कृत, प्राकृत भी पढ़ लेती थीं और भक्तामर, तत्वार्थ, बृहत् सामायिक प्रतिक्रमण तो आपको जैसे कंठाग्र हो गये थे ।

— विवाह —

बहिन काशीबहिनका विवाह बम्बईमें सेठ चुन्नीलाल हेमचन्द जरीवाले जिनके पिता सेठ हेमचन्द प्रेमचन्द—सलूम्बर (उदयपुर)

निवासी जो व्यापारार्थ वम्बई आकर बसे थे उनके साथ सूरतमें हुआ था। सेठ चुन्नीलालजी बम्बईमें मिरजा स्ट्रीटमें जरीका व्यापार अपने बड़े भ्राता सेठ प्रभूदासजीके साथ करते थे और पीछेसे बड़े भाईसे अलग होकर जरीकाम व रेशमी कापड़का स्वतन्त्र व्यापार कालबादेवी रोडपर करते थे (जो आज भी चालू है) जिसमें आपने महान् सफलता प्राप्त की थी, जिससे सौ० नन्दकौरबाई बहुत सुखी हुई थीं और आप धर्मप्रेमी होनेसे दानधर्ममें बारबार अग्रसर रहती थीं।

आप जबसे बम्बई गईं तबसे स्वाध्यायका नियम लिया था। जिससे आपका धर्मज्ञान कम होनेपर भी अनेक धर्म–शास्त्रोंके स्वाध्यायसे आपने जैनधर्मका गूढ़ रहस्य भी समझ लिया था व कई भाई बहिन तो धर्मकार्योंमें आपकी सलाह लेने आते थे।

— व्रत, यात्रा दान और धर्मध्यान —

श्री नंदकौरबाईको जैन धर्मके व्रत-तपस्या पर इतनी अधिक श्रद्धा हो गई थी कि आपने अपने जीवनमें करीब ४१ व्रतोंके सैंकड़ों उपवास किये थे जिनके नाम इसलिये नीचे दिये जाते हैं कि दूसरी बहिनों व भाईयोंको आपके व्रतोंका अनुकरण करनेका प्रोत्साहन मिले।

१–मुकुट सप्तमी (७ वर्ष उद्यापन सहित)
२–फल-अक्षय दशमी (१० वर्ष उद्यापन सहित)
३–रविवार–आदित्य व्रत (९ वर्ष उद्यापन सहित)
४–रविवार पंचमी (पांच वर्ष)
५–निर्दोष सप्तमी व्रत (७ वर्ष उद्यापन सहित)
६–मौन एकादशी व्रत (११ वर्ष उद्यापन सहित)
७–चन्दनषष्ठी व्रत (६ वर्ष उद्यापन सहित)
८–पन्द्रह तिथिके १५ उपवास–पन्द्रहवार किये थे

९–तत्वार्थसूत्रके १३ उपवास उद्यापन सहित
१०–भक्तामर स्तोत्रके ५२ उपवास व उद्यापन
११–सहस्रनामके १३ उपवास व उद्यापन
१२–त्रेपन क्रियाव्रतके ५३ उपवास व उद्यापन
१३–रत्नत्रय व्रतके तीन उपवास व उद्यापन
१४–दशलक्षण व्रतके १०–१० उपवास दो वार व उद्यापन
१५–सोलहकारण व्रतके (१६ प्रोषधोपवास) करके उद्यापन
१६–दशलक्षण व्रत १० वर्ष तक किया था
१७–पुष्पाञ्जलि व्रतके ५ उपवास व उद्यापन
१८–कवलाहार (कवलचन्द्रायण) व्रत किया था
१९–कर्मदहन व्रतके ५३ उपवास व उद्यापन
२०–रविवार (पांखड़ी) व्रत ९ वर्ष करके उद्यापन
२१–फलव्रत (एक माहतक एकांतर उपवास) किया
२२–फलव्रतके उपवास किये
२३–द्रव्य व्रतके उपवास किये
२४–दीपक व्रतके उपवास किये
२५–देवव्रतके उपवास व उद्यापन
२६–अष्टाह्निका व्रत (तीनों ऋतुओंका) आठ वर्ष तक करके बड़ा उद्यापन सं० १९९१ में किया था, उस समय सिद्धचक्र विधान गुलालवाड़ीमें कराया था, और इस व्रतके उपलक्षमें "गृहिणी कर्तव्य" नामक २०४ पृष्ठोंका स्त्रियोपयोगी ग्रन्थ (सौ० लज्जावतीजी कृत) 'जैन महिलादर्श' के २० वें वर्षके ग्राहकोंको भेंट बँटवाया था जो एक बड़ा भारी शास्त्रदान था।
२७–मेघमाला व्रतके उपवास व उद्यापन

२८–सम्यग्दर्शन (८), सम्यग्ज्ञान (८) व सम्यग्चारित्रके १३ उपवास व उद्यापन

२९–ज्ञानपच्चीसीके २५ उपवास व उद्यापन

३०–श्रुतस्कन्ध व्रतके ३० उपवास व उद्यापन

३१–सुगन्धदशमी (धूपदशमी) के १० उपवास व उद्यापन

३२–जिनगुणसम्पत्ति व्रतके उपवास व उद्यापन

३३–लब्धिविधान व्रतके ३–३ उपवास तीन वर्ष व उद्यापन

३४–गरुडपंचमी व्रत पांच वर्ष व उद्यापन

३५–अनन्तव्रत १४ वर्ष करके उद्यापन

३६–पंचकल्याणक व्रत (१२५ पांखड़ीपूर्वक) किया था

३७–बारह भेदकी पांखड़ीका व्रत आदि।

इस प्रकार आपके किये हुये व्रतोंकी सूची है। धन्य है आपकी व्रत करनेकी शक्तिको !

श्री नन्दकौरबाईने शिखरजीकी यात्रा चारबार, गोमट्टस्वामीकी यात्रा तीन वार व ऋषभदेव (केशरियाजी) की यात्रा पांच वार, शत्रुंजयकी चारबार व गिरनार यात्रा दोबार की थी, तथा दूसरी प्रायः सभी सिद्धक्षेत्र व अतिशयक्षेत्रोंकी यात्रायें की थीं व सब जगह दान धर्म भी बहुत किया था।

आपने अपने पति व सन्तानोंको साथ लेकर पावागढ़ सिद्धक्षेत्रमें छासियातालावके प्राचीन मंदिरका जीर्णोद्धार कराके वहां पंच-कल्याणक प्रतिष्ठा कराई थी जिसमें करीब १५०००) खर्च किये थे तथा मलारना (जयपुर) में २०००) लगाकर मंदिरका जीर्णोद्धार कराया तथा ब्रह्मचारी मूलचन्द्रजीने बम्बईमें १–१ माहके उपवास दो वार किये थे, तब आपने उनको मंदिर जीर्णोद्धारार्थ १,०००) प्रदान किये थे।

अनेक त्यागियोंको पीछी, कमंडल व वस्त्रकी आवश्यकता होनेपर आप उन्हें दान करती ही रहती थीं। तथा प्रत्येक व्रतके उद्यापन समय १००)–२००) दानमें निकालती ही थीं।

आपके गृहमें करीब ४० वर्षोंसे गृह चैत्यालय है जिसमें आप नित्य १–१॥ घण्टे नित्य पूजन करती ही थीं तथा आप नित्य दो वार बृहत् सामायिक प्रतिक्रमण करती व दो वार नियमसे शास्त्र स्वाध्याय करती थीं। आपका यह गृह चैत्यालय चौपाटी पर मणीभुवनमें है जिसकी प्रक्षाल पूजन नियमितरूपसे अव आपकी पुत्री नवलवहिन (वाल विधवा आयु ६५ वर्ष) करती ही रहती हैं।

श्री० नंदकोरवाईके पतिदेव सेठ चुन्नीलालजी सरल स्वभावी, व वड़े धर्मात्मा थे अत: आप भी महान् धर्मात्मा वन सकी थी व आपके व्रत तप व दानमें कोई वाधा नहीं आती थी।

— सन्तान–सुख —

धर्मात्माको धर्मके प्रभावसे धन और सन्तान सुख प्राप्त होता है उसी प्रकार सेठ चुन्नीलालने जरीके व्यापारमें वड़ी भारी उन्नति की थी और वम्वईमें अच्छी मान प्रतिष्ठा प्राप्त की थी व आप कुछ वर्ष भारत० दि० जैन क्षेत्र कमेटीके महामन्त्री (मृत्यु पर्यंत) रहे थे व आपको सन्तान सुख भी अच्छा प्राप्त हुआ जिसकी तालिका इस प्रकार है—

आपको कुल ९ सन्तान हुई थीं जिनमेंसे २ तुर्त मर गई थीं अत: ७ सन्तानोंका विवरण इस प्रकार है—

१–प्रथम पुत्री हरकोरवहिन—१६ वर्षकी आयुमें लीलावती नामक एक पुत्रीको छोड़कर स्वर्गवासिनी हुई थीं और लीलावती भी करीब १७ वर्षमें गर्भावस्थाके वाद चल वसी थी।

२–दूसरे अमरचन्दभाई—बहुत भाग्यशाली थे और आपके जन्मके बाद यह गृह बहुत सुखी हुआ है। आप चौपाटीपर चन्दन निवासमें रहते थे व तीन वर्ष हुए ६३ वर्षकी आयुमें स्वर्गवासी हो गये हैं लेकिन आपकी धर्मपत्नी श्रीमती चन्दनबाई जिनको तीन संतान हुए थे उनमेंसे एक पुत्री मंजुलाबहिन जीवित हैं और उनके भी २ संतान रुद्राबहिन और भाई श्रेणिक मौजूद हैं जो उच्च शिक्षा ले रहे हैं।

३–तीसरे नवलबहिन—बालविधवा हैं जो अपनी माता नन्दकोरबाईके साथ रहती थीं और आज भी ६५ वर्षकी आयुमें मणीभुवनमें रहती हैं व माता नंदकोरबाईका गृह चैत्यालय, नित्य पूजन पूर्वक सम्हाल रही हैं।

४–चौथा रतनचन्द चुन्नीलाल जौंहरी बी. ए. हैं—जो २० वर्षोंसे चन्दन निवासमें रहते हैं और भारत० दि० जैन क्षेत्रकमेटीके महामन्त्री (आपके पिताश्रीके बाद) हैं और अभी जवाहरातका व्यापार बड़ी कुशलतासे करते हैं तथा 'फोटो ग्रेवर्स इण्डिया' नामक कम्पनी चलाते हैं जिसमें कपड़ेपर छापनेके लिये वेल-बूटेके रोल तैयार होते हैं। आपको द्वि० पत्नी सौ० जयवंती द्वारा निम्न ७ सन्तान हैं–सरला, सौ० जिन्लू, मीनाक्षी, अतुलभाई, साधना, चेलना और चित्तरंजनभाई हैं। ये सब उच्च-शिक्षा प्राप्त हैं। कु० सरलाबहिन तो एम. ए. व बड़ी सादी निस्पृह व सेवा-भावी हैं।

५–पाँचवाँ भाई नवनीतलाल उर्फ एन. सी. जौंहरी जे. पी. हैं—जो मरीन ड्राइवपर शांतिकुटिरमें रहते हैं। आपने पिता व चारों भ्राताओंके साथ मिलकर प्रथम भडोंचमें इलेक्ट्रिक लि० कम्पनी निकाली थी फिर जलगांम, भींमडी, बलसाड़, दाहोद, अजमेर आदि १२ स्थानोंपर इलेक्ट्रिक लि० कम्पनियां निकाली हैं उनके मेनेजिंग

डिरेक्टर आप ही हैं। ये १२ कम्पनियां आज एमेलगमेटेड इलेक्ट्रिक कम्पनीके नामसे चलती हैं जो क्रोड़ रुपयेसे अधिककी हैं।

पिताजीके स्वर्गवास बाद चारों भ्राता अपना२ हिस्सा समजकर करीब ५-७ वर्षोंसे अलग हो जानेसे आज आप ही अकेले ये कम्पनियां बड़ी दिलचस्पीसे चलाते हैं व हरएक प्रकारसे सुखी हैं। आपके सौ० विमलाबाईसे १० सन्तान हुए थे उनमेंसे निम्न ६ मौजूद हैं—सौ० नयना (व एक बेबी) सौ० रंजन, पूर्णिमा, सुवर्णा, किरणभाई और दर्शना हैं ये सबने उच्च शिक्षा ली है या ले रहे हैं।

६-छठा भाई कांतीलाल चुनीलाल जरीवाला-चौपाटी पर विजय निवासमें रहते हैं और कालबादेवी रोड़ पर जरी कामकी दूकान चलाते थे। आपके सौ० गुणवन्तीसे निम्न ६ सन्तान हैं— प्रवीणभाई (जो ६ वर्षसे अमेरिका हैं), पुष्पु, नीलाबहिन, विपिन, अनिल और निमिर। ये सब उच्च शिक्षा प्राप्त हैं या ले रहे हैं।

७-सातवां भाई बाबूभाई उर्फ पुष्पसेन चुनीलाल हैं जो चौपाटी पर सुमन हाउसमें रहते हैं और जरीकामकी दूकान अपने भ्राता कान्तीलालके साथ चलाते व मोटर लेने बेचनेका भी व्यापार करते हैं।

आपको सौ० चम्पाबाईसे निम्न तीन सन्तान हैं—सौ० ज्योत्स्ना, कुमुद और कुलीनभाई, ये तीनों उच्चशिक्षा प्राप्त हैं।

इस प्रकार स्वर्गीय श्रीमती नन्दकोरबाईका कुटुम्ब परिवार करीब ४० की संख्यामें है जो हर प्रकारसे सुखी हैं और बम्बईमें अच्छीमान प्रतिष्ठा प्राप्त हैं।

श्री० नन्दकोरबाईके प्रति सेठ चुन्नीलाल जरीवाले करीब १९ वर्ष हुये स्वर्गवासी हुये तबसे श्री० नन्दकोरबाई वैधव्य अवस्था भोगकर पुत्री नवलबाईके साथ रहती थीं व अपना समय धर्मध्यान, सामायिक,

स्वाध्याय व व्रत उपवासमें ही विताती थी। अतीव वृद्ध होनेपर भी आप धर्मकार्यमें सावधान थे।

आप करीब १-१॥ वर्षसे अस्वस्थ रहती थीं तो भी धर्मध्यानमें कमी नहीं रखती थीं। और अभिषेक, पूजा करने या देखनेमें चूकती नहीं थीं। सिर्फ अन्तके दो माह अधिक अशक्त हो जानेसे धर्म-ध्यानमें विक्षेप हुआ था तो भी सोते २ अरहन्त स्मरण किया करती थी। आपको अशक्तिके सिवाय कोई रोग नहीं था और आप करीब ८७ वर्षकी वृद्ध आयुमें इस वर्ष अर्थात् सं० २०११ वैशाख वदी १ ता० १९ अप्रैल १९५४ सोमवारकी रात्रिको १० बजे अत्यन्त शांतिपूर्वक स्वर्गवासी हुई थीं जिस समय सभी कुटुम्ब व हम व मणी बहिन सूरतसे भी उपस्थित थे।

अन्त समय भी श्री० नंदकौरबाईके स्मरणार्थ ५०००) निकाले गये हैं तथा बड़े पुत्र अमरचन्दभाईके स्मरणार्थ भी २६०००) निकाले गये हैं उनमेंसे १०००) खर्च हो चुके है व शेषका स्मारक करना शेष है।

यह "अनन्तमती" धार्मिक ऐतिहासिक जैन नाटक ग्रन्थ स्वर्गीय नंदकौरबाईके स्मरणार्थ 'जैन महिलादर्श' (सूरत) के ३३ वें वर्षके ग्राहकोंको भेटमें देनेकी व्यवस्था हुई है जो दूसरी बहिनोंके लिए अनुकरणीय है।

अन्तमें हम धर्मात्मा, परोपकारी व दानी श्रीमती नन्दकौरबाईकी आत्माको शांति मिले यह श्री जिनेन्द्र भगवानसे प्रार्थना करते हैं।

सूरत।
वीर सं० २४८०
आश्विन सुदी ५
ता० २-१०-५४

आपके नम्र भ्राता—
मूलचन्द किसनदास कापड़िया
(आयु वर्ष ७२)

श्रीमती सौ० प्रेमलता कौमुदी विशारदा, दमोह।

[अनन्तमती नाटककी सुयोग्य लेखिका]

Jain Vijaya Press, Surat.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

[ऐतिहासिक नाटक]

प्रथम अंक—प्रथम दृश्य ।

सेठ प्रियदत्तका बगीचा । चारों ओर रंग बिरंगे पुष्प प्रफुदित होरहे हैं । बीचमें चौकोर सुन्दर सरोवर है । सरोवरके तीर अनन्तमती प्रकृतिकी छटा देख रही है ।

अनन्तमती—(स्वगत) "अहा, यह चांदनी कितनी सुधाभरी है । अतृप्त नयनोंमें यह पीयूषकी धार सरसा देती है । इसकी ओर एकटक निहारनेसे जान पड़ता है, स्वर्गीय मदिरा ढुलकाती अगणित रत्न-राशियोंको लुटाती सुरबाला खड़ी है। मलयानिलकी गोदमें थपकियां लेते हुए ये पापपुंज कैसा क्रीड़ा-कौतुक कर रहे हैं । नन्हे स्वच्छ सरोवरकी चंचल वीथियों पर बैठ चन्द्रिका नृत्य कर रही है, कैसी नयनाकर्षक मनमोहिनी मधुरिमा बिखरी है । क्या यह प्राकृतिक लावण्य भी संसारके असंतुष्ट मानवोंके दिलमें हर्षका निर्झर नहीं बहा देता ?"

(नैपथ्यमें)

"सब दुनिया तुम्हारे ही समान सौभाग्यशालिनी नहीं है सखी।"

अनन्तमती—"कौन सखी सरोजिनी, आओ देखो यह प्रकृतिकी अद्भुत नाट्यकला। क्या क्षुद्र मानव इसकी समता कर सकता है? कौन ऐसा हृदयहीन है, जो इस रमणीक दृश्यको देखकर सुधि बुधि न भूल जाता हो, उन्माद-विभोर न हो जाता हो।

सरोजिनी—तुम्हारा दिल भोला, मधुर और निष्कपट है। जिस अनिर्वचनीय आह्लादका अनुभव तुम सहज ही कर सकती हो उसकी धुंधली झांकी भी अन्य साधारण मानवोंको दुर्लभ है।

अनन्तमतीः—"ऐसा क्यों है सखी?"

सरोजिनीः—"विश्वके मानवोंका दिल माया मरीचिकामें उलझा है। उनकी स्वप्नोंकी दुनिया कल्पना तथा आशाप्रत्याशाके सुनहरे पंखोंवाली है। अपने गोरखधन्धेके बीच उन्हें कब ऐसा अवकाश है कि नियतिकी ओर आंख उघाड़ कर देख भी सकें?"

अनन्तमतीः—"सच कहती हो। यदि ये व्याकुल मनुष्य प्रकृतिकी रूपमाधुरी निरख अपने कष्टोंको निमिशभर भी भूल पाते तो जानते कि दुनियामें कितना सुख है। किन्तु न जाने इनका कैसा स्वभाव है कि सुखकी स्मृति तो इन्हें क्षणभर हँसाकर विश्राम लेलेती है, पर दुःखकी सघन घटाएँ इनके जीवनाकाश पर घिर घिर कर सदा रुलाती रहती हैं। है न यही बात?"

सरोजिनीः—सखी, सुख दुख तो इस गतिशील मनकी भावनाओंका ही रूपान्तर है। वास्तवमें यह कोई भिन्न और अमर पदार्थ

नहीं है। यह हमारी भीषण मानसिक दुर्बलता है कि हम क्षणिक सुखावेशमें विभोर हो जाते हैं और दुखमें अधीर हो सिसकने लगते हैं। यदि इनके पहलुओंमें पैठा जाय तो मालूम हो कि सुख दुख हमारे जीवन विद्यालयकी जटिल और गहन परीक्षाएँ हैं जो परिस्थि-तियोंकी स्याहीसे समयके कागज पर छपकर हमारे सामने आती

अनन्तमतीः—(बात बदलकर) देखो देखो, इन हरे हरे पत्तोंके बीचमें छिप छिपकर झांकते हुए चटकीले फूल कैसे भले जान पड़ते हैं ओहो! शुभ्र चांदनीमें इनका सौन्दर्य कैसा निखर गया है?

सरोजिनीः—इधर देखो, फूलोंकी सभा जुड़ी है। अर्द्ध विकसित पंखुड़िएँ हरित पल्लवोंके सिंहासन पर बैठी मुस्कुरा रही हैं। हवा मन्द स्वरमें गीत गाती हुई नाच रही है। नील गगन पर सोलह कलाओंके रथ पर बैठे चन्द्रदेव सभापतित्व कर रहे हैं। प्रकृति अपने घर पर बैठी चुपचाप हँस रही है।

(नैपथ्यमें गान)

॥ मैं हँसती सी फुलवारी हूं ॥

मुझसे समीर हँसता चंचल,
फिर बन जाता वह मलयानिल;
मेरी मधुमय छवि चुरा चुरा,
खिलता मयंक ले नभ अँचल.

॥ मैं सुन्दर हूं सुकुमारी हूं ॥

मेरा प्रिय हास विलास छीन,
हँसती कलियां यौवन मलीन;

अनन्तमती।

सुरभित विकसित मृदु मंजु-
पुष्पसे खिल उठती बगिया हर्षान।

मधुभरे फूलकी क्यारी हूं।
मैं हँसतीसी फुलवारी हूं॥

(गाते हुए माधुरीका प्रवेश।)

" इस मधुरवेलामें काव्यकी माधुरीका सहर्ष स्वागत है। आओ बहन, आजतक आप हमसे रूठी क्यों रहती हैं ? महीनों बाद कहीं दर्शन दिखलाती है। ऐसा क्या अपराध हुआ ? " अनन्तमती बोली॥

माधुरी—"नहीं सखी, ऐसा कहकर मुझे लज्जित न करो। मैं अपने-मामाके घर गई थी। आज ही वहांसे आई हूं। आते ही तुम्हारी स्नेहस्मृति मुझे बरबस यहां खींच लाई।

सरोजिनी—जूही और मालतीको देख आंखें नहीं थकतीं। जी चाहता है इनकी माला गूंथकर प्रिय सखीको उपहार दूं।

अनन्तमती—नहीं सखी, फूल तो डालीकी शोभा है, गलेकी नहीं। हाय निष्ठुर दिल अपने लिए इनपर अत्याचार करते हैं। फूल, क्या तुम इन्हीं स्वार्थी मनुष्योंके लिए इतनी आतुरतासे अपनेको विकसित करते हो ? भला ये तुम्हारी कद्र क्या जानें।

माधुरी—फूलका तो जन्म ही दूसरोंके सुखके लिए हुआ है। वे खिलते हैं दूसरोंके लिए और मरते दम तक हमें सिखाते हैं—"परोपकारार्थमिदं शरीरम्।"

अनन्तमती—"ठीक कहती हो सखी, इस श्रेणीमें मनुष्य इन फूलोंसे भी तुच्छ हैं। हाय! जब ये अपना मधुकोष लुटाकर निर्धन होजाते हैं तब यही निष्ठुर मनुष्य किस निर्ममतासे इन्हें मसल डालते हैं—ओफ कितना कृतघ्न है यह मानव-हृदय।"

सरोजिनी—तुम्हारा दिल बहुत नाजुक है तभी ऐसी बातें कहती हो! नहीं तो कौन इन अदनी सी बातों पर ध्यान देता है। यह तो भावुक कवियोंकी कल्पनाएँ हैं। यदि दुनिया तुम्हारी तरह भावुकताको अपनाले तो उसका अन्त हो जाय।

अनन्तमती—लो गुस्सा हो गई जरासी बात पर। अरे! जैसा हमें तनिकसा भी दुख असह्य हो जाता है वैसे ही इन सुकुमार फूलोंको सुईसे विंधते समय मूकवेदना नहीं होती होगी? कल्पना करो उनकी इस मर्मस्पर्शिनी मूकवेदनाके आगे हमारे क्षणिक उल्लासका क्या मूल्य है? ये दूसरोंके सुखके लिए जान दें और हम अपने सुखके लिए इनकी जान लें कैसे नीच हैं हम?"

सरोजिनी—तब दुनियाके सभी आदमी तुम्हारी दृष्टिमें स्वार्थी हैं। यदि जीवनके कदम कदम पर दयाको साथ रखा जाय तो जीवनसंग्राम ही निष्फल होजाय।

मालती—सच तो यह है कि जो सुन्दर है, कोमल है और निर्बल है उसपर जन्मगत सबलोंका अधिकार है। क्या इसी न्याय-तुलापर करुणामयी नारी पुरुषोंकी पदताड़िता, तिरस्कृता नहीं बनी है?

अनन्तमती—खैर, छोड़ो भी इस मनहूस बातको। हास्यका सुरम्य वातावरण इन मनोवैज्ञानिक रहस्योंको सुलझानेके लिए नहीं

है । देखो हरित् तृणोंपर चांदनीने रजतकी कैसी धुंधली चादर बिछाई है । हिलते हुए वृक्षोंकी प्रतिच्छाया मानो चांदनीके सरित नृत्यसे तैरना सीख रही है ।

माधुरी—सखी, अब तो बहुत रात गुजर गई है, घर नहीं चलोगी ?

अनंतमती व सरोजनी—एक वादा करो तो तुम्हारी बात मान लें।

माधुरी—वह क्या ?

अनंतमती—पहले अपने कोकिल कण्ठसे एक सुमधुर गीत सुना दो जिसमें रोम रोमके तार झंकृत हो उठें । ठीक है न ?

माधुरी—आओ हम तुम गाएं ।

रोते रोते ऊबे मनको लोरी जरा सुनाएं ॥
तुम भी हंस लो हम भी हंस लें,
जल थल नभ सब मिलकर हंस लें ।
एक दूसरेसे हिल मिल लें सबको सब अपनाएं ॥
मानस-प्रेम कोष बिखराकर,
करुणा क्षमा सनेह लुटाकर ।
सूने व्यथित विश्व पटपर नर जीवन ज्योति जलाएं ॥
सखि आओ हम तुम गाएं ।

(सब सहेलियां अन्तिम कड़ी दुहराती हुई जाती हैं ।)

[अनन्तमती नाटकसे ।]

द्वितीय दृश्य।

सेठ कचौड़ीमलकी बैठक, दोस्तोंकी जमघट,
हास्य परिहासका बाजार गर्म है।

भरोसेलाल—क्या कहूं दोस्त अपनी व्यथाकी कहानी किसे सुनाऊँ? जबसे लल्लूकी मां मरी है मेरा तो घर उजड़ गया। घर मरघट होगया। बच्चे दुस्मन बन गए। तुम्हीं बताओ मैं क्या करूँ?

राजनाथ—वाह क्या विधवाओंकी तरह लगे रोने? अजी तुम आखिर तो पुरुष हो न। स्त्री तो तुम्हारी जूती है, जूती। एक टूट गई, नई दूसरी आगई। रोना किस बातका?

भरोसेलाल—तो क्या एक नवयौवना षोड़षीसे मैं विवाह कर सकता हूं?

बनवारीलाल—यह भी कोई पूछनेकी बात है? किसीने क्या कहा है सुनो—

"सिद्धमन्नं फलं पक्वं, नारी प्रथम यौवनम्।
सुभाषितं च ताम्बूलं, सद्यो गृह्णाति बुद्धिमान्॥"

और सुनो, भावप्रकाशमें कहा है—

"वृद्धोपि तरुणीं गत्वा तरुणत्वमवाप्नुयात।"

तरुणीसे विवाह करनेपर तुम्हें "एक पन्थ दो काज" सिद्ध होंगे। जवानी भी मिलेगी और सुख भी।

भरोसेलाल—क्या कहना भाई, तुम अगले जन्मके बृहस्पतिजी ठहरे। अच्छा यह और बतादो कि समाज तो कुछ न कहेगी?

राजनाथ—(हंसकर) उस निगोड़ीकी क्या ताकत जो तुम्हारे सामने आए। देखो वह तो (रुपयेका इशारा कर) इसकी गुलाम है। तुमने रुपये बढ़ाए और वह तुम्हारे चरणों पर लोटी।

भरोसेलाल—आहा मेरे दोस्त, तुम सब मुझे स्वप्नोंकी दुनियांमें घसीटे ले जा रहे हो। क्या कभी यह स्वप्न सत्य भी होगा?

राजनाथ—अवश्य, आपके इशारेकी देर है।

नेकीमल—जरा ठहरो सुनो, एक नवयुवतीको लाकर विधवाओंकी ही तो संख्या बढ़ाने जाते हो तुम.........।

राजनाथ—चुप चुप, क्यों सेठजीकी अमंगल कामना करते हो? सेठजीकी उम्र सहस्रों वर्षकी हो। क्या तुम नहीं जानते "बिन घरनी घर भूतका डेरा।"

नेकीमल—क्यों? उनकी पुत्रवधु हैं। एक विधवा लड़की है। जवांन लड़के हैं। सेवा तथा प्रबंधके लिए स्त्रीकी जरूरत होती है पर उनके घर तो किसी बातकी कमी नहीं है।

राजनाथ—तुम कुछ नहीं जानते, बहुओं लड़कियोंको अपने कामसे मतलब। अब इस जमानेमें तो बहू बुड्ढे सास ससुरको दुश्मनसे कहीं अधिक समझती है। मानलो आज सेठजीको बुखार आ गया, सिरमें दर्द हो गया, कौन अपना समझकर दिनरात भूखी-प्यासी रहकर सिरहाने बैठकर सिर दबाएगी, पैर सहलाएगी, आँसुओंसे अंचल भिगोकर ईश्वरसे शुभ कामना करेगी? एक स्त्रीके बिना सब रूखेसूखे हैं, जैसे नमक बिना भोजन। सेठजी, आप किसीकी न सुनें, आप सुनिए सबकी करिए मनकी। अच्छा हम जाते हैं, आप और किसीसे सलाह ले देखिए। (मित्रगण जाते हैं)।

सेठ—चपला ओ चपला.........

चपला—कहिए, सेठजी क्या काम है ?

भरोसेलाल—देख तू हमारी विश्वस्त और पुरानी दासी है। मैं तुझसे कभी कोई बात नहीं छिपाता। अगर तू मेरा यह काम कर देगी तो तुझे मुंह मांगा इनाम दूंगा।

चपला—कहिए आपकी आज्ञा होते ही मैं तन मनसे आपके काममें जुट जाऊंगी। ऐसा कौनसा काम है भला जो मुझ जैसी नीति-निपुण चालाक स्त्री न कर सके ?

भरोसेलाल—लेकिन देख जरा यह मुश्किल है। तूने कमला-वतीकी लड़की देखी है न, उसके साथ शादी करनेका मेरा इरादा है।

चपला—हां क्यों नहीं, लड़की भी क्या परी है ? जिधर छम छम करती हुई निकल जाती है गजब ढाती है। आंखें क्या हैं नरगिस भी शर्मा जायगी। मुखपर दिन रात चांदनी छिटकती है तो प्रकाशके लिए उसकी खोज की है आपने। ऐसी सुन्दरीसे तो घर नन्दन हो जायगा।

भरोसेलाल—नहीं प्रकाशके लिये नहीं स्वयं अपने लिए।

वृद्धा—क्या कहा अपने लिए ?

भरोसेलाल—अभी तक नहीं समझी ? किसी तरहसे लड़कीकी विधवा मांको समझाओ। हजारों उपायोंसे भला बुरा दिखाओ। मैं दिल खोल खर्च करूंगा। तू सोच ले, पुत्र बड़े हो जाएँगे अपने आप कमाएँगे खाएँगे। बहुएँ ये चाहेंगी कब बूढ़ा मरे और बला टले ? कौन समयपर काम आता है, जरासा कुछ झगड़ा हुआ और सब अलग। जबतक हाथपैर चलते हैं तबतक तो रो झींककर गुजर हो ही जायगी आगे मैं अशक्त हो जाऊंगा तब कौन पूछेगा मुझे ? अगर कोई अपना समझनेवाली है तो स्त्री ही है न ? लोग कहते हैं मैं वृद्ध हो गया।

भला उनकी बेवकूफीको मैं क्या करूँ ? दांत टूट गए अलगसे लगवा लूंगा। आँखसे कम दिखता है चश्मा ले लूंगा। मुखकी झुर्रियोंके लिए एकसे एक अमोघ अस्त्र हैं। जहांतक हो जल्दी ही उसे राह पर लाना। (१०) रु. के २ नोट देकर) देख यह इनामकी शुरूआत है। अगर तू मेरा काम कर देगी तो तुझे मालामाल कर दूंगा। समझी! अच्छा अब मैं जाता हूं। (सेठजीका प्रस्थान)

वृद्धा—(स्वगत) मौतके दरवाजे पर पहुँच कर अब इन्हें शादीकी धुन सवार हुई है! साठा-पाठा। बुढ़ापेमें जवानी छारही है। कहां यह बूढ़ा खूसट? पिचके गाल वदनमें झुर्रियां मुखमें दांतका नाम निशान नहीं—कमर टेढ़ी हुई जा रही है। कहां वह नवयौवना सुन्दरी जिसने अभी शैशवके द्वारमें यौवन वाटिकामें प्रवेश किया है। इसको देखकर विचारी भाग्य पर आँसू बहायगी। रुपयोंका वह क्या करेगी? हे ईश्वर "इन आंखके अन्धे गांठके पूरे" को कब अक्ल-दान दोगे? बाबासे पतिके पास पोतीसी बहू। ऊँटके गलेमें बिल्ली! कैसा भयानक उपहास है यह मनुष्यताका!

लेकिन मैं क्या पगली हुई हूं? मुझे इन बातोंसे क्या मतलब? मुझे तो है कि किसी तरहसे कमलावतीको बहकाकर शीलाका व्याह इससे करवा दूं। फिर तो मेरी पांचों उँगलियां घीमें हैं। मेरी बलासे। फिर चाहे जो हो। पुण्य-पाप, हूं यह सब तो मनकी भ्रांतियां हैं। मैं तो इन सब बंधनसे दूर हूं।

मायाका प्रवेश।

मां तुम किस उधेड़ बुनमें लगी हो, अभी तुम धीरे धीरे क्या कह रही थी—मायाने पूछा—

वृद्धा—बेटी, तुझे मालूम नहीं सेठजी इस बुढ़ापेमें किसी सुन्दरीसे शादी किया चाहते हैं। उनके कामसे तो मैं जा रही हूं।

माया—मां, उनका तो दिमाग फेल हो गया है तभी तो शादीकी सनक चढ़ी। कहीं इस उमरमें भी शादियां होते सुना है?

वृद्धा—चुप, चुप, कोई सुन लेगा तो हमारी खैर न होगी। बड़े आदमियोंकी बड़ी बातें। उनके जो जीमें आवे वे कर सकते हैं। उनको रोकनेवाला कौन है? उनके पास "वैभव" ऐसा अमोघ अस्त्र है जो बड़े बड़े दिलेरों, धर्मात्माओं और नाकवालोंको चुप कर देता है।

माया—लेकिन मां उस लड़कीका भी तो सर्वनाश होजावेगा। समाज कुछ न कहेगी? यह तो घोर अन्याय है। क्या समाज इस महान् पापकी उत्तरदायी न होगी?

वृद्धा—समाज तो इन लक्ष्मीवालोंके हाथों बिक गई है। बड़ेसे बड़ा पाप भी इनकी प्रसन्नताकी तुलनामें छोटा है। तू अभी यह बात नहीं समझती। समाज गरीबोंके लिए साक्षात् काल है—लेकिन रईसोंके लिए मिश्रीकी डली है। हमारा काम तो उनकी प्रसन्नताका सामान जुटाना है। अगर हम भी ये बातें सोचते रहेंगे तो जीना भी दुस्वार हो जायगा। इनके बलपर तो हम चैनकी बंशी बजाते हैं॥ चलो घर चलें। देर हो गई।

तृतीय दृश्य।

(सेठ प्रियदत्तका शयनागार। प्रियदत्त बैठे हुए हैं।)

(अंगवतीका प्रवेश)

अंगवती—आप तो दिनरात न जाने किन विकट समस्याओंमें उलझे रहते हैं कि घरकी खबर भी नहीं रखते।

प्रियदत्त—तो फिर तुम किस लिए हो। तुमसी गृहलक्ष्मीको पाकर भी मुझे घरकी चिन्ता करनी पड़ेगी? मैं तो तुम्हारे भरोसे गृहकार्य छोड़ स्वतंत्रतासे धर्मसेवन करता हूं।

अंगवती—ये मजाककी बातें छोड़िए। मालूम नहीं घरमें क्या किस बानकी जरूरत है, इतनी लापरवाही भी किस कामकी?

प्रियदत्त—आखिर कुछ कहोगी भी या तर्क ही करोगी? ऐसा क्या काम आ पड़ा जिसमें मेरी पुकार हुई? और पुकार ही न हुई, खरी-खोटी भी सुननी पड़ी।

अंगवती—अच्छा सुनो—अनन्तमती अब १६ वर्षमें पैर रख चुकी है। जवानी अंग-प्रत्यंग पर अपना प्रभाव जमा रही है। यह विवाहका उपयुक्त अवसर है। उसके लिए वर तलाश करना आपका प्रमुख कार्य नहीं है?

प्रियदत्त—किन्तु मैंने तो यह सुना है कि वह विवाह करना पसंद नहीं करती, वह तो इसका नाम सुनते ही क्रोधित हो उठती है। किसी भी तरह वह विवाह करने पर राजी नहीं होती।

अंगवती—हूं, यह सब तो तुम्हारा बहाना है। अभी वह भोली है, दुनियाके इन प्रेम रहस्योंसे अत्यन्त अनभिज्ञ है। लड़कियोंका

सर्वश्रेष्ठ गुण लज्जा है। लज्जाशीला कन्या किस मुंहसे अपने सम्बन्धके विषयमें कह सकती है? क्या आप नहीं सोच सकते?

प्रियदत्त—हां, इसमें सन्देह नहीं कि वह ऊपरसे चाहे जो कहती रहे, दिलमें वह विवाह करना नापसन्द न करती होगी। इस बातको पिताकी अपेक्षा माँ अच्छी तरहसे समझ सकती है। तो फिर मेरा काम क्या है?

अंगवती—रहस्यकी दीवार फोड़ उसके अंगउपांगोंको झकझोरके भी पूछते हो मेरा कर्त्तव्य क्या है? युवती लड़कीके पिताका कर्त्तव्य क्या होता है? क्या यह भी बतानेकी चीज है?

प्रियदत्त—समझ गया किसी योग्य वरकी तलाश। मेरे मस्तिष्कमें तो कई लड़के घूम रहे हैं। धनसम्पन्न सुशील शिक्षित; लेकिन जब तुम्हारी पसन्दगीकी छाप लगे तभी तो उनमेंसे किसीको रिजर्व करूँ? हाँ, एक बात है—कन्याको समझाना माँका काम है वह उसकी दिलकी मूक-भाषाको पढ़ सकती है। तुम जानती हो। उसकी प्रकृतिसे नावाकिफ नहीं हो। तुम स्वयं उसके स्वभावके अनुकूल युवकको खोज सकती हो।

अंगवती—यह सत्य है कि बेटीका कोई भी गूढ़ातिगूढ़ रहस्य माँसे छिपा नहीं रह सकता। मेरी दृष्टिमें वह धर्मभीरु सदाचारिणी बालिका है। अच्छा, तो फिर विवाहका आयोजन करना चाहिए न?

प्रियदत्त—हाँ हाँ इसमें देर क्यों? पुरोहितजीको नारियल वगैरह देकर सगाई पक्की की जावे, इसी वसन्तमें उसका विवाह अवश्य हो जाना चाहिए। क्योंकि कन्या अधिक दिनों तक माँबापके घर नहीं रह सकती।

अनन्तमती।

सरोजिनीका प्रवेश।

अंगवती—सरोज, तुम अपनी सखीके इस शुभ संवादसे अवश्य ही प्रसन्न होगी, इसी वर्ष उसका पाणिग्रहण संस्कार संपन्न होगा।

सरोजिनी—(अस्थिरतासे) माँजी क्या आपको इस विषयमें अनन्तमतीकी सहर्ष स्वीकृति मिल गई है ?

अंगवती—तुम अभी इस बातको नहीं समझती। विवाहके विषयमें कन्याकी स्वीकृति अस्वीकृतिका क्या प्रयोजन ? लज्जाशीला आर्य ललनाएं कभी इस विषयमें हस्तक्षेप नहीं करती। माँ-बाप स्वयं ही उनके लिए सुयोग्य वरका अन्वेषण करते हैं।

सरोजिनी—माताजी क्षमा कीजिए। अनन्तमती किसी भी तरह विवाह-बन्धनमें जकड़ना पसन्द न करेगी।

अंगवती—तो क्या तुम लोग विवाहको बन्धन कहती हो ? यह बन्धन नहीं है। युवक-युवतीकी आत्माओंका मधुर सम्मिलन है। समाजके नियंत्रणमें प्रेमका उत्कृष्ट सार्वभौमिक रूप है। हाँ, तो उसका कहना क्या है ? तुम उसकी सखी हो, तुमसे उसके दिलकी कोई भी बात अप्रकट न होगी।

सरोजिनी—माताजी, न मालूम क्यों अनन्तमती इन सांसारिक रहस्योंसे सर्वथा उन्मुक्त हैं। इस वैषयिक संसारसे कहीं दूर नितान्त पवित्रताका आह्वान कर रही हैं। यौवनारम्भमें बालिकाएँ जिस नारी सुलभ-मादकतासे उन्मादिनी हो उठती हैं—चपल कामनाएँ मस्त उमंगें प्रणयकी कल्लोलें सहज ही उन्हें विभोर कर देती हैं। वहां उनके दिलमें भोलेपनका स्वच्छ निर्झर बह रहा है। उमरका **सार्टिफिकेट** उन्हें गृहस्थाश्रममें प्रवेश करनेका **वॉइस** नहीं हो सकता। उनकी

इस सरल भावनाओंको यौवनकी उत्ताल तरंगोंके बहाने मसल देना उपयुक्त नहीं कहा जा सकता।

अंगवती—मैंने तुम्हारी बातें सुनकर भी यही निष्कर्ष निकाला है जोकि भारतीय महिलाओंका उच्च आदर्श है। वासना-विलासिताकी उच्छृंखल धारामें अपनेको बहा देना नारीत्वमें शामिल नहीं। नारीत्व गम्भीर स्नेहमें ही जीवनको अर्पित कर देता है। यह उसकी शिष्टता है। फिर भी यह कहना कि अनन्तमती विवाहसे बिल्कुल उन्मुख है असंगत तथा भ्रमपूर्ण है।

× × ×

प्रियदत्त सरोजनी—तुम लोग अनन्तमतीके इस विचार प्रवाहकी परख करो। क्या वास्तवमें ही वह अपनेको किसी निष्पक्ष साधनामें ही विसर्जन करना चाहती है? शीघ्रसे शीघ्र उसके हृदयोद्गारोंको पढ़ो। जिसमें कहीं हमारी अविचारितासे उसके आदर्श अरमानोंका खून न हो जाए। मैं समझता हूँ सहेलियां परस्परमें अभिन्नतासे अपना हृदय खोल देती हैं। तुम अपने काममें सफल बनोगी।

अंगवती—यह प्रस्ताव समयोचित है। वह अब नाबालिग नहीं। अपना भला-बुरा स्वयं सोच सकती है। कन्या स्वयं अपने जीवन-संग्रामकी निर्माता है। हम उसके संरक्षक हैं सही, किंतु उसकी भावनाओंकी कद्र करना हमारा कर्त्तव्य है। शादीका उत्तरदायित्व बहुत दुर्गम है। चूँकि कन्या ही उसकी संचालिका है, इसलिए उसके विचारोंका अध्ययन आवश्यकीय है। सरोज़िनी, तुम दोनों अनंतमतीकी विभिन्न-मनोवृत्तियोंका अध्ययन कर हमें समाचार दो।

[सरोजनीका जाना]

प्रियदत्त—यह कन्यारत्न हमें बड़े सौभाग्यसे मिला है। सृष्टिमें ऐसे रत्नोंकी अनमोल कीमत है। अवश्य किसी दिन ये हमारे कुलको उज्वल करेगी। तुम क्या सोच रही हो प्रिये ?

अंगवती—मैं अपने सुकुमार-आशाओंके उपवनमें सहज ही पतझरकी कल्पना कर सकती हूँ ? अनंतमतीके विचारोंका क्षुद्र आभास भी एक गहरी-वेदनासे मानसको आकुल कर देता है। तो क्या सचमुच ही वह विवाह करना नापसन्द करेगी ?

प्रियदत्त—तो यह सोच कर तो तुम्हें हर्षित होना चाहिए। तुम नहीं जानती ब्रह्मचर्य व्रत तलवारकी नुकीली धार है। कितनी लड़कियां हैं जो विजयी मदनकी ओरसे दिल तोड़कर इस पथकी ओर प्रगतिशील होती हैं ? अनन्तमतीकी इस विचार-धारामें मेरा दिल आनंदातिरेकमें बेरोक बहा जा रहा है। वह शुद्ध-हृदया बालिका अपने जीवनको सीमित-परिधिसे विश्व-प्रेमके विस्तृत रंगमंच पर न्योछावर करनेकी हिम्मत रखती है। वह मानवी रूपमें देवी है। उसके इस कर्त्तव्य-प्रेमपर हमें गर्व करना चाहिए।

अंगवती—तुम पुरुष हो। तुम ममताके झीने-बन्धनोंसे उदासीन हो। नारी हृदयकी स्वाभाविकताको तुम क्या जानोगे ? हमारी अनन्तमती बचपनसे सद्गुणवती थी। उसकी भोली चतुर बातोंको सुनकर मेरा दिल बांसों उछलने लगता था। मैं सोचती थी कि किसी सुन्दर वैभव-सम्पन्न सुशिक्षित वरके हाथों इसे सोंप मैं अपने मनकी साध पूरी करूँगी लेकिन मुझे जान पड़ता है कि मेरी यह अभिलाषा मन-ही-मनमें घुट घुटकर सड़ जायेगी। मैं उसे गृहस्थाश्रममें देखना चाहती थी।

प्रियदत्त—गृहस्थाश्रमका संचालन करना कोई अलौकिक कार्य नहीं है। यह तो साधारण है। हां इससे विमुख हो संसारकी निष्पृह सेवामें पवित्र जीवन बिताना अवश्य असाधारण है, आदर्श है, अनुकरणीय है। कहीं तुम उसकी उच्च-भावनाओंको बदलनेकी भूल न करना। [एक नौकरका प्रवेश]

सेठजी चलिए पूजाका समय हो गया है। सब व्यवस्था ठीक कर दी गई है।

प्रियदत्त—प्रिये, अब मैं मन्दिरजीमें जाता हूं। तुम जाओ, किसी भी तरहका रंज अपने दिलमें न लाना। हमारा परम सौभाग्य है जो हमरे घरमें ऐसी पवित्रात्माका जन्म हुआ है, जाओ।

चतुर्थ दृश्य।

(कमलावतीका छोटासा साधारण मकान, कमला चटाईपर बैठी है। वहीं पासमें वृद्धा भी है।)

वे दोनों किसी गंभीर मंत्रणामें व्यस्त हैं।

कमला—"हां, क्या कहती हो, यदि मैं सेठ कचौड़ीमलके साथ अपनी शीलाका सम्बन्ध करदूँ तो हमारी हालत सुधर जायगी?"

वृद्धा—"हां अब तुम्हारी समझमें आया। वैसे उम्र ४०-५० से अधिक नहीं है। और देखनेमें तो पूरे २५-३० वर्षके नौजवान लगते हैं। मुखपर जवानीकी झलक है। और वह, बदनपर भले ही बुढ़ापा है दिलमें तो यौवनकी उमंग छलक रही है।

शरीरपर बुढ़ापा और दिलमें जवानीकी हसरत, मादकता। इन दोनोंके मध्यमें ऐश्वर्यका बहता परनाला क्या तुम यह सब पसन्द न करोगी?"

कमला—"तो उसकी वार्षिक आय क्या होगी? वे हमें कितने रुपये दे सकते हैं?"

वृद्धा—ओह यह बात क्यों पूछती हो तुम, उनकी आमदनीकी गिनती क्या? हजार पांचसौ उनके हाथखर्चको भी थोड़े हैं, अशर्फियोंसे उनकी तिजोरियां लबालब भरी पड़ी हैं। उनका आलीशान मकान ही देखो क्या कोई साधारण व्यक्ति इतना साहस कर सकता है? नौकरोंकी भीड़ उनके इर्द गिर्द ऐसी घूमती है जैसे नीलगगनमें सुधाकरके चारों ओर बिखरी नक्षत्र मणियां। मैं कहती हूं तुम मालामाल हो जाओगी, निहाल हो जाओगी।

कमला—मेरी लड़की भी क्या कम है? हजारोंमें एक है। ऐसी लड़कीपर तो हजारों युवक-शलभ जान देनेको तरस रहे हैं।

वृद्धा—जाना वह खूबसूरत है। लेकिन अभी क्या: अभी तो नवयौवनका उभार भी स्पष्ट नहीं है। अभी तो शैशवका भोलापन भी निखरा है। जवानीकी रस-भरी मादकतासे ओत-प्रोत उसका लावण्य देखना जबकि उसके बदनपर बहुमूल्य रेशमी साड़ियां हों। सुन्दर अलंकार हों।

मुखमेंसे सुगन्धि निकल रही हो। उस वैभवकी अट्टालिका पर बैठी रानीकी तरह दासियोंपर हुक्म चलाती शीलाका रूप देख, देखनेवालोंकी आंखे चौंधियां जांयगी। तब देखना उसके रूप सौन्दर्यकी समतामें स्वर्गकी अप्सराएँ भी पैरकी धूल हैं।

(नेपथ्यमें किसीका आगमन।)

"और उस वस्त्रालंकारके अन्दर सिमटा हुआ दिल किन किन आशाभंगके स्वप्नोंमें बहता हुआ निश्वासें लेरहा होगा? आगत भविष्यके भयानक-चित्रोंके स्मरण-मात्रसे उसका हृदय भर भर आता होगा। व्यथा-भरे आंसू उसके मुखको अनुरंजित करते होंगे। और वे उसके दिलसे निकली हुई उच्छ्वासें कितनी दुख-भरी होंगी, इसकी भी कल्पना की है तुमने?

कमला—कौन; इस मंगलवार्तामें अपशकुन करनेवाली तुम कौन हो? अच्छा—शारदा तुझे राय देनेको किसने बुलाया था? कमबख्त कहींकी, जा यहांसे।

शारदा—माताजी, मुझपर अकारण क्रोध न कीजिए। मैं आपकी हितैषिणी हूं। आपके परिवारकी आपदाओंकी दुखद झांकी देखते ही मैं काँप जाती हूं। जवानी रूप-सौन्दर्य अवश्य चाहती है, लेकिन दूसरोंके लिए, अपने लिए नहीं। वह वैभवकी पूजा करती है; परन्तु अपनत्वको खोकर नहीं। वैभवकी परिधिमें नारीत्वको बन्दी बनाकर नहीं रखा जा सकता। रूप-सौन्दर्य और वैभवके अतिरिक्त भी वह कुछ और चाहती है।

कमलावती—मैं समझती हूं, तू मेरी शीलाके इस सौभाग्य पर ईर्षा करती है। उसको सुखी देखना नहीं चाहती है। लेकिन मैं भी तुझे विघ्न न बनने दूंगी। तेरी एक चाल भी न चल सकेगी समझी!

शारदा—माताजी, यह उसका सौभाग्य नहीं महान दुर्भाग्य है। आप नहीं जानती उसने अपने इस नारी दिलमें कितने आशाके

मनोहर स्वप्न संजो रक्खे हैं। हा, उसे क्या मालूम है कि उसकी सारी आश-वाटिका उजड़ जायगी। स्वयं उसकी माँ ही उसके जीवन पथको कंटकाकीर्ण बनानेका प्रयत्न करेगी? माँ मेरी बातोंको यूँ ही समझ कर न ठुकराओ।

शारदा, मुझसे व्यर्थकी बहस मत कर। तू कलकी लड़की मुझे क्या समझायेगी? मैं तुझसे अधिक जानती हूं। तू अभी इन बातोंको नहीं समझती, जा अपना काम कर। क्रोधित हो कमला बोली।

शारदा—(विनम्रतासे) माँ तुम्हारी अक्ल पर परदा पड़ा है। असीमित धनके कल्पना कारागारमें आपकी बुद्धि परतंत्र हो गई है। मैं आपको इसलिए बुरी लग रही हूं कि आपकी इस दुष्मंत्रणामें किसी भी तरहका हाथ नहीं बंटा सकती। लेकिन याद रखिए बुराईका फल कभी भला नहीं होता। तृष्णाकी लिप्सामें कर्त्तव्यको विस्मरण न करना ही बुद्धिमानी है।

कमलावती—चल यहांसे, तेरी रजामन्दीकी मुझे कुछ जरूरत नहीं। (शारदाका जाना)

वृद्धा—यह कौन लड़की है जो इस तरह तुम्हारी बातोंमें दखल लेती है?

कमलावती—यह मेरी बड़ी लड़की शारदा है। शीलासे उम्रमें ५ साल बड़ी है। इसकी शादी एक साधारण गृहमें हुई है। इसका पति बजाज है। गृहस्थीके खर्चके अतिरिक्त व[illegible]त तो नाममात्रकी ही है।

वृद्धा—मुझे जान पड़ता है यह शोख लड़की कुछ न होने देगी। मेरा सारा प्रयत्न धूलमें मिल जायगा।

कमलावती—नहीं नहीं, तुम इस ओरसे निश्चिन्त रहो। यह नादान लड़की हमारा कुछ न कर सकेगी। यह तो और ४ दिनकी मेहमान है फिर अपनी ससुराल चली जायगी।

वृद्धा—तो फिर क्या निश्चय किया तुमने ?

कमला—बस, "शुभस्य शीघ्रम्।" मेरी बेटी राजरानी बनेगी। नौकरों पर हुकूमत करेगी। वस्त्रालंकारोंसे सजधज कर आराम करेगी। इससे अधिक एक माता और क्या चाहेगी ? तुम सेठजीसे कह देना उन्हें यह बात सहर्ष स्वीकार है। जितनी जल्दी यह कार्य हो जावे उतना ही उत्तम है।

× × ×

(वृद्धा जानेको उद्यत होती है सहसा "ठहरो" की गंभीर आवाज सुनकर स्तब्ध हो जाती है।)

सुशीलकुमार—ठहरो इतनी जल्दबाजी न करो। तुमने यह कहनेके पहले उस दर्दनाक पहलूमें बैठकर भी कुछ देखा है ?

कमलावती—(हारी हुई हरिणीके समान) वह क्या ?

सुशीलकुमार—तुमने सोचा है कि तुम्हारे इस अमानुषीय कार्यका क्या दुष्परिणाम होगा ? याद रखो तुम्हारे सोनेका संसार मिट्टी हो जावेगा। नारकीय मंत्रणा तुम्हारे जीवनाकाशमें वेदनाके बादल घुमड़ा देगी और सर्वनाश तुम्हारी राह रोके खड़ा होगा।

कमलावती—इसका मतलब क्या है मैं नहीं समझी।

सुशीलकुमार—जरा अपने दिलपरका कृत्रिम-लालसाका परदा उघाड़ कर फिर देखो। तुम स्वयं नारी हो; नारीके दिलकी अनुभूति तुम कर सकती हो। क्या एक अधेड़ जर्जर बदनवाले वृद्धके साथ रहकर नवयुवती शीला पूर्णरूपसे सन्तुष्ट हो सकेगी?

कमलावती—लेकिन मैं पूछती हूँ कि हमारी राहमें रोड़ा अटकानेका आपको क्या हक है? आपको मैं नहीं जानती। आप कौन हैं।

सुशीलकुमार—मैं एक सुधारक हूँ। समाजमें होनेवाली कुरीतियोंको यथाशक्ति रोकनेका प्रयास करना ही मेरा काम है। मैं आपके पतिदेवके पुराने साथियोंमेंसे एक हूँ। उनकी स्वर्गीय आत्मा इस-दुसंवादको सुनकर कितनी दुखी होगी? बहन शारदाके मुँहसे जैसे ही मैंने यह बात सुनी दौड़ता हुआ यहां आया हूँ। सौभाग्यसे ठीक वक्तपर मैं आ गया।

कमलावती—फिर भी आपको इन बातोंसे कोई सरोकार नहीं। आप पहले कोई भी रहे हों, इस समय आप हमारे कोई नहीं। कृपया आप यहांसे तशरीफ ले जाइए।

सुशीलकुमार—आखिर समाजका भी तो कुछ भय करो।

कमलावती—नहीं, वह कुछ नहीं है। इतने दिन उनके देहान्तको गुजर गए किसीने आकर दरवाजे पर झांका भी? हम भूखों मरते हैं या भीख मांगते हैं यह भी किसीने देखा? हमारी समाज अपंग है। अब जो हमारी सुख-सुविधाका जरासा भी साधन मिला

तो रोड़े अटकानेको सब आजाएँगे। मैं किसीकी नहीं सुनूँगी, जो मेरे दिलमें होगा करूँगी, देखूँ मुझे रोकनेवाला कौन है?

सुशीलकुमार—(जोशमें) अच्छा, मैं भी प्रण करता हूँ कि यह अन्याय जीते जी कभी न होने दूँगा। अपनी जान देदूँगा पर अपनी बहिनको कुएमें गिरनेसे अवश्य बचाऊँगा। मेरा नाम सुशील नहीं, अगर अपने नियमको न निभाया तो...

[तैशमें आकर चला जाता है]

कमलावती—तुम इन गीदड़ धमकियोंकी जरा भी परवाह न करो। मेरी लड़की है उस पर मेरे सिवाय और किसीका अधिकार नहीं। चाहे कुएमें डालूँ; चाहे सिंहासन पर बिठाऊँ। तुम सेठजीसे कहना कि ८ दिनके भीतर विवाहकी समस्त तैयारियां हो जांय। मैं बारातकी प्रतीक्षामें रहूँगी।

वृन्दा—अच्छा अब मैं जाती हूं। मेरी बात याद रखना।

कमलावती—(स्वगत) आह हमारा घर दौलतसे भर जायगा। आज देखो मेरे बदनपर फटी धोतियां भी मुश्किलसे मिलती हैं। खानेको भरपेट रूखा सूखा भी दुस्वार होजाता है। कांसे तांबेके गहनोंके लिए तरसती रहती हूं। और अब मेरी बेटीका विवाह हो जायगा तब मैं सुन्दर सुन्दर साड़ियां रोज बदलूंगी। दो चार सोनेके गहने भी जरूर बनवाऊंगी। फिर मैं बनठनकर बाजारमें निकला करूँगी। अपनी पड़ोसिनोंसे सीधे मुंह बात भी नहीं करूँगी। जरा जरासी बातोंपर धमकियां दूंगी। व्यंग-बाण छोड़ूंगी। अहा वह दिन अब

समीप ही है जब मैं रईस बन जाऊँगी। लोगो देखो, मेरी बेटी गली गलीकी धूल नहीं है। आज तुम जिसको देखकर गरीब समझ नीची निगाहोंसे देखते हो कल उसके पैरोंपर माथा रगड़ोगे। मेरी बेटी भिखारिनी नहीं राजरानी है।

शीलाने आकर कहा—मां क्या सोच रही हो? भीतर नहीं चलोगी? खाना बनानेका समय होगया। क्या बनेगा आज?

कमलावतीने प्यारसे अंकमें भरते हुए कहा—आ मेरी बेटी, जैसी तू सुशीला भाग्यवती लड़की है वैसा सौभाग्यशाली वर भी तुझे मिलेगा।

(शर्मसे आंखें नीची किए) शीला बोली—मां क्या खाना बनेगा आज?

कमलावती—चल पगली मांके आगे इसतरह शर्माया करती हैं। चल अब तुझे तकलीफ करनेकी जरूरत नहीं। मैं खुद आकर बना लूंगी। अब तो तू रानी बनने जारही है।

× × ×

(सेठ प्रियदत्तका बगीचा, अनन्तमती ध्यानमग्न बैठी है।)
धीरे धीरे मन्द गतिसे सरोजिनीका प्रवेश।

सरोजिनी—(पीछेसे आंख मींच लेती है।)

अनन्तमती—कौन? समझ गई सखी सरोजिनीके अतिरिक्त और कौन इतनी शैतानी कर सकता है?

सरोजिनी—अच्छा, मैं शैतान ही सही लेकिन तुम यहां अकेली बैठी किसकी आराधना कर रही थीं? क्या किसी प्रियतमकी साधनामें मग्न हो रही थीं?

अनन्तमती—छि: कैसी वेतुकी बातें कर रही हो तुम? मैं और प्रियतमका ध्यान। सखी तू जानती नहीं स्वार्थी मनुष्योंसे मुझे कितनी चिढ़ है?

सरोजिनी—मुझे भुलावेमें डालकर छलना चाहती हो। आखिर पुरुषोंसे इतनी नफरत होनेकी वजह?

अनन्तमती—वजह बताऊँ? स्त्री और पुरुष इन दोनोंको मिला करके ही संसार बनता है न? लेकिन यह सब तो महात्माओंकी वाणी है जो कागजी दुनियासे सम्बन्धित है (व्यवहारमें इसका क्या रूप देखनेमें आता है? स्त्री दासी कामिनी भोगकी साधारण वस्तु और पुरुष स्वामी संसारका कार्यकर्ता और नारीका भाग्य विधाता) कितना अन्तर है, कितना अन्याय है पुरुष जातिका सुकोमल नारी जातिके साथ। स्त्री तो अपना सब कुछ जीवन—धनके चरणों पर वार देती है और बदलेमें क्या पाती है—भर्त्सना। पुरुषकी मनोकामनाओंके आगे जीवित नारीका कुछ मूल्य नहीं।

सरोजिनी—देखनेमें तो यही होता है, लेकिन सभी पुरुष एकसे तो नहीं होते। कोई आम खट्टा होता है कोई मीठा। कोई पुरुष स्त्रियोंको जानवर समझ उनपर मनमाने सितम ढाते हैं तो कोई इन्हें देवी समझते हैं। जीजानसे उनके सुख—दुखका ध्यान रखते हैं।

अनन्तमती—किन्तु ऐसे पुरुष विरले ही होते हैं। पुरुषजाति तो स्वभावतः नारियोंको अपनेसे बलहीन और तुच्छ समझती है। इसी लिए सदा उसपर अन्याय करती रहती है। अब समय आगया है कि हम भी पुरुषोंको अपने आत्मबलसे दिखादें कि हममें भी कितना मानसिक बल है, कितना तेज है, कितनी महानता है।

माधुरी—लेकिन मुश्किल तो यह है कि नारीको पद पदपर पुरुषोंके आधीन रहना पड़ता है। वह पुरुषके साहाय्यके बिना एक कदम नहीं चल सकती।

अनन्तमती—नहीं यह बात नहीं है। हममें स्वयं इतनी क्षमता नहीं है कि अपने गौरवको निभाएं।

सरोजिनी—आखिर इतनी बड़ी भूमिका बनानेकी आवश्यकता क्यों पड़ी, पुरुष पुरुष है नारी नारी है। पुरुषका काम है करना। नारीका कर्त्तव्य है सहना। नारी दान करती है। पुरुष दान लेता है। नारी आत्मिक बलकी अधीश्वरी है पुरुष शारिरिक बलका सम्राट् है। बात दोनोंमें बराबर है लेकिन इससे आपका क्या प्रयोजन है?

अनन्तमती—मेरा मकसद यह है कि आजीवन कौमार्यव्रतका पालन करूंगी। इस व्रतके द्वारा हम अपने जीवनको विशुद्ध विस्तृत उन्नति पथकी ओर द्रुतगतिसे अग्रसर कर सकती हैं।

सरोजिनी—चलो जाने भी दो, आज मैं तेरे पागलपनकी एक अचूक औषधिका शुभ समाचार लाई हूँ। देखो तुम अपनी यह आदत छोड़ दो। तुम्हारे पिताजी तुम्हारे लिए वरकी तलाश कर रहे हैं।

अनन्तमती—(विस्मयसे) क्या कहा ?

सरोजिनी—हां और इसी वसन्तमें तुम्हारी शादी होजायेगी । तुम किसी दूसरेकी होजाओगी ।

अनन्तमती—(गम्भीर होकर) पगली, वही शादी जिसमें एक लड़की और एक लड़का जीवनपर्यन्तके लिए अभिन्नतासे प्रेम करनेका वायदा करते हैं ?

जिनकी प्रथम और महत्वपूर्ण प्रतिज्ञा यह रहती है कि हम एक दूसरेके सिवाय और किसीसे प्रेम न करेंगे । यही शादी है न ?

सरोजिनी—नहीं, अभी तुम विवाहकी सम्पूर्ण परिभाषाको नहीं जानती । इसका रहस्य मैं तुम्हें बतलाती हूँ सुनो—स्त्री और पुरुषमें स्वाभाविक मौन आकर्षण है । प्रकृतिने उन दोनोंकी बायोलाजिकिल प्रवृत्तिको इस रूपमें संघटित किया है कि दोनोंका पारस्परिक सहयोग जीवनकी अनिवार्य चीज है । विवाह केवल बंधन ही नहीं है । मनुष्यकी काम-अभिलाषाएं अपूर्ण नहीं रखी जा सकतीं । विवाह स्त्री और पुरुषमें सच्चे प्रेमकी गम्भीर स्थापना करता है । विवाह उनके जीवनको उत्तरदायित्व पूर्णतया संयमित बना देता है । यदि समाजने विवाहकी पवित्र प्रथाको ईजाद न किया होता तो समस्त संसार पतित और नष्ट प्राय: हो जाता ।

अनन्तमती—तुम भ्रममें हो अरे, यह विवाह तो प्रेमका सीमित रूप है । प्रेम यह नहीं कहता वह किसी तुच्छ-परिधिमें ही केन्द्रित हो । वह तो सर्वव्यापी है । प्रेमका रूप विशाल है । प्रेम स्वर्गीय-सुधा है । वह प्रेम नहीं जिसमें अपने तथा परायेका भेदभाव है । प्रेम कैदी

नहीं है। प्रेम स्वतंत्र है। प्रेम वह है जिसे एक नीतिकारने इन शब्दोंमें कहा है—अयं निजः परोवेत्ति गणना लघुचेतसाम्। उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्। प्रेम तो छोटेसे छोटे बड़ेसे बड़े समस्त जीव-धारियोंपर करना चाहिए। क्या विवाह इस-प्रेमका कारागृह नहीं है?

माधुरी—ओफ, सब संसार प्रेमको इस उज्वल दृष्टिसे नहीं सोच सकता। प्रेम स्वर्गीय देन है सही पर प्रेमका एक दूसरा भी रूपांतर है वासना-आकांक्षा। वासना उछृंखल हो जाय तो हम पशुसे भी अधःपतित हो जावें। विवाह इसी वासनामयी प्रेमके सर्वोत्कृष्ट-विधानका नाम है। जिसमें शारीरिक मानसिक क्षुधाकी पूर्ति करनेके अतिरिक्त गृहस्थीका भार वहन करनेका आदेश है। प्रेम-स्वतंत्र है किंतु स्वतंत्र शब्द वासनाके साथ नहीं लग सकता, यहां उसका अर्थ होता है—निरंकुशता-पाशविकता-इसपर सामाजिक बंधन होना आवश्यकीय है।

अनन्तमती—मैं तुम्हारी सब बातें तन्मयतासे सुन रही थी। मैं यह जानती हूं किन्तु मैं तो विश्व-प्रेमके ऊपर अपनेको अर्पण कर चुकी हूं। मैं वासना तथा कामनासे सुदूर निर्मल प्रेमके सुखद स्रोतमें स्नान करना चाहती हूँ। मैं आ-जन्म ब्रह्मचारिणी रहकर विश्वकी निस्वार्थ सेवा करनेका ध्रुव प्रण कर चुकी हूँ।

(सहसा अंगवतीका प्रवेश)

अंगवती—हैं यह मैं क्या सुन रही हूँ? बेटी तू क्या कह रही है? मुझे भी तो सुना, तूने कौनसा प्रण किया है?

अनन्तमती—(लज्जासे सिर झुकाकर) मां कुछ नहीं यूँ ही गपशप कर रही थी।

अनन्तमती।

अंगवती—बेटी, मैं तेरी मां हूँ। मुझसे तुझे कुछ छिपाना योग्य नहीं है। तू विदुषी है। किसी निर्णय पर पूर्वापर सोचकर ही पहुँचेगी। तुझे नहीं मालूम तेरे विवाहके लिए हम लोग किस उत्सुकतासे आयोजन कर रहे हैं?

अनन्तमती—मां, आज आपके मुखसे यह बात सुनकर मैं अत्यंत चकित हो रही हूँ। क्या आप भूल गईं जब मैं छोटी थी तब आपने ही पूज्य मुनिराजके समक्ष मुझे ब्रह्मचर्य व्रत दिलवाया था। क्या आप स्वयं ही मुझे व्रत भंगके महान पाप-पंकमें लिप्त करना चाहती हैं?

अंगवती—पुत्री, मुझे सब बातें अच्छी तरह स्मरण हैं, किन्तु तब तो तुम बालिका थी, ब्रह्मचर्यके सहयोगसे अनजान थी। वह तो स्नेह था। हँसी हँसीमें हमने तुमसे कहा था। और यदि उसको प्रतिज्ञा ही मान लें तो उसकी अवधि तो आठ दिनकी ही थी।

अनन्तमती—माँ, मेरा अपराध क्षमा करो। प्रतिज्ञा करते समय न तो आपने ही न पूज्य ऋषिवर्यने ही मुझे संकेत किया था कि यह नियम सिर्फ आठ दिनका है। मैंने मन-वचन-कायसे आजीवन ब्रह्मचर्य व्रतकी दृढ़ प्रतिज्ञा की थी। तबसे वह प्रतिज्ञा मेरी जीवन-संगिनी रही है। पद पद पर वह मुझे अपनी ओर सहज आकर्षित करती रहती है। और अब तो वह बंधन रूपमें नहीं; किन्तु हृदयोद्गार रूपमें मेरी अंतर्भावनाओंमें घुल मिल गई है। माँ, आप जानती है कि आर्य ललनाएं जो प्रतिज्ञा करती हैं वह वज्ररेखासे भी अधिक अमिट होती हैं। जीवन भी उसकी समतामें हेय है।

आनके लिए जानपर खेलना हमारे बाएं हाथका खेल है। अतः आप व्यर्थ-प्रयास न करें, मैं अपने व्रतपर ध्रुवकी भांति अटल हूँ।

अंगवती—देख यह ठठोली नहीं है। इस व्रतका पालना सहज मिश्रीकी डली नहीं है। इसमें पग पगपर विपत्तियोंके कंटक बिखरे हैं। प्रलोभनाओंके विशाल पर्वत खड़े हैं। बड़े बड़े ऋषि मुनि भी इस व्रतसे विचलित होते देखे गए हैं। जिस कामने समस्त विश्वको अपने इशारोंपर नचानेवाला बन्दर बना लिया है, उससे तू किस-तरह मोर्चा ले सकेगी?

अनन्तमती—माताजी, मैं दुधमुंही नहीं हूं। मनुष्य जो चाहे सो कर सकता है। पर्वतकी जगह जल-सरोवर लहरा सकता है। विपदा-चट्टानोंको कतराकर निकल जाता है। कर्त्तव्यका आह्वान उसे मौतके शिकंजोंमें भी नहीं विस्मरण होता। ऐसा कोई भी कार्य नहीं जो शक्तिशाली कर्मठ मानवोंके द्वारा न हो सके। वे आगमेंसे कंचन बनकर निकलते हैं। आपत्तियोंकी घनचोटें उनकी ज्योतिको चौगुना कर देती हैं। कोई भी ऐसी शक्ति नहीं जो उन्हें उनके पथसे विचलित कर सके। मैं खूब सोच चुकी हूँ। अपने व्रतसे तिलभर पीछे कदम हटाना मुर्दादिलोंका काम है। आप देखेंगी कि जो काम ऋषिमुनियोंको भी विचलित कर देता है, जो संसारका एकमात्र अधिष्ठाता है, जो प्रकृतिकी सबसे महती दुर्बलता है, जो मायाका अमोघ अस्त्र है, उसके समक्ष भी मैं किस तरह सुमेरु सी अचल खड़ी रहती हूँ? कृपया अब मुझसे आप किसी भी प्रकारकी विफल बहस न करें।

अंगवती—तो प्यारी पुत्री, तू मेरी आशाका सुनहरा संसार खाक कर देगी! तुझे योग्य वरके हाथों सौंप सुखी देखनेकी मेरी इच्छा क्या कभी पूर्ण न होगी?

अनन्तमती—माँ, व्यर्थकी चिन्ताओंमें अपना दिल दुर्बल न बनाइए! मैं इस अवस्थामें ही पूर्ण सुखी हूं। जो अनिर्वचनीय आशातीत सुख कामना विजयमें है वह पराजयमें कहांसे हो सकता है?

× × ×

(कमलावतीका मकान एक छोटीसी कोठरीमें)

शीला और शारदा बैठी हैं।

शीला—तो जीजी किसी तरहसे मेरी रक्षा करो। मुझे इस गर्त्तसे निकाल लो। जब स्वयं मां ही मेरी भक्षक हो गई है तब मैं और किसकी आशा करूं। हा, भाग्य क्या इसीलिए तूने मुझे रूप दिया था? जवानी दी थी? तेरा यह वरदान ही आज मेरे सामने काल बनकर खड़ा है। जिसको मैं कीमती हार समझकर दिलमें समेटे बैठी थी, आज वही क्रोधसे फुफकार कर मुझे डसनेके लिए व्यग्र होरहा है। हा, क्या मेरी जिन्दगी इसी तरह आंसूओं पी पीकर बीतेगी? आहोंके सिवाय और कोई मेरी साथिनें न होगी?

शारदा—छन पगली, कहीं इस तरह रोया जाता है? रोनेसे कुछ काम नहीं होनेका। मांका दिल पत्थर है, वैभवकी तृष्णाने उनका मातृत्व स्नेह दवा दिया है। वह नहीं पिघल सकता। अनुनय विनय सब बेकार हैं। अब तो कुछ प्रयत्न करनेसे कार्य-सिद्धि सम्भव है। अन्यथा वह तो होगा ही जो भाग्यमें लिखा होगा।

शीला—मैं क्या करूं, मेरी तो अक्क गुम हो गई है। बुद्धि बेहोश पड़ी है। तुम्हीं कुछ बताओ किसी तरह मुझे उबारो। जीजी तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ।

शारदा—बहन, इतनी अधीर न बनो। हिम्मत रखो। निर्भय बनो। सुशीलबाबू आते ही होंगे। वे तुम पर बहुत अनुग्रह रखते हैं। अवश्य ही वे कोई तुम्हारे लिए सुगम उपाय बताएंगे। तुझे मालूम है माँ इस वक्त कहां गई है?

शीला—माँ तो खुशीके मारे फूली नहीं समाती। इधर मेरे दिलकी कौन पूछता है? उन्हें तो अपने स्वार्थसे मतलब! हाय जो माता अपनी सन्तानके लिए विपुल वेदनाओंको हँसते हँसते झेल लेती हैं, स्वयं भूखी रहकर सर्दी गर्मीकी बाधाएँ सहकर सन्तानको जीवन-दान देती है, वही अपनी प्यारी सन्ततिका जीवन विनाशकी ओर ले जाती है किस लिए? क्षणिक स्वार्थके लिए। हाय लक्ष्मी! तेरी मायामें कौन नहीं फँस जाता? जीजी, मेरा तो दिल कहता है कि आत्मघात कर लूँ।

शारदा—छि: ऐसा भूलकर भी न सोचना। आत्मघात कायरताकी निशानी है, और महापाप है। यह तो आखिरी शस्त्र है। जब हमारे सब प्रयत्न निष्फल जाएंगे तब यही करना होगा।

शीला—मेरा दिल रह रहकर धड़क रहा है। ईश्वर जाने क्या होगा? लो भाईजी आ गए।

सुशील—तुम लोगोंने आखिर क्या निश्चय किया है?

शारदा—हम तो आपके सहारे हैं। आप पर हमें विश्वास है। आप अवश्य ही बहनको विपत्तिसे छुटकारेका कोई न कोई उपाय ढूंढ़ ही निकालेंगे। आप जो भी हमें आज्ञा देंगे वह सहर्ष पालन करेंगी।

सुशील—देखो, आज द्वादशी है। कल सेठ कचौड़ीमलकी बारात यहां आवेगी। जिस समय फेरोंका वक्त हो उस समय मैं आऊँगा। घरके पिछले दरवाजे पर तैयार रहना, तांगा बाहर खड़ा रहेगा। जब सब लोग काम-काजमें लगे होंगे तब जल्दीसे मैं तुम्हें लेकर रफूचक्कर हो जाऊँगा। पीछेका प्रबन्ध कर लिया है। मार्गमें मेरा दोस्त प्रकाशचन्द्र मिलेगा। उसे मैंने सब बात समझा दी है। कहो स्वीकार है?

शीला—(लज्जित हो निरुत्तर रहती है।)

सुशील—क्यों इसमें कुछ विरोध है? जो कुछ कहना हो अभी कह दो, समय नजदीक है। फिर कुछ हाथ न आयगा।

शारदा—नहीं नहीं, आपका प्रस्ताव निर्विरोध है। उसमें संशोधनकी तनिक भी गुँजाइश नहीं। शीला शर्मीली लड़की है। वह कुछ न कहेगी; लेकिन उसका मन हमारे साथ है। हम जो भी उसे सलाह देंगे वह हँसी हँसी करनेको तैयार रहेगी। उसके प्राण तो शीघ्रतासे उस समयकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। अच्छा, मेरा काम?

सुशील—तुम्हारा काम यह होगा कि ठीक उसी वक्त तुम इन्हें तैयार कर रखना। बहादुरी तो इस बातमें है कि किसीको कानोंकान खबर तक न हो। और न सांप मरे न लाठी टूटे। नवोढ़ा वधूके प्रणयकी पिपासिनी आंखें नीरस हो जांय। धन-लिप्साका दुखान्त हो जाय।

शीला—आप निश्चिन्त रहिए। अब माताजीके आनेका वक्त हो गया है। आपको देखकर कहीं वे झुंझला न पड़े। अतः शीघ्रता कीजिए, कहीं उनको हमारे गूढ़ रहस्यका आभास मिल गया तो सब किया कराया धूलमें मिल गया समझिये।

सुरेश—हां हां, मुझे इस बातका ध्यान है। मैं जल्दी जाता हूं। किन्तु भूलना मत। हमारा मनोरथ अवश्य पूर्ण होगा।

शीला—अब मेरी जानमें जान आई। भाईजी हमें कभी धोका न देंगे।

(कमलावतीका प्रवेश)

कमला—तुम लोग यहां मनहूसकी तरह क्यों बैठी हो? शादी नजदीक है तुम्हे कुछ फिकर नहीं? और कुछ नहीं तो कुछ गाओ ही। कमसे कम किसीको मालूम भी तो हो कि यहां कुछ है।

शीला—मां, मेरे तो सिरमें भयंकर पीड़ा हो रही है। जी घबराता है। मैं क्या करूं?

कमला—अरे! मंगल-समयमें यह विघ्न कैसा? हर्षकी रंग रेलियोंमें यह आघात कैसा? मैं अभी दवा मंगाती हूं। (जाती है।)

शीला—चलो छुट्टी मिली। अब तो मुझे इसकी सूरतसे ही भय मालूम होता है।

(सरला तथा कमला सखियोंका आना।)

सरला—यहां छिपकर बैठी हो तुम, सारे घरमें खोजते खोजते परेशान हो गई, तब आपकी सूरत मिली।

कमला—चारों तरफ आनन्दका सागर उमड़ा पड़ रहा है। लेकिन शीलाके मुख पर वही मौन उदासीनता है। इसका कारण—

शारदा—नहीं नहीं उदासीनता तुम्हें मालूम हो रही है। वास्तवमें हमारी शीला बचपनसे भोली-भाली शान्त लड़की है। वह इस ओरसे भी निरपेक्ष है। अन्य लड़कियोंके समान प्रकृत्ति चांचल्य इसमें नहीं है।

सरला—यह तो तुम सही कह रही हो। शीलाके समान सुशीला बालिका देखनेमें विरली ही होती हैं। भगवानने जैसा सुन्दर रूप दिया है वैसे ही सद्गुण भी कूट कूट कर भर दिए हैं। जिस घरमें जायगी—गुलजार हो जायगा। गृहलक्ष्मी साक्षात् अन्नपूर्णा ही है यह।

कमला—लो तुमने भी यहां आकर बातें ही छेड़ दी, कोई गीत ही गाओ। हर्षके वातावरणमें कोई मधुर संगीतकी लय छेड़ दो जिसमें हमारी शीलाका मन-मयूर भी नाच उठे। क्यों न ठीक बात कही है न?

सरला—हां यह तो तुमने उपयुक्त कहा है। शादीके समय नीरस बातें भली नहीं लगती। तुम ही गाओ।

कमला—(गाती है) प्रेमका कैसा अद्भुत पाश?

दुर्बल मृदुतन किन्तु सुमधुर है, इसका सतत विकाश।

मुग्धकोकिलाका कुहु कुहु रव,
विहगावलियोंका सुमधुर रव।

अनन्तमती।

शशि-प्रेयेसिका सुधा पिलाना,
नभजलथल पर बिखरा वैभव ॥

× × ×

दिनकर-रश्मि-जाल दर्शन कर,
विकस उठे पंकज अकुला कर ।
खिलते-साथ, साथ मिट जाते,
विमल प्रीतकी रीत निसाकर ॥

× × ×

प्रेमपगी सरिता गिरिबाला,
घिरकर ही ले प्रेम निराला ।
रत्नाकर अंचला में खोती,
पीकर प्रेमासव मतवाला ॥
दीप शिखाके मंजु प्रेममें;
शलभ विहस देता है जीवन ।
प्रेमी मधुकर सरज–अँकमें,
मर मर करता रमता है गुन ॥
जीवन-मृत्यु सौख्य दुखसे है, रहित प्रेम अविनाश
प्रेमका कैसा अद्भुत पाश ॥

(मलाईलाल और बर्फीमल—
स्थान शहरका मध्य भाग, पीपलका पेड़)

मलाईलाल गाता है—

अजब है मेरा यह संसार ।
सह सहकर लाखों भाग्य चोट,

वेदना-पंकमें लोट लोट।
दे देकर यमको विजय वोट,

उत्सुकता हो उठी मस्त गा उठा, प्यारी राग मल्हार।

चर्फीमल—(स्वरमें स्वर मिलाकर)

रो लूं सिसक सिसक व्याकुल बन,
कसो करा हूं शोकाकुल बन।
अपने पथपर कंटकुल बन,
बिखरूं कुचलूं हंसू तभी यह, पागल कृत्य निहार।

दोनों—पत्थर पर गिर गिर कर सिर धुन,
पिसकर फिर वन वन जाऊँ घुन।
भर भर, रस पी पीकर गुन गुन,
भूका छोर लाँघ्र अमराचलमें हम करें विहार।
अजब है मेरा यह संसार॥

वर्फीमल—क्यों दोस्त तुम हिमालयके श्रृंगों पर घूमनेवाले सुन्दर स्वच्छन्द पक्षियोंसे अवश्य ईर्षा करते होंगे। तुम्हारा भी जी चाहता होगा कि मेरे भी सुनहले पंख लग जांय और मैं भी विस्तीर्ण गगन पर स्वतंत्र विहार करूं।

मलाईलाल—यार तुम भी क्या बे परकी उड़ा रहे हो। मैं मनुष्य होकर पक्षियोंसे डाह करूं? तुम नहीं जानते प्रकृतिकी वह-रचना भी कितनी कौतुहल पूर्ण है। अरे देखो तो हमारे मन-विहगके भी इनसे लाखगुने सुन्दर पंख लगे हैं। इन्हें तो कोई देखले और दुश्मनी समझे तो जल्दीसे तीर छोड़ दे और अपने कब्जेमें करले;

किन्तु यह मन भी तो ऐसा चालाक प्रवीण पक्षी है कि उससे सहस्र-गुनी तीव्र चाल रखकर भी गुप्त रहता है। और अहंकारी शरीरको अपने संकेत पर नचाता है।

मलाईलाल—लेकिन सोचो, यदि हमारा शरीर भी मनके समान ही आकाशगामी हो जाता तो फिर आनन्द ही आनन्द था। हम तारक-बालाओंसे मजाक किया करते, चांदके साथ खेलते और सूर्यसे गप्पें लड़ाते कैसा अच्छा होता?

वर्फीमल—अरे दोस्त, तुम भी निरे काठके उल्लू हो। तुमने यह तो सोच लिया जिसे स्वप्नोंकी परियोंने तुम्हारे कानमें चुपकेसे कह दिया था। पर यह भी सोचा कि मन जो कि शरीरके कारागारमें जीवनके तालेसे वन्द है उसके भी पर वाला होनेसे कितना गुमान है। दिन-रात आठों पहर उसे विना घूमे चैन नहीं मिलता। जब यह ही हमारे दिलमें वेकली मचाये रहता है तब परवाला शरीर होकर न जाने क्या गजब ढ़ाता।

मलाईलाल—हां यार तूने पतेकी कही। ईश्वर न करे किसी आदमीके पर लग जांय।

(**मस्तरामका प्रवेश।**)

मस्तराम—जाओ जाओ, लंदनकी हवा खाओ। जरा दिमागको दुरुस्त करो, तुम्हें पता नहीं तुम्हारी यह प्रार्थना वे सिर पैरकी है ठीक वैसी ही चूहेसे रक्षा करनेके लिए प्रार्थना की और उधर वन्दर सब भोजन खा गया।

वर्फीमल—अजी तुम क्यों हमारी बातोंमें टांग अड़ाते हो। भई यह खूब रही, दाल भातमें मूसलचन्द कूद पड़े। अच्छा आओ अब कहो तुम क्या कहते हो?

मस्तराम—हम कह रहे हैं कि तुम्हारा तो प्रार्थना करते २ दिल गरम हो गया और उधर आदमी पक्षियोंके चचा बने अपने दोस्तोंको पंखोंपर विठा, हजार हजार कोसकी मंजिलें मिनटोंमें तय कर आते हैं।

मलाईलाल—अच्छा यह बात तब तो अवश्य ही वे आदमी शैतानके अवतार होंगे। मैं तो कह ही रहा था कि शरीर भी पक्षियों जैसा आकाशमें घूमने लगे तो गजब हो जाय।

वर्फीमल—नहीं जी यह मत कहो। पहले जमानेमें भी तो लोग विद्यावतीसे पंखोंवाले पक्षियोंके समान घूमते थे। तब तो यह साधारण बात थी।

मलाईलाल—खूब दूरकी सोची। तुम तो उस जमानेमें रहते थे मानव और इसमें रहते हैं दानव। अबका दानव तो इस कलाका निर्माण कर फूल उठेगा। जैसे छुद्र नदी जल भर इतराई और अपनी पशुताको दोनों हाथोंसे उछालेगा।

मस्तराम—चलो भी, होगा। ये वैज्ञानिकोंकी गहन बातें, तुम क्या समझो। हां अपना नाम तो बताओ।

मलाईलाल—मेरा नाम मलाईलाल और इनका नाम वर्फीमल है। क्योंजी क्या मर्दुमशुमारी मत्थे पड़ गई?

मस्तराम—अजी उस कमबख्तको दूर ही रहने दो। हां मलाई बर्फी कैसे बढ़िया नाम है। सुनते ही अपने रामकी जीभसे पानी आगया।

मलाईलाल—वाह वाह क्या कहना—ऐसे ही ग्राहकोंके लिए तो हमने दिमागको खुरचन बनाकर नामकी दूकान खोल रक्खी है।

आपका नाम क्या है?

मस्तराम—अजी बस कुछ न पूछो, यार लोग मुझे मस्तराम कहते हैं। पक्वान खाना और सीताराम गाना। यही काम है अपना।

बर्फीमल—बस बस, आप भी आजसे हमारी पार्टीमें शामिल हुए। दुनिया तो पागल है पागल। जानवरकी तरह दिनरात काम करना—मनहूसपनमें जीवन बिताना, भला यह भी कुछ जीवनमें जीवन है। जान कितने दिनकी है। हँसते हँसते लोट पोट हो जाना। संसारकी सारी फालतू बातोंसे हमें क्या काम? न ऊधोका लेना न माधोका देना। सिर या मस्तीको बिणकर हम मौज उड़ाते हैं।

मस्तराम—यार लेकिन एक बात है, घरमें रहना और मौत बुलाना। घरमें जाते ही तो बस नानी मर जाती है। घरका तो नाम ही बस ऐसा कम बख्त है कि क्या कहूँ।

बर्फीमल—तो क्या भाभीसाहिबासे आपकी नहीं बनती?

मस्तराम—देखो जी तुम हमारे दोस्त हो, तुमसे तो तकल्लुफ मैं करता नहीं। अजी! बीबी ऐसी फुल्मैन मिली हैं क्या बताऊं? तुम जानते हो आज कल नया जमाना है। नई रोशनी है। फिर भी हमारी बीबी तो पुराने बुड्ढे युगकी चरण-रज चूम रही है।

बर्फीमल—भाई साफ साफ कहो क्या बात है ?

मस्तराम—कहूं क्या, अपना सिर, तुम लोग तो बिना पूंछके जानवर हो। इतनीसी बात नहीं समझते। अजी मैं कहता हूं सुंदर साड़ी पहिनकर लेडी बनकर हमारे साथ हाथ मिलाते हुए सैर करो। सो वह तो ऐसी बेवकूफ है कि कुछ समझती ही नहीं। परदा कैसे छोड़ सकती है वह।

मलाईलाल—अरे लानत हो नई दुनिया और नई रोशनीको। तुम्हारी बीबी भाग्यसे समझदार मिली है। नई हवामें जिस दिन वह बहने लगी कि बस शामत आई। रोज नई नई फर्माइशें रोज शर्माने-वाले तकाजे तुम्हें हैरान कर देंगे। मैं तो उसी किस्मतका मारा हूं। इसीलिए दिन रात घर छोड़कर इधर उधर मन बहलाता हूं।

मस्तराम—एक बात कहूं लाजवाब बुरा तो न मानोगे ?

मलाईलाल—यह कैसे होसकता है। बुरा मानना तो मुझे किसी भी शिक्षकने न सिखलाया। इतने दिनों हमने बेकार खाक छानी। जब हम यही नहीं जान पाए बुरा मानना किसे कहते हैं।

मस्तराम—सुनो मैं कह रहा था कि तुम्हारी बीबी—न्यू लेडी है और मैं उनका पुजारी जेन्टिलमैन। मेरी बीबी है गृहलक्ष्मी यानी बीते-युग-की कहानी, तुम हो प्राचीनता-प्रेमी तो फिर बस... ।

मलाईलाल—बस क्या ?

मस्तराम—बस... बस और क्या नहीं समझे तुम। ओफ तुम भी क्या हो—इतनीसी बात नहीं समझे। कहां तो विज्ञान पर हाथ सफा कर रहे थे। वहां इतनी बात भी नहीं समझते। वही मिशाल

है—चौबेजी छब्बे बनमें चले थे दुबे नहीं रहे। बस यही कि मियांबीबीका विनिमय हो जाय, हा हा हा हा कैसी मज़ेकी रहेगी।

मलाईलाल—चुप चुप यह हिन्दुस्तान है। कोई गैरमुल्क नहीं है। अभी हुक्का पानी बन्द हो जायगा। अबसे ऐसी बात कही तो बस दोस्ती खतम।

मस्तराम—ओखो मान गए बुरा। यह तो मैंने पहले ही कहा था। हां, देखो ये कौन आ रहे हैं।

(कई नागरिकोंका प्रवेश)

मस्तराम—क्योंजी तुम लोग इस तरह चिल्लाते हुए क्यों आ रहे हो, कोई नई बात है क्या?

एक नागरिक—अरे तुम इसी शहरके तो हो न, तुम जानते हो सेठ कचौड़ीमलके विवाहमें पुलिस आ गई।

मलाईलाल—क्यों पुलिस क्यों आ गई?

दूसरा नागरिक—सेठजीकी शादी एक नवयुवतीसे की जा रही थी। एक सुधारक युवक इस वृद्ध विवाहके सख्त खिलाफ था। वह लड़की और उसकी बहनसे सलाहकर ऐन शादीके मौके पर लड़कीको भगाकर लिए जा रहा था। भाग्यवश सेठके आदमियोंने उसे जाते हुए देख लिया। उन्होंने फौरन पुलिस-सुपरिन्टेन्डेन्टको फोन कर दिया। पुलिस आ गई और उसने उस युवकको लड़की-भगानेके जुर्ममें गिरफ्तार कर लिया।

बर्फीमल—हाय हाय! बेचारा निरपराध युवक पकड़ा गया। पूंजीपतियोंकी माया जो न करें वह थोड़ा है।

अनन्तमती।

एक नागरिक—हमें किसीसे क्या मतलब, जो बेकार लड़ाई मोल लें। चलोजी (सब जाते हैं)

(अनन्तमती बागमें अकेली बठो गा रही है)

मैं गाती हूँ पुलकित।
मेरा उर-तट चीर चीरकर बहती हर्ष सरित॥
मन क्या है, बस भवन प्रेमका,
तन क्या है, सुख चमन क्षेत्रका,
विकस रही हैं नव कलिकाएँ लेकर कान्ति कलित।
उमड़ पड़ा स्नेहका स्रोता,
नीरस-तन-मन-वचन भिगोता,
कहाँ रखूँ किसको देदूं, यह सुखकी बाढ़ अमित।
कोकिलके कलरवमें स्वर भर कर,
प्रकृति प्रणयमें अन्तर तर कर,
चाहा मैंने आज लुटा दूँ अपना मधु सिञ्चित।
किन्तु क्या करूँ हार गई हूं,
सदियोंकी हूँ किन्तु नई हूँ,
युग युग तक दूंगी जगको, अक्षय सुख कुसुम ललित।

(माधुरी और सरोजिनी।)

माधुरी—यह पावन-प्रणयका उल्लासमयी संगीत है। सुनकर कान निहाल हो गए।

सरोजिनी—नहीं यह विश्वप्रेमका मधुर वीणा-निनाद है, सुनकर दिल तृप्त हो उठता है।

अनन्तमती।

अनन्तमती—आओ सखियो, आजका प्राकृतिक दृश्य तो निहारो, आंखें थकती नहीं देखकर। सूरज और बादलोंकी प्यारी आंखमिचौनी। कभी नन्हीं नन्हीं बूंदें जैसे मेघ मोती लुटा रहे हों।

सरोजिनी—और उधर देखो पपीहेकी टेर कानोंको सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।

माधुरी—पानीमें धुलकर पेड़ों लताओंका रूप कैसा मनोरम हो गया है। फूलोंमें तो सौरभसे बगीचा महक पड़ा है।

अनन्तमती—अरे यह क्या? मेरा दांया नेत्र क्यों फड़क रहा है क्या कुछ अमंगल होगा?

माधुरी—छि: ऐसी भी कोई सोचता है। तुम्हारे साथ अमंगलताका क्या सम्बन्ध? आंखमें किरकिरी पड़ गई होगी?

अनन्तमती—नहीं मुझे कुछ याद आ रहा है। शायद रातको मुझे एक स्वप्न दिखाई दिया था जिसको देखते ही मैं व्याकुल हो रोने लगी थी। तब माताजी दौड़ी हुई आ रही थी। भयसे मेरा बदन कांप रहा था। मैंने उस समय तो मांसे कुछ नहीं कहा लेकिन उसकी याद रह रह कर चिकुटी काट जाती है।

माधुरी—भला हम भी सुनें, वह भयानक स्वप्न क्या है?

अनन्तमती—सुनो तब कोई रातके तीन बजे होंगे तब क्या देखती हूं कि मैं बैठी हूं इतनेमें कोई विकराल मूर्ति आकर खड़ी हो गई जिसे देख कर मैं भयसे चिल्ला उठी। फिर वह मूर्ति मुझे उठाकर न जाने कहां ले गई और सहसा किसी निर्जन स्थानमें गिराकर

अदृश्य हो गई। तबसे मेरा चित्त उद्विग्न हो रहा है। भविष्यकी विपद् आशंकासे प्राण सिहर उठते हैं।

माधुरी—मैं समझती हूं कदाचित् तुम किसी चितामें मग्न होकर सोई थीं। स्वप्न-मनकी भावनाओंके प्रतिबिम्ब होते हैं। इसीलिए चिन्ताकी प्रतिमूर्ति स्वप्नमें दिखाई दी। स्वप्नको नितान्त सत्य समझ लेना मूर्खता है।

अनन्तमती—इसमें सन्देह नहीं कि सभी स्वप्न सत्य नहीं होते। किन्तु रात्रिके तृतीय पहरके स्वप्न सदा सत्य सुने गए हैं। बशर्ते कि कोई शारीरिक या मानसिक बिमारी न हो।

सरोजिनी—लेकिन जरासे स्वप्नको देखकर घबरा जाना तुम जैसी विदुषीको शोभा नहीं देता। साहसको आशंकाके समक्ष कुर्बानी देना कायरताकी निशानी है। कोई ऐसा काम करो जिसमें यह दुःस्वप्न विस्मरण हो जाय।

अनन्तमती—ठीक है, तुमने मेरी सोई शक्तिको जाग्रत कर दिया। अब मैं धैर्य न छोड़ूंगी। चाहे स्वप्न मिथ्या हो या सत्य हो मुझे क्या मतलब? जो कष्ट पड़ेगा झेलूंगी। फिर व्यर्थकी दुखद कल्पना क्यों करीं?

माधुरी—सखी चलो झूला हमारी बाट देख रहा है। यह समय भी मनोहर है। नन्हीं नन्हीं बूंदोंको सिरपर खिलाते हुए झूलेपर बैठकर प्रकृतिका दृश्य सचमुच ही नयनाभिराम हो उठता है। चलो—

(सब सहेलियां झूलती हैं और गाती हैं)

सावनका हो मस्त माह हो, सान्ध्य लालिमा पूनमकी।
फर फर फर करता हो झूला, मधुर रागिनी कोकिलकी॥

हो सजनी दो चार मोहिनी, मंजुल-मुखी सजीलीसी।
प्रेमभरी पीयूष-भरी मस्तानी, मुग्ध-रंगीलीसी॥
चमक दमक बिजली नभ पर, जादू-टोना कर जाती हो।
नन्हीं बूंदें अन्तर आंगनमें, अमृत सरसाती हो॥
उमड़ घुमड़ घनमाला जीवनका, सन्देश सुनाती हो।
चारों दिशि प्रेम हिलोरे, बेसुध उमड़ी आती हों॥
भैया देता पेंग खड़ा हो, मधुर मधुर बतियां कहता।
हाथोंमें उलझी हो रखिया, प्रेम नीर मुखपर बहता॥
शुभ्र चंद्रिका बिखराने शशि, नभ पर दौड़ा आता हो।
खगकुल शिशु-दर्शनको आतुर, घर मुख मोड़ा आता हो॥
चूंचूं पीपी टर्र टर्र मनले, मनले अम्बर गूंज रहे।
पहने हो हरिताभ वस्त्र, हरियाली खिलखित कुंज रहे॥
बहती हो शीतल बयार ले, लेकर सलिल फुहारा भी।
मधु-सुरभि लिए मनमस्त लिए, उर पट हो शीघ्र बुहारा भी।

(एक विद्याधरका सपत्नीक विमानमें बैठे हुए इधरसे गुजरना-संगीतकी झनक पड़ते ही विमान रोककर चारों तरफ देखना)

कुंडलमंडित—(स्वगत) अहा क्या गन्धर्व-बालाएँ संगीतकी सरिता बहा रही हैं? कैसा मनोहर ललित स्वर है। यह सुललित संगीत मानो समस्त दिशाओंमें नृत्य करता हुआ मेरे दिलको बेमोल मोल ले रहा है। दिल बेकाबू हो गया है। इस नन्दन-काननमें यह संगीतकी मधुरलय केवल किसी भी मनुष्यका दिल अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। (सामने देखकर) अहा ये सुन्दरियां ही हर्ष-मग्न हो गा रही हैं। काश मैं भी इनके समीपका आनंद लूट सकता।

और इन सहेलियोंके मध्यमें यह स्वर्गीय वाला अनुपम सौन्दर्यराशि विखरा रही है। इसकी मनमोहक छविको दिनरात अपलक-नयनोंसे देखता रहूं। इसे दिलमें छिपाकर रखलूं। आंखोंमें इसकी तस्वीर खीचलूं। क्या करुं? दिल मेरा परवस इसके लिए वैचेन हुआ जा रहा है।

पत्नी—सहसा तुम्हारा मुख गंभीर क्यों हो गया है? क्या बात है? क्या कोई भरा हुआ घाव उभर आया है?

कुंडलमंडित—नहीं प्रिये! कुछ कुछ मेरे सिरमें पीड़ा उत्पन्न हो रही है। आंखोंके आगे अन्धेरा छा रहा है। (स्वगत) किसी तरहसे यह वला टले तब काम बने। जब तक यह रहेगी मैं पंगु बना रहूंगा। इसके सामने किसी सुन्दरीको मैं कैसे लुभा सकता हूं। इसे घर छोड़ आऊँ तो वहुत अच्छा हो।

पत्नी—तो घर क्यों नहीं चलते, रास्तेमें थकावट हो गई होगी। चलो विमानकी चाल घरकी ओर करदो।

विद्याधर—अच्छा।

(विमानकी चाल वहुत तेज कर पत्नीको उसके कमरेमें छोड़ दवे पांव फिर अनन्तमतीके बागमें आजाता है।)

विद्याधर—(अनन्तमतीको वहीं देखकर) अहा! ईश्वर तुझे शतशः धन्यवाद है। मेरी कामना सफल हुई। ये सुन्दरियां अभी तक क्रीड़ा कर रही हैं। इनका रूप देखकर तो वेसुध हुआ जा रहा हूं। कहीं ऐसा न हो कि इनके सौन्दर्यको तृषित चकोरकी भांति निहार निहारकर मैं पागल होजाऊँ। और ये सुरवालाएँ मुझे विपत्तिमें अकेला छोड़कर अपने घर चली जांय। मेरे स्वप्न-सुमन

मुरझा जांय । और फिर पीछे हाथ मल मलकर पछताता रहूं । (चारों ओर देखकर) अहा कोई नहीं है । कोई इनका रक्षक नहीं है । इस समय ये अकेली ही झूलेका आनन्द लूट रही हैं ।

(सहेलियोंके सामने खड़ा हो जाता है, सब विस्मयसे उसकी ओर ताकने लगती हैं । वह शीघ्रतासे अनन्तमतीको गोदीमें उठाकर विमान पर जाता है । सहेलियां भय-विह्वल हो भाग खड़ी होती हैं)

कुंडलमंडित—(अनन्तमतीको देखकर) इसके रूपको देखकर तो ऐसा जान पड़ता है, जैसे सम्पूर्ण सृष्टिकी सुन्दरता इसीमें एकत्रित होगई है, लेकिन यह तो बेहोश पड़ी है । (शीतल जल छिड़ककर) सुन्दरी, एकबार मेरी ओर प्रेम दृष्टिसे देख लो, मैं सदैवको तुम्हारा हो जाऊँगा । तुम्हारी माधुरीने मुझे मोह लिया है । (उठते देखकर) कहो रानी तुम्हारा जी कैसा है ?

अनंतमती—(सामने देखकर—स्वगत) यह अवश्य कोई अविचार-गामी है । मुझे अबला समझकर अपनी पाशविक लालसाकी पूर्तिके लिए मुझे उठा ले जारहा है । यह नराधम जरूर मुझे बलात्कार अपने मोह-पाशमें बांधनेका उपाय करेगा । मुझे इससे सतर्क रहना चाहिए । (प्रकट) ।

भाई तुम कौन हो, मुझे कहां लेजा रहे हो ?

कुंडलमंडित—प्रिये, मैं तुम्हारी चपल चितवनोंका प्यासा आकुल पथिक हूँ, तुम्हारे प्रेमका दयनीय भिखारी हूं । सुन्दरी, मुझे जीवनदान दो ।

अनंतमती—कायर–मिथ्या प्रेमका राग आलापते तुम्हें शर्म नहीं आती ? यह प्रेम है या कुत्सित वासना ? दूसरेकी कन्याको एकान्तमें अकेली देख वलप्रयोग करना-क्या मर्दानगी है ? यदि तुझे प्रेम था तो मेरे मां-बापके पास क्यों नहीं गया ? तुझ जैसे तो गली गलीमें ठोकरे खाते हैं। मैं तेरी बहकी बहकी बातोंमें नहीं आसकती। भला इसीमें है कि मेरे प्रतीक्षा-व्याकुल मांबापके पास मुझे पहुंचा दे।

कुंडलमंडित—ओहो ऐसी बातें तो मेरी चिरपरिचित हैं। (दूसरे विमानमें अपनी पत्नीको आते देखकर) हाय यह तो यहां भी आ धमकी। अब क्या करूँ ? इससे कैसे पीछा छुड़ाऊँ ?

(विद्यावलसे अनन्तमतीको नीचे अरण्यमें छोडकर
पत्नीको लेकर लौट जाता है।)

(शंहनका निर्जन स्थान, अकेली शीला बैठी
भाग्य पर रो रही है।)

उजड़ गई मेरी फुलवारी।

कलिका पुष्प बिना रोती, लतिका द्रुम बिन बेचैन।
ठूंठ खड़े तरु पत्र हीन, रोते खगकुल विधि दैन॥
बिछुड़ गया हा माली मेरा, टूट गई फुलवारी।
रूठ गई पुरवैया मुझसे, सूखी दिलकी क्यारी॥
मेरी उजड़ गई फुलवारी।

हाय भाग्य ! तुझे किसने देखा है। तेरी लीला निराली है। स्वार्थने अपना साया बिछाकर सारी दुनियाको अन्धी बना दिया है।

मां देखो तुम्हारी शीला किस दुख-सागरमें पड़ी है। मैं निसहाय बाला कहां जाऊं? मांका घर नहीं जानती किस तरफ है। हाय ईश्वर! तू मुझे इस नश्वर दुनियासे उठाले।

(चौधरी रामभजनसिंहका प्रवेश)

रामभजनसिंह—सुन्दरी, तुम इस निर्जन मनहूस जगहमें बैठी बैठी क्या कर रही हो?

शीला—मैं आफतकी मारी परिवारकी बिछुड़ी हूं। मेरा अपना कोई नही है। अपने दुर्भाग्य पर आंसू बहा रही हूं। तूम कौन हो?

रामभजनसिंह—मैं तुम्हारा सच्चा प्रेमी। इतना अपनेको दुखी न बनाओ। मेरे घर चलो, मैं तुम्हें रानी बनाऊँगा। अपने-पनके भारसे दबा दूंगा। प्रेमकी कलकल सरितामें डूबो दूंगा। तुम सब कष्टोंको सदाके लिए भूल जाओगी।

शीला—चुप रहो, तुम्हें क्या हक है जो मुझसे ऐसी अश्लील बातें करते हो। मैं क्या वेश्या हूं जो पराए मर्दोंको प्रेमकी निगाहोंसे देखूं? मुझे तुम्हारी सहायताकी जरूरत नहीं। जाओ मैं ऐसी ही भली हूं। दुखोंसे डरकर क्या मैं अपने शीलको वेच दूंगी?

रामभजनसिंह—अच्छा, रस्सी जल गई पर ऐंठ न गई। विपृत्तियोंने भी अभीतक पीछा नहीं छोड़ा। शायद तुम स्वयं ही आपत्तिको बुला रही हो, तभी मेरी बातसे इनकार करती हो। लेकिन देखूं यहां तुम्हारी मदद करनेवाला कौन है?

शीला—बहादुरी इसीका नाम है। मैं तो तुम्हारी परीक्षा ले रही थी। तुम्हें देखकर तो मैं स्वयं ही मोहित हो गई थी। मेरा दिल

तो तुमने पहले ही छीन लिया। अब तो मैं तुम्हारी हूँ। कहीं तुम मुझे छोड़कर तो न चले जाओगे?

रामभजनसिंह—नहीं प्यारी, अब तो मैं तुम्हारा क्रीत-दास हो गया हूँ। तुम्हारे विना तो मैं एक क्षण भी नहीं रह सकता। मैं तुम्हें अपने घर ले जाऊँगा। बड़े सुखमें रक्खूँगा। अच्छा बताओ तुम यहां कैसे आ पहुँची? अपनी जीवन-कहानी सुनाकर मेरा सन्देह दूर करो।

शीला—मेरे पिताका देहांत हुए कोई १० वर्ष बीत गए। उनके बाद हमारा सारा धन चोरोंने चुरा लिया। हम पैसेको मुहताज हो गए। एक सेठने अपना फंदा फैलाया। धनके लालचमें मेरी मांने भला-बुरा कुछ न सोचा और बूढ़ेसे मेरा विवाह कर दिया। उसकी सूरत ऐसी भद्दी थी कि मैंने कभी उसे नजर भरकर भी नहीं देखा। वह मर गया तब उसके लड़के और पोतोंने मुझे बहुत तंग किया। आखिर मैं उनसे पीछा छुड़ाकर आ गई। अब भविष्यकी चिन्ता मुझे सता रही है।

रामभजनसिंह—अब चिन्ताको सदाके लिए काला-पानी भेज दो। आओ मेरे साथ स्वर्गीय आनंद लूटो। अच्छा, जरा एक गीत तो गादो।

शीला—प्रिय तुमने मुझे निहारा,
मैंने झट तन मन वारा।
तुम हो प्यारे इस जीवनमें मेरे एक सहारा,
प्रिय कैसा पाश पसारा॥

भूल गई मैं अपना सब कुछ ऐसा जादू मारा ।
प्रिय तुमने मुझे निहारा ॥

रामभजनसिंह—ओहो कैसी प्यारी प्यारी आवाज है। प्यारी प्यारी बांकी छवि और कानोंके परदे स्तब्ध करनेवाली सुरीली तान ॥ बस और क्या चाहिए इसके सिवा । लेकिन एक बात है ।

शीला—(आशंकासे) क्या ?

रामभजनसिंह—सुनो मैं तुम्हें दिलसे चाहता हूँ। किन्तु हमारी समाजको तुम जानती हो वह किसीको सुखी नहीं देख सकती । वह नहीं चाहती कि दुनियांमें कोई भी सन्तोषसे आनन्दपूर्वक जिन्दगी बिता सके । वह हमेशा दूसरोंके हर्ष-मार्ग पर कांटा बनकर आती है। इसलिए हमारा तुम्हारा साथ उसे फूटी आंखों भी न सुहावेगा ।

शीला—तो आपका अभिप्राय क्या है ? क्षणिक प्रेम-सुखके सरसब्ज बाग दिखाकर निराशाके अन्धकूपमें पटक देनेसे आपको क्या मिलेगा भला ? दुखियोंको सतानेसे क्या फायदा ?

रामभजनसिंह—इसीसे तो कहते हैं स्त्रियोंकी जाति ही मूर्ख होती है, नहीं समझती, तुम्हें छोड़कर मैं जीवित भी नहीं रह सकता। जिऊँगा तो तुम्हारे साथ और मरूँगा तो मरघट पर भी चलूँगा तुम्हारे साथ । तुम्हारी कसम तुमने न जाने क्या जादू कर दिया है कि छोड़ना तो दूर भुलानेका सपना भी नहीं देख सकता ।

शीला—तो फिर ऐसी बात क्यों कहते हो जिसमें मुझे चोट पहुँचे ।

रामभजनसिंह—नहीं वात कुछ और है। मैं यह कह रहा था कि यहां रहकर तो हम चैनकी वंशी बजा नहीं सकते। इसीलिए यहांसे सुदूर जाकर कहीं नई दुनियां वसाएं, वहां हम उन्मुक्त प्रेमकी तरंगोंमें निर्विघ्न गोता लगाएँगे।

शीला—धन्यवाद! यह सुनकर मैं बहुत प्रसन्न हुई। जहां तुम हो वहां जंगलमें भी मंगल हैं। दासी होकर रानी हूँ। प्रेमकी दुनियांमें सुख ही सुख है, दुःख नहीं।

रामभजनसिंह—अच्छा जरा मैं अपने घर हो आऊँ, कुछ धन वगैरह लेकर ही तो कहीं जांयगे। मैं यहांका चौधरी रामभजनसिंह हूँ, मेरे पास काफी वैभव है और इज्जत भी, मैं नेहरू रोड़पर रहता हूँ।

(शीलाका अकेले अकेले जी घबराना और चौधरीके घर पहुँचना)

शीला—(नौकरसे) जाओ जरा चौधरीजीसे कहना आपको कोई बुला रही है।

नौकर—इस वक्त वे नहीं आ सकते। स्नान-ध्यानका समय है। कृपाकर आप और किसी वक्त आइएगा।

शीला—नहीं मुझे एक बहुत जरूरी काम है। जाकर कहदो—शीलादेवी बुला रही है।

नौकर—अच्छा जाता हूँ।

शीला—(स्वगत) अच्छा उल्लू सीधा किया। इनका दर्शन भी बड़ी शुभ घड़ीमें हुआ था। काक-तालीय न्यायके समान ही मुझे मार्गमें बड़ी अनमोल निधि मिल गई। अब मेरे दुखके दिन गए। सुखके सुनहले दिन आए।

नौकर—(आकर) वे कहते हैं मैं शीलादेवीको नहीं जानता वे कौन हैं। उनसे कहना जहांसे आई हैं वहां चली जांय। यहां उसका कुछ काम नहीं।

शीला—(उदास होकर) अच्छा तो इस वक्त वे कर क्या रहे हैं ?

नौकर—स्नान करके अभी अभी पूजा-गृहमें गए हैं। उनको इधर उन्हें कई दिनोंसे फुरसत नहीं मिलती।

शीला—(कुछ सोचकर) अच्छा मैं जाती हूं।

(शीला वहीं जाकर धरती पर लेट जाती है। करीब एक घंटे बाद रामभजनसिंहका प्रवेश–)

रामभजनसिंह—(शीलाको झकझोरकर) क्यों रूठ गई हो क्या ?

शीला—(मुंह फेर कर) नहीं, जाओ मैं तुमसे नहीं बोलूंगी।

रामभजनसिंह—(विनम्रतासे) मेरा अपराध भी बतलाओगी या पहले ही सजा दे दोगी ? आखिर कुछ हुआ भी हो।

शीला—हूं, यह जाल किसी औरको दिखाना। मैं तुम्हारे घर गई थी बड़ी आशासे रानी बननेका चाव दिलमें संजोए और तुमने इस कदर मुझे ठुकरा दिया जैसे मैं उच्छिष्ट अन्न हूं या दूधकी मक्खी हूं।

रामभजनसिंह—(दीनतासे) नहीं सुन्दरी वह तो समय कुछ ऐसा टेढ़ा था कि मैं और कुछ कर ही नहीं सकता था। तुमसे यदि मैं कुछ मीठी बात कहता तो लोगोंको संदेह हो जाता और मेरे पर

जो बीतती उसकी याद करते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। प्रिये! मैं अपने परिवारका एक मात्र सहारा हूं। अपने मां-बापका इकलौता बेटा हूं। मुझ पर सबने बड़ी बड़ी आशाएं बांधी हैं। यदि वे मुझे पतित समझ लेते तो तिरस्कार तथा भर्त्सनाके साथ उनकी आन्तरिक वेदनाका चित्र मुझे व्यथित कर देता।

शीला—तो मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं हूं और परिवार तुम्हारे लिए सब कुछ, है न यही बात? तो फिर ऐसी मीठी मीठी बातोंमें लुभानेकी जरूरत क्या थी?

रामभजनसिंह—नहीं मेरा मतलब यह है कि मैं तुम्हें भी प्यार करता हूं। और परिवारको भी दु:ख नहीं देना चाहता। उससे यह मार्ग अधिक सुगम है कि हम दोनों परिवारकी आंखोंसे ओझल हो एक नई प्रेमकी दुनिया बसाएं जिसकी तुम रानी बनोगी और मैं राजा।

शीला—मैं खूब जानती हूं, पुरुष जातिके पास स्वार्थकी इतनी बड़ी इमारत दिलके पिंजरेमें कैद मिली है जिसका कभी अन्त नहीं हो सका। उनका जन्म ही भोलीभाली नारियोंका जीवन बरबाद करनेके लिए हुआ है। मैंने जीवनमें एक तुम्हींसे प्रेम किया है, यही प्रथम और अन्तिम है। लेकिन तुम्हारे दिलमें मुझे स्थान नहीं। जाओ अपने परिवारके साथ आरामकी जिन्दगी बिताओ।

रामभजनसिंह—क्यों जले पर नमक छिड़कती हो? तुमने आज तक किसीको सच्चे दिलसे प्यार नहीं किया है। यदि मेरा दिल खोलकर देखो तो उसमें सिर्फ तुम्हारी मोहक छवि है। मैं तुम्हारे

लिए अपना तन-मन-धन यहां तक कि सर्वस्व भी न्यौछावर कर सकता हूं। मेरी तरफ नजर उठाकर देखो, मैं तुम्हारा हूं।

शीला—इसका सबूत क्या है, दिखा सकते हो?

रामभजनसिंह—प्रमाण मांगती हो तुम देखो मैं चौधरी हूं। गांवका मुखिया हूं। मेरे पास वेशुमार दौलत है। और आज मैं तुम्हारे प्रेमके धागेमें खिंचता हुआ सबसे नाता तोड़ तुम्हारे द्वारका भिखारी हूं। इससे अधिक तुम और क्या चाहती हो? मैं तुम्हारे पसीनेकी जगह खूनकी नदियां बहा सकता हूं। तुम्हारे लिए दुनियाको सदाके लिए छोड़कर आया हूं। यदि तुम भी नफरतकी निगाहोंसे देखोगी, मुझे ठुकरा दोगी तो मैं यहीं जान दे दूंगा।

शीला—प्रियतम, तो चलो फिर देर क्यों? हम किसी दूसरे शहरमें चलें। जहां हमारी प्रेमधाराको रोकनेवाला कोई न हो, जहां हम स्वतन्त्रतासे जिन्दगीकी फर्माइशें पूरी कर सकें, जीवनका सच्चा आनन्द लूटा सकें।

शीला गा रही है—

छोटीसी नौका मेरी।

हम दोनों ही लगा रहे हैं, प्रेम नदीकी फेरी॥

मस्तीमें हम भीग रहे हैं, मानस फूल सजेरी।

एक नई दुनियाके हम तुम, चन्दा और चितेरी॥

अनन्तमती।

(स्थान—वन, चारों ओर हरी हरी लहलही घास बिछी है। एक पेड़के नीचे अनन्तमती बैठी है।)

अनन्तमती—

मेरे उरके करुणा निर्झरसे,
जग-सर सरसाए।
मानस प्रेम पराग बिखर कर,
मृदु सरसिज लहराए॥
पुलकित मनकी चावोंसे,
सीखें कलिकाएँ हँसना।
नव आशाओंसे सीखें,
सुरभित कुसुम विकसना॥
बाधा-गणकी अविजय-सा,
तम पावे देशनिकाला।
झर झर जीवन ज्योति,
विश्वमें भर दे प्राण उजाला॥

(स्वगत) लिलारकी रेखाके गर्भमें न जाने क्या क्या छिपा है? आजतक कौन उसे देख सका है? काश यह देख सकता? यही एक वह शक्ति है जो बड़े बड़े महारथियोंके अहंकारको धूलकी तरह उड़ा देती है।

आत्मत्याग ओहो कितना अगाध है इसका कार्यक्षेत्र! नहीं यह आत्माका त्याग नहीं आत्माका ज्ञान है। आत्मदान है। इस

पुस्तकको जो कोई एकबार आद्योपान्त पढ़ ले उसका सचमुच ही कायापलट होजाय।

(नेपथ्यमें भयंकर गर्जन)

(आशंकासे) महा वनराज-सिंहका आगमन हुआ है जिसकी वाणीकी झनकसे दुनियांके पैरों तलेसे पृथ्वी खिसक जाती है। जिसका भयानक रूप हजारोंको अधमरा कर देता है वही रक्त-भक्षी साक्षात् काल यहां आ पहुँचा है। देखो अच्छा यह क्या करता है।

(अनन्तमती सिंहको देखकर निर्भय हो वहीं बैठी रहती है। सिंह आश्चर्यसे उसकी ओर ताकता हुआ उसके पास आता है।)

अनन्तमती—(प्रेमसे) भैया डरो मत यहां आओ, मैं इस निर्जन वनमें अकेली पड़ी हूँ। आजसे तुम मेरे भाई हो। हम तुम दोनों साथ साथ खेला करेंगे। (सिंह आज्ञाकारी विनम्र सेवककी तरह खड़ा हो जाता है—अनन्तमती उसके सिरपर प्रेमसे हाथ फेरती है) अहा तुम्हारे इस भव्य सौंदर्यको इन मनुष्योंने कितना बदनाम कर रक्खा है। यदि तुम न होते तो संसारसे वीरत्वका नाम ही उठ जाता। अरे यह क्या तुम रोते हो, तुम वनराज हो तुम्हारी आंखोंमें आंसू क्यों? (सिंह कातर दृष्टिसे देखकर अपना हाथ उठाता है) अच्छा समझ गई तुम्हारा हाथ लोहु लुहान हुआ पड़ा है। ठहरो मैं तुम्हारा दर्द दूर करती हूँ।

(कहींसे एक लता उखाड़ लाती है। उसे पीसकर सिंहके हाथमें लगाकर पट्टी बांध देती है। सिंह कृतज्ञतासे सिर झुका लेता है।)

अनन्तमती—भाई अब तुम जाओ फिर कल इसी वक्त आना। कहीं तुम्हें मेरे पास देखकर कोई आगन्तुक भयभीत हो लौट जावे।

सिंह सिर झुकाकर चला जाता है।

अनन्तमती—(स्वगत) अहा प्रेममें कितनी शक्ति है? प्रेम अमोघ अस्त्र है। प्रेमका आकर्षण कितना मधुर और निष्कपट होता है। प्रेमकी मतवाली सुधा पीकर हिंसकसे हिंसक भी करुणार्द्र हो उठते हैं। प्रेम पत्थर-दिलको भी मोमकी तरह पिघला देता है। प्रेमकी शक्ति अपार है। अरे यह कौन सुन्दर जीव जान छोड़कर भागा आ रहा है?

(हिरण भयभीत दशामें आता है।) तुम इसतरह हांफ क्यों रहे हो वत्स? क्या तुम्हें पेट-भर खाना न मिलनेसे दुर्बलता आई है? जीवनका मोह तुम्हें प्रतिपल बेचैन कर रहा है। तुम बार बार पीछेकी ओर क्यों देखते हो? तुम्हारी आंखोंमें आंसू हैं मुखपर पीड़ाकी सघन घटा छाई है। आओ वत्स मेरी गोदीमें शान्तिलाभ करो।

(कुछ बालक बालिकाओंका प्रवेश।)

पहिला बालक—मैंने हिरणको इधर ही भागकर आते हुए देखा था।

दूसरा बालक—(सामनेकी ओर देखकर) देखो कोई स्वर्गकी देवी यहां मार्ग भूलकर आ बैठी है। इन्हें अवश्य मालूम होगा। चलो इनसे पूछ देखें।

तीसरी बालिका—हां हां ठीक कहते हो। और हरिण महाराज तो इन्हींकी गोदीमें दुबके पड़े हैं। अच्छा बच्चू अब भागकर कहां जाओगे। हम भी देखें तुम कितने चालाक हो?

पहला बालक—(अनन्तमतीके पास जाकर) हमारे हरिणको तुमने देखा है? लाओ हम उसीके पीछे सवेरेसे इधर उधर फिर रहे हैं।

अनन्तमती—(प्यारसे) भाई तुम हरिणका क्या करोगे?

दूसरा बालक—करेंगे क्या, भूनकर खाएंगे। भूखके मारे बुरा हाल होरहा है। दिनभर घूमते घूमते बीत गया। आज कोई शिकार हाथ न आया, बड़ी मुश्किलोंसे यह पल्ले पड़ा है।

अनन्तमती—लेकिन यह तुम्हारा हरिण तो नहीं है। यह मेरा है, मेरी गोदमें सोरहा है। जाओ तुम्हारा हरिण और कहीं होगा!

पहला बालक—वाह, उल्टा चोर कोटवालको डांटे, हमारी चीजको लेकर हमें ही छलना चाहती हो, हम इसीके लिए इतनी तकलीफें झेल रहे हैं। देखो अच्छा हमने इसके पैरमें एक तीर मारा था, उस जगहसे कैसा लाल खून निकल रहा है।

अनन्तमती—तुमने इसे मारनेका प्रयत्न किया था और मैंने जिलानेका, बताओ जीवनदाताका जीवन है या मृत्युदाताका?

बालिका—बहिनजी, हम अशिक्षित भील बालक आपकी पेचीदी बातोंको नहीं समझते। सीधीसी बात है हरिण हमारा है। हमारी निशानी भी है। आपका यह नहीं हो सकता। इसमें बहसका क्या काम? सीधेसे तो हमारे हवाले कीजिए।

अनन्तमती—मेरे भोले भाईयों, तुम नहीं जानते। तुम क्या किसी मरे हुएमें जान डाल सकते हो? यदि नहीं तो फिर उनको मारनेका हक तुम्हें नहीं मिल सकता। जो जिसको प्यार करता है वह उसे दण्ड भी दे सकता है और मेरे प्यारे भाई जब तुम्हें जरासा भी कांटा चुभ जाय तो कैसा दुःख होता है और तुम जब उन निरीह पशुओंको तीर मारकर हलाल कर देते हो तब उन्हें क्या दुख नहीं होता होगा? अपना जीवन किसे प्यारा नहीं होता? भाई जाओ मेरी गोदमें आए हुए हरिणको सिवाय यमके और कोई नहीं छीन सकता।

(सब आपसमें एक दूसरेकी ओर ताकते हैं)

भीलराजका प्रवेश।

भीलराज—(स्वगत) अहा! यह कौन सुन्दरी है? वनदेवी है, इन्द्राणी है या अप्सरा है? इसकी अद्वितीय छवि गन्धर्व बाला तथा सुरबालाको भी मात करती है। इस निर्जन भयानक अटवीमें यह मनोहर कुसुम क्यों कर आगया? मन धीरज रख, इतना उतावला क्यों हो रहा है? हाय हाय! तू तो बड़ा उंच्छृंखल होगया। न जाने कब मेरे अनजानमें ही बिना मुझसे पूंछे उस सुन्दरीके पास पहुँच गया? यह कैसा अद्भुत आकर्षण है। मैं जैसे बरबस उसकी ओर खिंचा जा रहा हूँ, रोकनेपर भी नहीं रुक सकता। चलूँ पूछूं तो यह कौन है?

(पास जाकर) देवी आप कौन हैं? इस बीहड़ भयानक जंगलमें आप क्यों कर आ पहुँचीं? आप इस मर्त्यलोकमें किस कारण आई हैं?

अनन्तमती—भैया मैं देवी नहीं हूं। इसी मनुष्य लोककी क्षुद्र बाला हूं। भाग्यके दृढ़ बन्धनोंमें बन्धकर इस एकाकी वनमें आ पहुँची हूँ। आप कौन हैं ?

भीलराज—मैं भीलराज हूं। यही जंगल मेरा घर है। वे बालक मेरे ही हैं। मैं यहां पर शिकार किया करता हूं। आपको देखकर हैरतमें पड़ गया हूं। यदि आपको कोई असुविधा न हो तो चलिये इस दासके घरको पवित्र कीजिए।

अनन्तमती—(कुछ सोच कर) नहीं मैं किसीके घरमें विघ्न बनकर रहना नहीं चाहती। मैं यहीं भली हूं। क्यों किसीको व्यर्थ कष्ट दूं? जो भाग्य मुझे यहां लाया है वही इससे छुटकारेका भी उपाय अवश्य बतावेगा।

भीलराज—नहीं सुन्दरी, मैं तुम्हें किसी प्रकारकी तकलीफ न होने दूंगा। ओफ़ कहां तुम्हारा सुकोमल शरीर और कहां यह कठोर धरती? तुम्हारे सुन्दर चरण इस पर चलनेसे कैसे विवर्ण हो गये हैं। चलो तुम कोमलांगिनी हो, यह भयंकर विपिन तुम्हारे रहने योग्य नहीं है। यहां दिन रात खूंखार रक्त पिपासु पशु घूमा करते हैं। चलो प्रिये, मैं तुम्हें रानी बनाकर आरामसे रक्खूंगा.........

अनन्तमती—(बात काट कर) चुप रहो, मेरा शरीर कोमल हो सकता है पर मेरा दिल पत्थरसे भी कठोर वज्रसे भी अधिक दृढ़ और सूर्यकी भांति प्रभामय है। मैं तेरी गीदड़ धमकियोंसे भय नहीं खाती। जान पड़ता है तुम भारतीय नारियोंके सतीत्वसे बिल्कुल अपरिचित हो। तुम जंगलमें जंगली जानवरोंके बीच पले हो। तुम्हारे चारों ओरका वातावरण असभ्य पतित और दूषित रहा है। इसीसे

ऐसी कलुषित याचना करते हो। जाओ मैं तुम्हारे घरमें दूराचारिणी बनकर सुखोपभोग करनेकी अपेक्षा पशुओंका भक्ष्य बनना ज्यादा पसन्द करती हूं। अबसे कभी ऐसी बात न कहना।

भीलराज—(उपहाससे) ओहो तुम मुझे काहिल समझती हो! अरे जो भीलराज हजारों मांसभक्षी जीवोंको सीना खोलकर मुकाबिला करता है, जो विपत्तियोंके साएमें इतना बड़ा हुआ है वह तुम्हारी बातोंसे डर जायगा? ऐसी आशा स्वप्नमें भी न करना। अब या तो मेरी बात सहर्ष स्वीकार कर मुझे प्रेमसे अपनाकर मेरे घर चलो नहीं तो हठवादिनी बनकर जानसे हाथ धोओ।

अनन्तमती—(शान्तिसे) मैं मौतसे नहीं डरती। आपदाओंके समुद्रमें गिराकर देखलो, दुर्भाग्य-पर्वतकी शृंखलाएं पृथ्वी पर गिराकर चाहे मेरा नामनिशान मिटा दें पर फिर भी अपने कर्त्तव्यसे हरगिज विमुख नहीं हो सकती। शील ही नारीका शृंगार है। शील ही नारीका धन है। चाहे तू ही नहीं सारी दुनियां एकमत होकर मुझे व्रतभंग करनेको प्रेरित करे और बदलेमें अखिल विश्वका एकच्छत्र सम्राट् बननेका लोभ दिखाए फिर भी मैं विचलित नहीं हो सकती इसलिए जाओ मुझे तुमसे दुश्मनी नहीं। मैं तुम्हारी शुभाकांक्षिणी हूं और तुम्हें सलाह देती हूं कि मुझे तंग न करो।

भीलराज—मैं जानता हूं "त्रिया चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं, देवो न जानाति कुतो मनुष्यः।" किन्हीं किन्हीं विषयोंमें स्त्रियोंकी ना, ना, का अर्थ होता है हां, हां। (भीलोंकी ओर देखकर) चलो इन्हें उठाकर डेरे पर ले चलो। क्या देखते हो, मेरी आज्ञा नहीं मानोगे?

(भील निर्वाक् हो एक दूसरेकी तरफ देखते हैं।)

भीलराज—(क्रोधमें) क्यों तुम सब कपूत हो? एक औरतसे भय खाते हो? क्या तुम निर्बल हो, भीरु हो, कायर हो? क्या इनमेंसे एक भी बहादुर ऐसा नहीं है जो मेरे हुक्मका अक्षरशः पालन कर सकें?

भील—(विनयपूर्वक) महाराज आपकी आज्ञा शिर आंखों पर है। पर हममेंसे किसीको भी यह साहस नहीं होता जो उस देवीको स्पर्श कर सके।

भीलराज—तो तुम सब नामर्द हो। अच्छा, मैं स्वयं इसे ले जाता हूं।

(आगे बढ़ता है कि अनन्तमतीका तेज देखकर सहम जाता है। फिर हारकर उसे एक दवा सुंघाकर बेहोशीमें गोदीमें उठाकर ले जाता है।)

(लखनऊका अमीनाबाद, चारों ओर कोलाहलकी गूंज, एक कमरेमें चौधरी रामभजनसिंह और शीलाका प्रेमालाप।)

शीला गा रही है—

तुम बीनके तार बनो प्रियतम बन, जाऊंगी मोहित रागिनी मैं।
पीयूष सदन तुम इन्दु बनो बस, आकुल बनूं निहारिनी मैं॥
तुम देव बनो मम अंतरके, बनूं प्रेम चकोरी पुजारिनी मैं।
तुम योगी बनो प्रिय प्रेमके मुग्ध, बनूंगी वियोगी विरागिनी मैं॥
पावस घन नाथ बनो उमड़ो, घुमड़ो बन जाऊंगी दामिनी मैं।
तुम प्रात अरुण शुचि ज्योति बनो, बन जाऊंगी उषाकी चातुरी मैं॥

तुम चन्द्रकला बनकर छिटको, उसके रजकी बनूंगी माधुरी मैं।
तुम स्वामी बनो मेरे अंतरके, तेरे दिलकी बनूंगी स्वामिनी मैं॥

रामभजनसिंह—प्रिये! तुम स्वर्गसे जीवनका मधुर सन्देश लिए मेरे लिए प्रेमकी मदिर प्यालीमें हर्षका नशा उढेल रही हो। मैं पीता रहा हूं और फिर भी पीता रहा हूं। मेरी अतृप्ति बढ़ती ही जाती है। प्यारी, न जाने तुम्हारे सौन्दर्यमें कैसा मतवालापन है कि मैं तुम्हें देखते ही सारी सुधि बुधि भूलकर तुम्हारा हो जाता हूं।

(शीला चुप रहती है)

रामभजनसिंह—क्यों तुम मौन क्यों हो? क्या तुम प्रेमकी निराली चाल पर विश्वास नहीं रखतीं?

शीला—यदि उस पर अविश्वास रखती तो क्या तुम्हारे साथ पागल-बन भाग आती? यही तो हम नारियोंकी प्रकृति है कि जिस पर प्रेम करती हैं उस पर अपनेको कुर्बान कर देती हैं। प्रेमकी दीपक-ज्योतिपर शलभकी तरह अपना जीवन वार देती है। पर स्वार्थी मनुष्य दीपककी तरह जीवित रहता है। उसकी दृष्टिमें शलभके प्राणोंका मूल्य कौड़ीसे भी कम कीमती है। पुरुष जाति पर विश्वास करना स्त्रियोंका जन्म गत स्वभाव है। लेकिन यही उसकी सबसे विशाल भूल है। इसीलिए उसे पद पदपर पश्चात्ताप करना पड़ता है, ठोकरें खानी पड़ती हैं और लांछित होना पड़ता है वह अलग।

रामभजनसिंह—प्रिये! तुम इतनी उदास क्यों हो मेरे किसी व्यवहारने तुम्हें अवश्य मानसिक पीड़ा भेंट दी है; तभी तुम्हारा दिल

व्याकुल हो रहा है। माफ करो। मैं तुम्हें दिलसे चाहता हूँ। तुम्हारी यह उदासी मुझे फूटी आंखों भी नहीं सुहाती।

शीला—हां मनमें और, वचनमें और करे कुछ और, यह स्वार्थी मनुष्योंका स्वभाव ही है। तुम ऊपरसे तो बहुत मीठी मीठी जी लुभानेवाली बातें करते हो और दिलमें मुझसे साफ नफरत करते हो। मैं तुम्हारे इस रूप विरूपको खूब परखती हूँ।

रामभजनसिंह—आखिर सुनूं भी तो, तुम आज जली-भुनी क्यों हो? बताओ तुम्हें किस वस्तुकी जरूरत है? तुम जो चाहो वह अभी करके दिखा दूँ। तुम्हारी शपथ खाकर कहता हूँ यदि तुम मेरा शिर भी चाहो तो तुम्हारे लिए वह भी दे सकता हूँ।

शीला—हां जान देनेकी धमकी देना जितना सरल है सचमुचमें जीवन देना उतना ही जटिल है। देखो, रूपवतीके पास कैसी बढ़िया बढ़िया कीमती साड़ियां हैं। और ललिताके पास एकसे एक जड़ाऊ बहुमूल्य आभूषण हैं। और मेरे पास क्या है? यहां तो गहनोंके नामपर सोने-हीरेकी सूरत भी दुर्लभ है। इसीका नाम प्रेम है। इसी सबूतपर तुम सच्चे प्रेमी होनेका दावा करते हो? लानत है तुम्हारे इस बनावटी प्रेमपर।

रामभजनसिंह—(हंसकर) ओह! सिर्फ एक यही कमी तुम्हारे दिल पर तीरकी तरह घाव कर रही है? प्रिये तुम प्रेमका रहस्य क्या समझो? मैंने तुमसे प्रेम किया है, अपना तन-मन-धन जीवन सर्वस्व सब तुम्हारे चरणोंपर न्यौछावर कर दिया है। मैं समझता था कि प्रेमकी तुलनामें इन तुच्छ आभूषणोंकी क्या कीमत? लेकिन यदि

तुम चाहती हो तो मैं सोलह आने तैयार हूं। ठहरो मैं यहीं बुलाकर लाता हूं फ़ेरीवालेको।

(बाहर जाता है और फेरीवालेको बुला लाता है।)

लो अब तुम्हें जो गहना चाहिए ले लो, साड़ियां भी खरीद लो। ईश्वरके लिए पैसोंका मोह मत करना। तुम निश्चिन्त होकर इच्छित वस्तु लेलो। मूल्य मुझसे ले लेना।

शीला—(हार देखकर) क्योंजी यह हार कितनेका है और यह नेकलेस? क्यों क्या तुम्हारे पास कोई नए फैशनके इयरिंग नहीं हैं? दिखाओ तो!

फेरीवाला—बहुजी, यह हार ३ हजारका है। जड़ाऊ है। नेकलेसमें सच्चे हीरे जड़े हैं, इसकी कीमत कमसे कम ८ हजारकी है। देखिए ये इयरिंग एकदम नए काटके हैं। मैं तो पुराना सामान रखता ही नहीं, देखलो एकसे एक सुन्दर चीजें हैं।

शीला—अच्छा ये तीनों चीजें मैं लेती हूं किन्तु दाम तो तुम बहुत अधिक बता रहे हो। सब मिलाकर १० हजारमें देना हो तो देदो।

फेरीवाला—बहूजी इसमें हमें तनिक भी गुंजाइश नहीं है। दाम एक कौड़ी भी कम नहीं हो सकता। आप तो घरमें बैठी हैं जरा बाहर निकल कर देखिए, क्या आफत मची है? सभी चीजोंके दाम चौगुने हो गए हैं बल्कि इससे भी कहीं अधिक।

शीला—नहीं नहीं मैं १० हजारसे अधिक न दूंगी। चाहो तो अपनी चीजें फेर लो मुझे नहीं चाहिए।

रामभजनसिंह—ले भी लो ! तुमसे कह दिया कि कीमतकी परवाह न करो। जो चीज पसन्द हो वह चाहे जितने दामकी हो लेलो (फेरीवालेसे) लो ११ हजार नेकलेस और हारके, ४ सौ इयरिंगके। एक अंगूठी और दिखाना। (अंगूठी पसन्द कर शीलासे) लो यह मेरी तरफसे तुम्हें भेंट है। (फेरीवालेसे) चलो अच्छा अब मैं साड़ीवालेको और बुलाऊँ। (जाना)

शीलाकी सहेली मालतीका प्रवेश।

मालती—सखी आज तो तुम्हारा सौन्दर्य निखर उठा है। ये गहने तुमने कब खरीदे ?

शीला–(गर्वमें झूमकर) अभी अभी तो वह फेरीवाला गया है। मैंने कहा था न कि मैं यदि चाहूं तो एकसे एक कीमती मनोहर अलंकार खरीद सकती हूं। मेरे कहने भरकी देर है। मेरे मुखसे निकला कि बस चीज हाजिर हुई। आज मैंने जरा यह कह दिया कि मेरे पास एक भी कीमती गहना नहीं है। बस फिर क्या था उसी समय ये बुला लाए।

मालती—इनका दाम क्या होगा भला ?

शीला—ये क्या ऐसी वैसी चीज है ? इन सबके दाम १५ हजारसे कम नहीं हैं।

मालती—(चकित होकर) अच्छा, १५ हजार। तुम्हारे स्वामी तुम्हें बहुत प्यार करते हैं। मुझे तो कहते वर्षों गुजर गए, एक चीज भी लेकर नहीं दी। तुम वास्तवमें बड़ी सौभाग्य शालिनी हो।

शीला—(उपेक्षासे) तुम तो १५ हजारकी ही कह रही हो,

उन्होंने तो अपना सर्वस्व मुझे दे डाला है। एक बात कहूं लेकिन वह किसीसे कहना मत।

मालती—लो मेरा भी विश्वास नहीं? मैं तुम्हारी बात किसीसे कहने क्यों जाऊँगी भला? क्या मुझे पागल कुत्तेने काटा है? तुम्हारी सौगन्ध बताओ।

शीला—देखो इन्होंने मेरे वास्ते कितना त्याग किया है। ये सीतागांवके चौधरी हैं। जातिमें इनकी बहुत इज्जत है। ईश्वरकी दयासे रुपये पैसेकी भी कमी नहीं। घरमें नवयुवती सुन्दर वधू है। फिर भी मेरे रूप और प्रेमपर मुग्ध होकर सबको छोड़ बैठे हैं। दिनरात आठों प्रहर मेरी ही धुन है। वे कभी कभी स्वप्नमें मेरा नाम लेकर पुकारने लगते हैं। इनके प्रेमने मुझे अपना ही कर लिया है। सखी अब वे आते ही होंगे, किसी साड़ीवालेको बुलाने गए हैं।

(रामभजनका साड़ीवालेको साथ लेकर आना)

मालती—(घूँघट निकालकर) सखी, अब मैं जाती हूँ। मुन्नी रो रही होगी। (जाना)

रामभजन—इनके पास सुन्दर साड़ियां हैं जितनी तुम्हें लेनी हो छांट लो।

(शीला ३ साड़ियां पसन्द करती है)

शीला—इनकी क्या कीमत होगी जी?

रामभजन—तुमसे बार बार कह दिया, कीमतसे तुम्हें क्या मतलब? तुमने पसन्द कर ली? ले जाओ, दाम मैं चुकता कर दूंगा।

(दाम लेकर साड़ीवाला जाता है।)

रामभजन—कहो अब तो प्रसन्न हुई तुम ? और कहो तुम्हें क्या आवश्यकता है ? अभी सब चीजें ला दूँ।

शीला—तुम भी गजब करते हो। २० हजारका सामान तो ले लिया और क्या अशर्फियोंका महल चिनवाऊँगी, क्या मुझे अपना घर दिखता नहीं ?

रामभजनसिंह—(हँसकर) प्रिये तो अब मेरे कहनेसे सब गहने पहिन तो लो। और यह धानी रंगकी साड़ी तुम्हें बहुत खिलेगी।

शीला—(पहनते हुए) अब मालूम हुआ कि तुम वास्तवमें मुझे प्यार करते हो। (एक नयन शर छोड़ती हुई) मैं भी तुम्हें दिलोजानसे चाहती हूँ।

रामभजनसिंह—(मुस्कुराकर) अच्छा प्यारी, अब तुम कोकिल कण्ठसे मधुर प्रेम-गीत और सुनादो।

शीला गाती है, और नाचती है।

मैं हूँ, तुम हो, यही स्वर्ग है यही मोक्ष है प्यारे।
हम दो ही बस प्रेम-गगनके मुग्ध सितारे॥
प्यासी आंखें देख रही हैं प्रियतम तुमको।
इस मोहक छवि पर देती हूँ मैं जीवनको॥

रामभजनसिंह—हां हां और.........

मेरे मानस गृहमें हो दिन रात विचरते।
हम तुम दोनों सदा प्रेमका विनमय करते॥
तुम कहते हो, मैं सुनती हूँ प्रेम कहानी।
तुम हो राजा प्रेमलोकके मैं हूँ रानी॥

तुम दीवाने हो जीवन धन, मैं दीवानी।
प्रेम अमर है और मदभरी अमर जवानी॥

रामभजनसिंह—वाह वाह! कैसा मधुर गान है। प्रेम अमर है और अमर मदभरी जवानी। तुम्हारा रूप तुम्हारा स्वर तुम्हारा दिल तुम्हारा प्रेम सब चूमने योग्य है। सब मिलकर मेरे लिए आनन्द भवनका निर्माण करती है। प्रिये, हम तुम धन्य हैं और धन्य है हमारा अपूर्व प्रेम।

(भीलराज का शयनागार। लताओंसे उलझे पल्लव द्वार, रात्रिकी भयानक निस्तब्धता। अनन्तमती अकेली विचारमग्न बैठी है।)

अनन्तमती—प्रकृति कितनी लावण्यमयी है। फिर भी इस प्रकृति-राजके दिलमें मेरा क्षुद्र नारीरूप जाने क्यों समा गया है? क्या ये हंसमुख मृदुल कमनीय कुसुम मेरेसे कम आकर्षक हैं? क्या ये भोली अर्द्ध विकसित कलिकाएँ मुझसे कम सुन्दरी हैं? क्या इन वनवोढ़ा यौवनवती प्रेममयी लतिकाओंसे भी मैं रूपवती और नवयौवना हूं? नहीं कहां मेरा तुच्छ मानवीय रूप व कहां स्वर्गीय लावण्य। किन्तु मानव मन तो उन्मत्त है पागल है। मानव निरंकुश है स्वेच्छाचारी है। क्या इसका यह मतलब नहीं है कि नारी अबला बनी है, पुरुषोंके पाशविक अत्याचारोंको बिना चूँ चपड़ किए गूँगी बहरी और अन्धी बनकर सह लेती है। क्या कारण है कि पुरुषोंका दिल इतना नाजुक इतना स्वच्छन्द इतना मतवाला है? मैं भी देखती हूं कि नारीकी आत्मशक्तिके सामने पुरुष रूपका यह दानवी बल कब तक ठहर सकता है?

अनन्तमती।

पहली बालिका—(आकर) बाईजी चलो, खाना खा लीजिए आप कलकी भूखी हैं। क्षुधाकी वेदनासे आपका मुख दुर्बल होगया है।

दूसरी बालिका—तुम्हें तकलीफ उठानेकी जरूरत नहीं, बाईजी मैं तुम्हारे लिए यहीं खाना ले आई हूं। इस पागलकी बातोंमें मत पड़ो, जल्दीसे उठो हाथ-मुँह धोकर खाना खा लो।

अनन्तमती—(ममता दिखाकर) मेरी बहन, मुझे भूख नहीं लगी है। आज कुछ मेरे पेटमें खराबी है। इसे ले जाओ। जब भूख होगी आप मांग लूंगी।

बालिका—(उदास होकर) मैं बड़ी आशासे यह लाई हूं। यदि तुम नहीं खाओगी तो मैं भी नहीं खाऊँगी और दिनभर रोती रहूंगी।

अनन्तमती—चल पगली कहींकी। मैं कोई मेहमान बनकर तेरे घर थोड़े ही आई हूँ। मैं तो तेरी बड़ी बहिन हूं। रंज नहीं कर।

बालिका—(उदास मुख होकर चुप खड़ी रहती है)

अनन्तमती—(हंसकर) ले रूठ गई! अच्छा मैं तेरी बात मान कर थोड़ासा खा लेती हूं। बावली तेरी प्रेमभरी बातें खाकर तो पेट भर गया। अब खाना कहां रक्खूं।

(नेपथ्यमें सिंहगर्जन)

सब बालक बालिकाएं पत्तोंकी ओटमें छिप जाती हैं।

अनन्तमति—(पहचानकर) आओ भाई, तुम्हारा हाथ कैसा है (देखकर), बिल्कुल अच्छा हो गया। यह दवा ही ऐसी है कि

चाहे जैसा अचूक घाव हो एक दिनमें भर कर आराम कर देती है। भैया तुम यहां कैसे आगए? अपनी बहिनको बहुत प्यार करते तुम?

सिंह—(मूक वाणीमें) मैं तुम्हें ढूंढ़ता ढूंढ़ता यहां आ पहुंचा हूं। बड़ी चालाक हो तुम, मुझसे छिपकर यहां भाग आई। तुमने मुझे जीवनदान दिया है और बहिनका स्नेहदान भी। मैं तुम्हें कैसे भूल सकता था?

(सहसा एक तीर आकर सिंहकी आंखमें लगता है। वह जब-
तक संभले कि दूसरा तीर उसके हृदयको चिर देता है।
सिंह जमीनपर गिरकर छटपटाता है।

अनन्तमती—(आश्चर्यसे) हाय यह कौन दुश्मन है जिसने मेरे प्यारे निरपराध भाईकी हत्या की है।

भीलराजका प्रवेश।

भीलराज—मर गया वह खूंखार जानवर! अच्छा हुआ तुम्हारी जान बच गई। नहींतो बस तुम्हारे साथ मेरी लाश श्मसान पर पहुंचती।

अनन्तमती—तो क्या तुमने ही निष्कारण मेरे धर्म-बंधुकी हत्या की है?

भीलराज—तुम्हारे भाई? क्या कहती हो तुम यह तो सिंह है! जानका ग्राहक!

अनन्तमती—नहीं यही मेरा प्यारा भैया है। तुम नहीं समझ सकते। मेरी दृष्टिमें यह सिंह तुमसे कहीं उत्तम है। तुम मनुष्य होकर धोखेसे एक भोले पशुकी जान लेते हो? छिः यह मनुष्यताकी दिव्य प्रेमकी सुखद शिक्षा तुम इस मूक पशुसे लो।

भीलराज—(लज्जित हो सिंहकी ओर देखकर) मर गया, अब इसमें जरा भी जान नहीं है। ओ शकट ! जाओ इस लाशको बाहर ले जाओ ।

नौकर—(आकर) जो आज्ञा ।

भीलराज—(बच्चोंकी ओर संकेत कर) जाओ तुम्हारी मां बुला रही हैं (सब जाते हैं) (अनन्तमतीसे) सुन्दरी ! तुम जानती हो तुम्हे यहां लानेका मेरा प्रयोजन क्या है ?

अनन्तमती—(शंकित चित्तसे) नहीं ।

भीलराज—तो सुनो, मैं तुम्हें अपनी रानी बनानेको लाया हूं। तुम्हारी इस अनिंद्य रूप राशिको देख कर पागल होगया हूँ। तुम्हारे प्रेमकी कामना मुझे जला रही है। जरा पास आजाओ। अधरों पर उन्मत प्रेमकी सुरा ढाल दो प्रिये; मेरे जीवनके अरमान पूर्ण करो।

अनन्तमती—अपनी इस नापाक जबानसे पवित्र प्रेमको क्यों कलंकित करते हो ? प्रेम तो मनुष्यताके पर्वतसे बहनेवाला स्वच्छ निर्झर है न कि तालाबका पंकिल जल। वासनाने तुम्हारे ज्ञान अन्धे कर दिए हैं, तुम नहीं जानते यह वासना सांपका फण है जिसे हाथ रखते ही जीवन और मृत्युमें द्वन्द होने लगता है। सावधान! इसे न छेड़ना नहीं तो फिर पश्चातापकी प्रलय अग्निमें तुम्हें झुलसना पड़े।

भीलराज—प्रिये तुम्हारा यह उपदेश मन्दिरोंमें ईश्वरका नाम लेलेकर झुकनेवाले भक्तोंके लिए है। जिनके जीवनमें कभी प्रेमका सरस प्रवाह नहीं आता। प्रेमकी वीणामें तन्मय होना हम भी जानते हैं। प्यारी तुम्हें देखकर यह दिग्विजयी मन्मथ अपने पंच बाणोंसे मुझे

घायल कर रहा है। क्या तुम्हें मुझपर दया नहीं आती? नहीं तुम्हारा दिल इतना निष्ठुर कदापि नहीं होसकता।

अनन्तमती—(शान्तिसे) भाई, क्यों व्यर्थ अपनेको अविचार-पंथी बनाते हो। विवेक और सद्ज्ञान रूपी सारथीको जरा सचेत तो करो जिससे तुम्हारा मनरूपी घोड़ा तुम्हारे वशमें हो सके। भाई इच्छाएँ तो सभीके मनमें होती हैं, लेकिन उन इच्छाओंके अधीन होना इन्द्रियोंकी गुलामी करना तो कमजोरी है दुर्बलता है। कामना कभी पूर्ण नहीं होती। वासनाकी उमड़ती तृष्णा कभी तृप्त नहीं हो सकती। फिर क्यों तुम उसके हाथों वेमोल बिके जा रहे हो?

भीलराज—मुझसे तुम्हारी ये नीरस बातें नहीं सुनी जाती। नारीकी अपरिमित सौन्दर्य-राशिके समक्ष धर्म तथा कर्त्तव्यका कागज-भवन शीघ्र ही उड़ जाता है। स्त्रीके हृदयमें एक ऐसी प्रेमकी ज्योति है जो पुरुषोंको अपनी ओर सहज आकर्षित कर लेती है। प्रिये कहां तुम्हारा रसभरा मादक सौन्दर्य और कहां ये मनहूस बातें। आओ देर न करो, मुझको अपने हृदयमें स्थान दो। मैं दीन हीन व्यक्ति तुमसे विनय करता हूं। इतनी कठोर न बनो। प्रेमकी सरितामें मेरे साथ हँसकर जल केलि करो।

अनन्तमती—स्त्री स्नेहमयी होती है लेकिन उसके दिलमें माताकी निस्वार्थ ममता बहिनका मधुर स्नेह और पतीके विमलप्रेमकी धाराएँ बहती हैं। वह वासनाकी आंधीमें अपनेको निशक्त और निसहाय बनाकर नहीं बहती, बल्कि उसका मुकाबिला करती है। वह अपनी कामनाओंको दमन करती है, लालसाओंको दबाती है न कि तुम लोगों जैसा अत्याचार करती है। आज तकभी स्त्रीको पुरुषसे

प्रेम-याचना करते देखा है? धिक्कार है तुम्हें जो क्षणिक रूप सौन्दर्यको देखकर अपनेको भूल जाते हो। कर्त्तव्या-कर्त्तव्यको कालेपानी भेज देते हो। तुम लोग नीच कुत्तोंकी तरह हो जो मरघटमें पड़ी लाशोंको चाट चाटकर आनंदित होते हैं तुम........... ।

भीलराज—बस बस उपदेशिकाजी, अपना भाषण समाप्त कीजिए। मैंने भी दुनियां देखी है। सीधी तरह मेरा अनुरोध मान लो नहीं तो विवश होकर मुझे बलात्कार अपनाना पड़ेगा। मैं तुझे अपनी रानी बनाए बिना हरगिज हरगिज चैन न लूँगा।

अनन्तमती—मैं समझती हूँ आजतक तुमने किसी सती साध्वीको नहीं देखा है। मैं तेरे प्रस्तावको जीते जी नहीं मान सकती। हम वीरांगना हैं मौतसे नहीं डरती। मैं डंकेकी चोट दावेसे कहती हूँ कि चाहे तू मेरे शरीरके टुकड़े कर डाल, मुझे कोल्हूमें पेला दे फांसीपर लटका दे पर जबतक मुझमें दम है कभी तेरी कुत्सित मनोवृत्तिको पूर्ण नहीं कर सकती। हां बहिनके नाते यदि तू चाहे तो तेरे लिए सर्वस्व भी चढ़ा सकती हूँ।

भीलराज—मैं भी देखता हूँ कि इस समय मेरे दृढ़ हाथोंसे कौन तेरा उद्धार करता है?

(आगे बढ़नेको पैर उठाता है कि नैपथ्यमें भयानक आवाज होती है।)

भीलराज चकित होकर देखता है इतनेमें एक दिव्य-मूर्तिवाली तपस्विनीका प्रवेश! उनके तेजको देखते ही भीलराज थर थर कांपने लगता है।

तपस्विनी—(मधुर स्वरमें) पुत्री! तू संसारकी स्त्रियोंमें नारीरत्न

है । नारी समाजकी वंदनीय विभूति है । तेरा साहस अकथनीय है । मैं तेरी दृढ़ता तथा निर्भयताको वधाई देती हूँ । तुझ जैसी कन्याएं ही भारतका भाल गर्वसे ऊँचा उठाती हैं । वेटी अव तू किसी तरहका भय मतकर । (भीलराज) क्यों रे मूर्ख तू नहीं जानता ब्रह्मचर्यकी अद्भुत शक्तिके सामने देवता भी हार मानते हैं । प्राण जानेपर भी अपने प्रणको निभाती हैं रे नीच, तू अपनी पाशविक इच्छाकी एक सती साध्वी पर वलात्कार करते तुम्हें शर्म नहीं आती ? आजसे तुमने अपने लिए महानरकका द्वार निष्कंटक कर लिया । तुम नहीं जानते एक सती स्त्रीकी क्रोध भरी नजर हजारों स्वर्गोंको रौरव वना सकती हैं ।

देवी जानेको तैयार होती है कि भीलराज उनके चरणों पर गिर जाता है ।

भीलराज—(गद्गद् स्वरसे) देवी, मेरा उद्धार अव कैसे होगा ? सचमुच ही मुझसे अक्षम्य अपराध हो गया है । मेरे जीवनकी यह प्रथम भूल हिमालयसे भी कहीं अधिक विशाल काय है । मैं परि-तापकी भीषण ज्वालामें भस्मसात हुआ जारहा हूँ, मां किसी तरहसे मुझे उवारलो । क्या मुझे क्षमा न मिलेगी देवी–(रोने लगता है)

देवी—(करुणाद्रहो) पुत्र ! पश्चाताप एक ऐसी अग्नि है जो गहनसे गहन पापोंको अक्षम्य अपराधके भारको निर्मल और पुष्प जैसा वना देती है ! पतितको पावन और अधमको पूज्य वनानेकी क्षमता सच्चे परितापमें हैं । यदि तुम वास्तवमें अपने इस कृत्य पर घृणा करते हो, तुम्हारा दिल इस ओरसे विल्कुल स्वच्छ हो गया है तो घवराओ मत तुम्हारे पापका सव मल धुल गया । लेकिन मैं क्षमा

करनेवाली कौन हूँ ? इसी देवीसे क्षमा मांगो मैं जाती हूँ। मुझे और भी जरूरी काम हैं। (जाती है।)

भीलराज—अनन्तमतीके पैरों पर शिर रखनेकी चेष्टा करता है। वह वीचमें ही अपने पैर हटा लेती है।

अनन्तमती—(नेहसे) भाई, मेरी दृष्टिमें तुम जैसे पहले प्रिय थे, वैसे ही अब हो। मेरे मनमें किसी तरहकी दुर्भावनाएं या नफरत तुम्हारे लिए नहीं है। मुझ बालिकाके तुच्छ पैरों पर गिरकर क्यों मुझे लज्जित करते हो ? तुम मेरे बड़े भाई हो। आजसे मैं तुम्हारी वहिन हुई। देखो अपनी यह स्नेह-स्मृति भूल न जाना। (धोतीमेंसे कुछ तागे निकालकर) भैया, मेरे कोई भाई नहीं है। आजसे मैं तुमको पाकर धन्य हुई। मैं जानती हूँ कि आज जो मुझे देखकर तुम्हारे वासनासे दुषित भाव हुए वे भी मेरे सौभाग्यसे ही। ईश्वरने तुम्हें सुवुद्धि दी और मुझे प्यारे भाईकी देन मिली। आओ भाई मुझे सप्रेम अपनाओ। और अपूर्व भ्रातृस्नेहसे मेरे हृदयमें सुख सरिता वहाओ। यह राखी हम दोनोंकी पवित्र वन्धनकी लौह सांकल है। आजसे मैं तुम्हारी वहिन हूं।

भीलराज—वहिन, तुमसी वहनको पाकर मैं कृतार्थ हुआ। तुम्हारी राखीका यह निर्मल तार मेरे मानसमें विमल-प्रेमका स्रोत वहादें। तुम जितनी दृढ़ प्रणवती हो वीरहृदया हो उतनी ही उदार हो। देवी आज तुमने अपने दर्शनसे मेरे चिर संचित पापोंको धो डाला है। आजसे मेरा नया जन्म हुआ है। उमरमें बड़ा होनेपर भी मैं तुमसे वहुत छोटा हूँ। तुम मेरी गुरु आनी हो। अब निसंकोच होकर कहो मैं तुम्हें किसतरह प्रसन्न कर सकता हूं।

अनन्तमती—भाई, तुम्हें भाई रूपमें पाकर मैं अपने सब दुखोंको भूल गई हूं, किन्तु तुम जानते हो मां बाप मेरे दर्शनके बिना जलरहित मछलीकी तरह तड़फ रहे होंगे। मैं उनकी इकलौती कन्या हूं। वे मुझे अपनी जानसे भी अधिक प्यार करते हैं। मैं स्वयं उनको देख-नेके लिए व्याकुल होरही हूं। उनकी याद मुझे हरदम सताती रहती है। इसलिए भाई, तुम मुझे मां बापके पास पहुंचा दो वहीं मैं पूर्ण सुखी और प्रसन्न रह सकती हूं।

भीलराज—ठीक है मैं शीघ्र ही तुम्हारे जानेका प्रबंध करता हूं।

(बाहर जाता है। सेठजीको लेकर फिर आता है।)

भीलराज—देखो, ये एक सम्भ्रान्त प्रतिष्ठित कुलके व्यक्ति हैं इनपर मुझे पूर्ण विश्वास है, ये तुम्हें सकुशल घर पहुंचा देंगे। लेकिन बहन, तुम मुझसे बिछुड़ रही हो। फिर जाने कब मिलोगी। बहन अपने इस अधम भाईको कभी कभी याद कर लेना।

अनन्तमती—नहीं भैया, तुम क्या भूलनेकी चीज हो? तुम्हारा पवित्र स्नेह और यह सुखद ग्राम्य जीवन मैं कभी नहीं भूल सकती। विदा। देखें भाग्य कब मिलाता है!

× × ×

लखनऊका एक सादा कच्चा मकान। सामने कूड़ेका अम्बार कोनेमें पड़ा है। मक्खियां भिनभिना रही हैं थूक सड़ रहा है। कहीं बच्चोंका टट्टी पेशाब पड़ा है। शीला अकेली बैठी है। मुखपर उदासीका चिह्न है।

शीला—(गा रही है)

वेदना पथकी पथिक मैं।

आह पीड़ा भारसे बेबश, बनी अतिशय श्रमित मैं॥
अश्रुमालाएँ सजाकर, व्यथा पुष्प बिखिर आली।
गान ले निश्वासका, शोभित चली ले हृदय थाली॥
चिर व्यथाकी अग्निमें, जलता हुआ सर्वस्व देकर।
जीर्ण वीणाके स्वरोंकी, नाशक पीड़ाएँ उठाकर॥
मृतक आशा और अरमानोंकी, अब धूनी रमाकर।
पासमें कुछ भी नहीं, अवशेष हाथोंसे चली हूं॥
जारही हूं उसी पथ पर, शत्रुके जिसके पली हूं।
कौन जाने पूर्ण कबतक, पर चलूँगी अन्त तक मैं॥

मेरी आशोंकी दुनिया उजड़ गई। मेरे अरमानोंको निराशाकी वड़वानल सुखा चुकी। मैं क्या थी क्या हो गई। ओफ़ नारी हृदय! बलिहारी है तेरी? सदियोंसे आपत्तियों तथा पराधीनताके शिकंजोंमें कैद रहकर भी अपनी प्रकृति न भूल सकी। तू कितना भोला है रे! पुरुष जाति युगसे हम नारियोंके स्नेहल-उदारता पर धोखे और स्वार्थ ताने बाने बुन रही है। हाय इन छलिया पुरुषोंका क्या विश्वास किन्तु स्वच्छ निष्कपट नारी दिल तूने क्यों इन्हें विश्वस्त और सच्चा हितैषी समझ लिया है? क्यों इनके अनुदार निष्ठुर और स्वार्थी चरणों पर सर्वस्व निसार बैठा है तू।

हाय! आशाओ तुम्हारी धुंधली झांकी जितनी मधुर होती है और तुम्हारी मृत्यु? ओह! वह तो मौतका रूप है। तूने ही मुझे छले रक्खा है। रे दुर्भाग्य! तूने अरमानोंकी वाटिका ही क्यों लगाई? क्या तूने अपने पृष्ठोंको खोलकर भी देखा था एकबार हाय! (गाती है)

वेदना मैंने कमाई ।
क्यों न हंस उसे भोगूं, बन्द्कर अपनी रुलाई ॥
जब मुझे मालूम था,
आशा न मेरी फल सकेगी ।
यह अजब अरमान सरिता,
अब न आगे चल सकेगी ।
व्यर्थ बांधा भार क्यों, क्यों चाह अपने संग लाई ।
विश्वमें विखरा हुआ है,
तुमुल तम काली अमाका
क्या कभी मैं निरख लूंगी,
वह उजेला पूर्णिमाका ।
हाय बन अनजान मैंने, ज्योति जीवनकी जलाई ॥

(चन्द्रकलाका प्रवेश)

चन्द्रकला—बहिन, तुम्हारे ऊपर कौनसा कष्ट आ पड़ा है? तुम्हारे मुखसे उष्ण निश्वासें क्यों निकल रही हैं? तुम्हारा यह दर्द-भरा रोना मुझसे नहीं सुना जाता। वहन, कहो क्या दुख है? मैं भरसक उसे दूर करनेका प्रयत्न करूंगी।

शीला—वहन, मेरे दुखड़ेको सुनकर ही क्या करोगी? मैं समाजकी रूढ़ियोंकी शिकार, भाग्यहीन अनाथ बाला हूँ। मेरे जीवनमें सदासे अमावस्याकी अंधियाली रही है। दुख है तो यह कि फिर भी मेरे दिलमें उमंगों और चाहोंका जन्म क्यों कर हुआ—वहन, मेरी कहानी दुख भरी है। मुझसे नहीं कही जाती, हाय क्या कहूं? (आंसू छलछला आते हैं)

चन्द्रकला—(धोतीके आंचलसे उसके आंसू पोंछती हुई) बहन, इतनी अधीर न बनो, परमात्मा सब भला करेगा। जिन भाग्यने तुम्हें वेदनाभरी रातोंमें रुलाया है वही भाग्य एक न एक दिन अवश्य आनंद और उल्लास भरे दिनोंमें तुम्हें हंसावेगा। कहो मैं तुम्हारी सगी बहनके समान हूं। मुझसे कुछ न छिपाओ सखी।

शीला गाती है—सुनो—

आह है इस जीवनकी जान।
निश्वासोंमें भरा हुआ हैं, मेरा वीणा गान॥
चुप रहने दो जिद न करो, छेड़ो मत उक सीतान।
उसमें भरे बिलखते रोते, व्यथा भरे अरमान॥
रो दोगी तुम सिसकेगा यह, सारा शून्य जहान।
प्रलय मचेगी कहीं बज उठे, यदि ये पीड़ा गान॥
मुझे इसीमें ही खुलने दो, होने दो अवसान।
लाई थी लेजाऊँगी, विधिका अमूल्य वरदान॥

चन्द्रकला—अच्छा, तुम तो विदुषी जान पड़ती हो, तुम कवियित्री भी हो। तुमने कविता करना कैसे सीखा?

शीला—बहन, तुम मुझे ठीक तरहसे नहीं समझी। मैं न विदुषी हूं न कवियित्री। यह कविता नहीं है। मेरे बिलखते हृदयका उद्गार है, मेरे आंसुओंका सजीव चित्र है, दिलकी उमड़ती वेदनाओंकी परिभाषा है। मैं परिवारकी ठुकराई हूँ। आशाओंके भवनमें आग लगनेसे मेरे दिलमें वेदनाका धुँआ भर उठा है। मेरा दम ऊब उठा है। सखी, यह सुन्दर विश्व मेरे लिए नहीं है। मेरे लिए पातालका रौरव ही समुचित है।

चन्द्रकला—कहो कहो बहन, मेरी उत्सुकता और न बढ़ाओ, तुम्हारी कहानी सुननेके लिए मेरा मन व्यग्र है।

शीला—मेरे माता पिताने पूर्वजन्मका बैर निकालनेके लिए मेरे यौवनको अधमरे बुढ़ापेको समर्पित कर दिया। वह मेरा साथ न निभा सका और असमयमें काल कवलित बना। उसके बेटेपोतोंने मुझे तिरस्कृत कर घरसे निकाल दिया। एक युवकने सहज ही मुझे आकर्षित किया। अनेकों हवाई महल दिखाकर वह मुझे यहां ले आया। करीब १५ दिन हुए वह मेरे सब वस्त्रालंकार तथा नगद रुपये लेकर चलता बना। सखी, यह रूप और यह उभरती जवानी मेरे लिए अभिषाप बन रही है। समझमें नहीं आता क्या करूँ? क्या सचमुच ही इन स्वार्थी पुरुषोंकी नशीली चक्कीमें मुझे पिसना पड़ेगा?

चन्द्रकला—सखी, घबराओ मत। यहां अकेली क्या करोगी, चलो मेरे घर। मैं तुम्हें अपनी सगी बहनसे अधिक मानूंगी। तुम्हें कोई तकलीफ न दूँगी।

शीला—यहां भी तो मुझे एक नीच पुरुष अपनी शारिरिक क्षुधा पूर्तिके लिए लाया है। चलो आगे विधाताकी मर्जी, इस वक्तसे उससे छुटकारा मिले। शांतिकी सांस ले सकूं मैं।

(सेठजीका आमोद भवन। रंगीन दीवारों पर राष्ट्रीय नेताओं तथा धर्मवीरोंके चित्रपट सजे हैं। फर्श पर सुन्दर गलीचा बिछा है। एक ओर करीनेसे तकिये लगे हैं। अनन्तमती भविष्यके सुनहले स्वप्न देख रही है।)

अनन्तमती—(स्वगत) अहा! मैं अपनी प्यारी मांके गले

लगकर सारा दुख भूल जाऊँगी। सरोजनी माधुरी मेरी प्रतीक्षामें होंगी। मुझे देखकर वे कितनी प्रसन्न होंगी। ईश्वरको शतशः धन्यवाद है जिसने मुझे आत्मबल दिया। ये सुन्दर दिन दिखाए। चिर विरहके पश्चात् मधुर-मिलन कितना हर्ष भरा होता है! पिपासाकुल आंखें अपने स्नेहियोंको देखकर तृप्त हो जाएंगी। प्यारी मां, रोओ मत। मैं आरही हूं। अपने दर्शनसे तुम्हारे सब घावोंको भर दूंगी।

सेठजीका प्रवेश।

अनन्तमती—(उठकर सविनय) पिताजी, आप कब चलेंगे? मात पिताके दर्शनके लिए मैं तरस रही हूं। उनकी स्मृतिमें मुझे रातभर निद्रादेवीकी गालियां सुननी पड़ी हैं। मैं जल्दी ही घर जाना चाहती हूं।

सेठजी—यदि मैं तुम्हें घर न जाने दूं तो तुम क्या करोगी? इस समय तुम मेरे घर हो। क्या मेरे अनुरोधसे कुछ दिन यहां न रहोगी बेटी?

अनन्तमती—पिताजी, वह भी आपका घर है और यह भी। मेरे लिए दोनों समान हैं लेकिन मेरे मां बाप विरहमें शोकाकुल होंगे। मेरी सहेलियां मेरी प्रतीक्षा कररही होंगी। मैं आपको अपने पितासे बढ़कर समझती हूं। अपनी पुत्रीकी इस बेबशी पर आपको अवश्य करुणा आयगी।

सेठजी—सुन्दरी, मैं तुम्हें अवश्य भेज देता किन्तु मेरा मन गवाही नहीं देता। असल बात तो यह है कि तुम्हारी रूप माधुरीको देख मेरा दिल तुम्हारा हो गया है और चाहता है कि तुम्हें कहीं

अपनेसे दूर न जाने दूं, तुम्हें दिलके सिंहासन पर बिठा कर रक्खूं। तुम......

अनन्तमती—(विस्मयसे) पिताजी, आप यह क्या कह रहे हैं, मैं आपकी पुत्री हूं। मुझसे ऐसे बचन कहना सर्वथा अनुचित और अनधिकार पूर्ण हैं। क्या आज आपने भंग पीली है या शराबका नशा दिमागमें रंग जमा रहा है? कृपया आप यहांसे चले जाइए।

सेठजी—सुन्दरी, इस दिल पर तुम्हारा ही मोहक चित्र है। इस दिमाग पर एक मात्र तुम्हारे ही लावण्यका नशा रंग ला रहा है। मैं तुम्हारे रूप-यौवन पर अपना सर्वस्व लुटा सकता हूं। प्रिये, मां-बापके पास जानेका स्वप्न त्यागो। इस घरको ही अपना घर मानो। तुम्हारे एक इशारे पर मैं अपनी संचित विपुल विभूति न्योच्छावर कर सकता हूं।

अनन्तमती—(रोशसे) सेठजी, मैं नहीं जानती थी कि आप छिपे रुस्तम होंगे। मैं तो आपको एक भद्र पुरुष समझती थी। आप सफेद पोश बदमाश है। मुख पर मिश्री, शरीर पर पवित्रता लेकिन दिल बिल्कुल इससे विपरित काले कीचड़से भरा है। नीतिकारने ठीक कहा है—

दुर्जनः प्रियवादी च, नैतविश्वासकारणं।
मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे, हृदि हालाहलं विषम्॥

आप तो "विषकुम्भं पयोमुखम्" के समान हैं। छिः, लज्जाको तिलाञ्जलि देकर आप बगुलेकी भांति तपस्वी बनकर भोलीभाली नारियोंके रूप यौवनको लूटनेकी साधना करते हैं। धिक्कार है

आपकी इस नीच मनोवृत्तिको जिसने आपके ज्ञान और विवेकको एक क्षणमें मिटा डाला। .....

सेठजी—(स्वगत) क्या सचमुच मैंने कोई सर्पिणीको जगाया है? इनके गोरे गोरे मुखड़े पर साहसकी लालिमा! कैसी भयावनी है! क्या? मैं इसे पुत्री बनाकर लाया था? नहीं बिल्कुल असम्भव। यह सुन्दरी मेरी पुत्री नहीं, मेरी स्वामिनी होने योग्य है। छिः मन! तू इतना बेसुध क्यों हो रहा है? कान कहां हैं वे धर्मके गूढ़ रहस्य जो नित्य प्रभुमूर्तिके समक्ष सुना करते थे। आंखों क्या इस रूप मदिराको तुम पी लेना चाहती हो? नहीं। बताओ उन धर्मशास्त्रोंके अक्षरोंमें तुमने क्या देखा है? क्या विश्वकी समस्त सुन्दरताओंको नाजायज़ी हकसे हड़प लेनेका विधान है उसमें कहीं? जीभ, तुम भी अपने उन स्तुति वाक्योंको दुहराओ। उन पवित्र शब्दोंको बोलो। उन मधुर-भक्ति गीतोंको गाओ जिनका एक एक शब्द विमल सुधासे ओत-प्रोत है। यह क्या? कोई मेरा साथ नहीं देती। तुम सब कहते हो हम निर्दन हैं। जो लेते हैं, अपने लिए नही? मनको देते हैं। हाय मन! क्या तुमने सब भुला दिया? इतने दिनोंका सब किया कराया स्वाहा हो गया? इस नारीकी मोहिनी शक्ति मुझे बलात् आकर्षित कर रही है? नहीं नहीं! मुझसे न होगा, यह मेरी है। मेरे प्रेम-संसारकी रानी है। (प्रकट) सुन्दरी! तुम चाहे जो कहो, तुम्हारे मुखसे निकला प्रत्येक शब्द मेरे लिए संगीत जैसा प्रिय है। चाहे दुतकारो चाहे प्यार करो। लेकिन मेरी बनकर रहो। तुम.........।

अनन्तमती—(आवेशमें क्रोध पूर्वक) चुप रहो, अपनी जबानको म्यानमें रखो। तुम रंगीले स्यारकी तरह सुन्दरी स्त्रियोंके घातमें रहते

हो लेकिन सावधान ! इस सुन्दरतामें कांटे जड़े हैं। इस मदमाते यौवनमें गम्भीरता है। इस लावण्यमें पवित्रता है। यह वासना विलासिताके ऊपर बिकनेवाली नहीं है। आपकी यह अटूट सम्पत्ति मेरे लिए धूलसे भी तुच्छ है। और यही क्या, समस्त दुनियाकी एकत्रित अतुल रत्नराशिको मैं ठोकर मारती हूँ। सेठजी संभलिए, इस अन्धकूपमें गिरनेसे बचिए। भीलराजसे क्या यही वादा किया था तूने ? वह तो नीच वृत्ति करनेवाला था। असभ्य जंगली था। धर्म-शास्त्रके नामपर उसे काला अक्षर भैंस बराबर था लेकिन तुम तो धर्मात्मापनेका स्वांग भरते हो। तुम तो सभ्यताकी डींगें हांकते हो। तुम क्यों इस वासनाके चंगुलमें फँस गए ? लेकिन आप मुझे धोखा नहीं दे सकते। मैं वह सिंहनी हूँ जो अपने जीवन धनके लुट जानेपर कराल कालसे भी अधिक भयंकर होती है, मेरा जीवनधन मेरा प्रियतम, मेरा सब कुछ मेरा शील है। जहां तूने उस पर आघात करनेको हाथ उठाया कि मैं मौत बनकर तुझपर टूट पड़ूंगी। तू मेरे मृतक शरीरपर चाहे जो सितम ढा सकता है पर मेरे जीतेजी मेरी एक सांसके रहने तक भी तू अपनी कुत्सित अभिलाषाको पूर्ण नहीं कर सकता।

दासीका प्रवेश।

सेठजी, कामसेना आई है आपको याद करती है।

(सेठजीका जाना)

अनन्तमती—बहन, यह कामसेना कौन है ?

दासी—यह शहरकी मशहूर सौन्दर्यमयी वेश्या है। अपने रूप जालमें हजारोंके वारे न्यारे करती है। बड़े बड़े रईसजादे बड़े बड़े धर्मात्मा इसके इशारों पर नाचते हैं।

अनन्तमती—तुम बता सकोगी, यह वेश्या यहां किस लिए आती है। मुझसे कुछ न छिपाना, मैं किसीसे न कहूँगी।

दासी—क्या कहूँ बहिनजी, सेठजी भी कुछ दिनोंसे उसके कुटिल कटाक्षोंके शिकार हो चुके हैं। वह यहां मौके वेमौके इनके मन बहलावको आ जाती है। बहिनजी, मेरी जान आपके हाथ है यदि सेठजीको मालूम हो जाय तो मेरी खैर नहीं।

अनन्तमती—चुप चुप, सेठजी आरहे हैं।

दासी दूसरे दरवाजेसे जाती है। सेठजी कामसेनाको लेकर आते हैं।

कामसेना—पुत्री, तू यहांसे अपने मां बापके पास जाना चाहती है। मैं उन्हें अच्छी तरहसे जानती हूं। उन्होंने ही मुझे भेजा है। चल मैं तुझे तेरे घर पहुँचादूं।

अनन्तमती—(स्वगत) क्या दासी मिथ्या कह रही थी? यह वेश्या नहीं है क्या? नहीं इसका सौन्दर्य और इसका कृत्रिम शृँगार साफ कह रहा है कि यह रंडी है। यह सब मुझे बहकानेकी चाल है। किन्तु एक नारीको मैं अवश्य प्रभावित कर सकती हूं। स्त्रीके पास स्त्रीको अधिक खतरेकी संभावना नहीं हो सकती।

कामसेना—बेटी, तू क्या सोच रही है, मुझ पर विश्वास रख। मैं कदापि तुझे धोखा नहीं दे सकती। तेरी हर्ष-वाटिका पुनः हरी-भरी होगी, तेरे बिछड़े मां बाप तुझे मिलेंगे। क्या तू इस प्रस्तावको नापसन्द करती है?

अनन्तमती—नहीं माताजी, मैं अवश्य चलूंगी । अपने आशा-चनको उजड़ते देखनेकी अपेक्षा उसे जीवित बनाए रखना कहीं उत्तम है । आपको देखकर मेरे दिलमें हर्षका सागर उमड़ा पड़ता है । ओफ् मेरी प्यारी मां बिलखती होगी । मैं चलूंगी, अवश्य चलूंगी । यहां पर एक मिनट भी मुझे युगसा प्रतीत होता है । प्रिय-मिलनकी आशा निराशासे अधिक सुखद और मधुर है । चलिए ।

(मलाईलाल और बर्फीमल नाचते हुए आते हैं ।)

बर्फीमल—हां दोस्त, कहो तो फिर क्या हुआ ?

मलाईलाल—उस दिन बीबीका सुनहरा डोग मेरी प्यारी चपूतीको मार गया । मुझे जो गुस्सा चढ़ा सो धीरसे मोरकी पंखीसे एक थप्पड़ उसे मारा बस फिर क्या था ? मशीनगन छूट पड़ी, तोपें बरसने लगीं । उन ब्यूटीफुल अपटूडेट रीतिसे ऐसी ऐसी बातें कहीं कि सुनकर मेरा हिरण सारी चौकड़ी भूल गया ।

बर्फीमल—तो क्या तुमने हिरण भी पाल रक्खे हैं ?

मलाईलाल—दिमागको उड़न खटोलेपर स्वप्न देशकी सैरको भेज दिया है क्या तुमने ? अरे बुद्धू, उनकी सोनेकी डिबियामें बन्द गालोंके जड़ाऊ गहनोंने मेरे होशहवास हमारे स्वर्गगामी बुजुर्गोंको सौंप दिये ।

बर्फीमल—फिर तुमने भी प्रतिशोध लिया होगा जी भरकर ?

मलाईलाल—अजी रामका नाम लो, कहांका बदला, वहां तो लेडीजी उसी वक्त मुझे घसीटती हुई ले चली अदालतमें । मैंने बहु-

तेरे हाथ पैर जोड़े, उसके सुकोमल चरणों पर बार बार सिर धुना, जमीन पर पचास बार नाक रगड़ी, पूरी चारसौ बैठक लगाई, फिर भी उसका दिल न खिला, लानत है ऐसी जेन्टिलमेनी पर।

वर्फीमल—भला अदालत जाकर यह क्या करती?

मलाईलाल—तुम अभी कलके छोकरे हो। अरे बाल तो हो गए सफेद। दांत अन्तिम विदा लेने आगए फिर भी अभी छुछुंदरपन नहीं गया। अदालतमें वह मुझपर तलाकका दावा करती।

वर्फीमल—क्यों भाई जान, यह तलाक क्या बला है?

मलाईलाल—देखोजी, अब तुम्हें सारी दिलकी किताब खोलकर बतलानी पड़ेगी तब तुम्हारे बालोंमें जूं काटेगी। तुम जानते हो यह नया जमाना है, नई रोशनी है। नए रीति रिवाज हैं, पहले जो पुरुष अपनी स्त्रीको नहीं चाहता था, वह उसे निकाल देता था तो स्त्रियोंने भी मिलकर इसका बदला लेनेका उपाय सोचा। आखिर उन्होंने तलाककी प्रथा चलाई। अब वे अपने पतिके विरुद्ध स्नेह-हीनताके प्रमाण उपस्थित कर तलाकका दावा दायर कर सकती हैं।

वर्फीमल—तुम्हारे विरुद्ध उसने क्या प्रमाण पेश किए?

मलाईलाल—उसने कहा कि जो शख्स अपनी बीबीके कुत्तेको प्यार नहीं करता वह कभी अपनी पत्नीको प्यार नहीं कर सकता। तुम नहीं जानते न्यू अप-टू-डेट लेडियोंके पति उनके प्यारे डोगकी बराबरी नहीं कर सकते। डोग महाशय उनके साथ मोटरमें बैठकर सैर करते हैं। कुर्सी पर बैठकर माल उड़ाते हैं। गोदीमें बैठकर स्नेह

चुम्बन लेते हैं और रातको मालकिनके साथ मुलायम गद्दों पर सुखकी नींद सोते हैं। उधर पतिदेव बगलें झांकते फिरते हैं उनसे उसे क्या मतलब ?

(जेन्टिलमैनके ड्रेसमें मस्तरामजीका प्रवेश।)

मलाईमल और बर्फीमल—गुडमोर्निंग मैडम।

मस्तराम—(हंसते हंसते पेट फुलाकर) अरे आज क्या बहुत भंग पी ली है तुमने या अपनी बीबीका ख्वाब देख रहे हो ?

बर्फीमल—(हाथ जोड़कर) हमसे कुछ असभ्यताका काम हो गया है ?

मलाईलाल—(कांपकर) मैडम साहिबा, आज्ञा कीजिए।

मस्तराम—अरे आज क्या सनक सवार हुई है तुम्हें। मैं हूं पुरुष, तुम्हारा प्यारा पुराना दोस्त मस्तराम ? क्यों मजाककी कीचड़ उछाड़ रहे हो मुझ पर ?

बर्फीमल—खूब धोखा खाया आज। वाह मिस्टर, आज खूब स्वांग रचा तुमने। तुम्हारी सूझको खुले दिलसे दाद देता हूं भाई।

मलाईलाल—आज यह क्या बला पल्ले पड़ी ? तुममें और लेडीमें कुछ अन्तर है क्या ? बालोंमें बंगाल हेयर तेलकी खुशबू आरही है, टेड़ी तो बहुत ही बफ रही है तुम्हें और मुख पर क्रीम ऐसी चुपड़ ली है कि बस मेम साहबका गोरांग चेहरा फिदा हो जाय। आज तुमने यह क्या स्वांग बनाया है भला !

मस्तराम—तुम दोनों तो नई दुनियासे बिल्कुल अनजान हो, तुम्हें क्या बताऊं ? आज मेरे दोस्त मि० चौपटानंद और ढंमोडानंद ठीक कह रहे थे। ऐसे आदमियोंके दिमाग पर बैठ कर गधे घास चरा करते हो ?

बर्फीमल—ये तो क्या, हमारा दिमाग घास पैदा करनेवाली जमीन है।

मलाईलाल—देखो मियां, अबकी वार तुम्हारी जान बख्शी जाती है। और अगर अबकी वार तुमने ऐसी बेपरकी बात कही तो देखते हो इस गुलाबके फूलकी डंडीसे हजार डंडे लगाऊंगा और तब तुम्हारी जीभको बन्दर उड़ा ले जायगे !

मस्तराम—क्षमा क्षमा, जनाब विश्वेश्वर महाराज ! तो अब आपकी क्या आज्ञा होती है ? क्या मैं शिरकी बातें करूं, क्योंकि वे पैरकी बातोंसे तुम्हें ईर्ष्या होती है और तुम्हारे पैर ठीक मूसल हैं ये पैर नहीं !

बर्फीमल—नहीं मानोंगे ? अपनी जबान बंद करो ! नहीं तो...

मलाईलाल—सीधे काला पानीकी सजा होगी ! और हजार शंख महामंडल रुपयोंका जुर्माना और अगर तुम यह न दे सको तो दया करके तुम्हें जानवर बनाकर दानापानी चरनेको दिया जायगा।

मस्तराम—अच्छा तो तुम्हारी आज्ञा है। जबान पर ताला लगाऊं अलीगढ़का या लाहौरी या ठेठ गुजराती ! ठहरो, अभी पत्र लिखकर २५) वाला सर्वश्रेष्ठ तालेका आर्डर देता हूं। हां, और जरा बढ़ईको बुलाकर जीभ-घरके दरवाजे होठों पर सांकल कुण्डी

लगवाता हूं। मैं किसी भी तरह अपने जिगरी दोस्तोंको नाराज करना नहीं चाहता।

वर्फीमल—अच्छा, तुम्हारे भोलेपन और आज्ञा पालनको देख-कर तुम्हें क्षमादान दिया जाता है। क्यों भाई मल्लू ?

मलाईलाल—क्योंजी, क्या तुम्हारी भी शामत आई है जो मुझे मल्लू कह कर पुकारा। अच्छा तो मस्तरामजी, हम तुम्हे दोस्त समझ कर माफ करते हैं। लेकिन तुम्हें इस पापका कठोर प्रायश्चित्त करना पड़ेगा, नहीं तो हमारा तो कुछ हर्ज नहीं, तुम्हें ही उस जन्ममें दुख सहन करने पड़ेंगे। देखो चार दिन गोमुत्र पीकर रहो, छह दिन गोवर खाकर, दस दिन गायका भुस खाकर। हां इतना अवश्य याद रक्खो। इस वीस दिनों तक रोज जानवरकी तरह रेंगकर मेरे पास आना और २५ वार नाक रगड़ रगड़कर मुझे साष्टांग प्रणाम करना नहीं तो सारा तप व्यर्थ जाएगा। समझ गए न ?

मस्तराम—अच्छा, जो सरकारकी आज्ञा। सुनो एक मझेदार बात जिसे कहने मैं यहां तक दौड़ा आ रहा हूं। आज सवेरे मेरे एक बहुत प्रिय दोस्त मेरे घर आए। वे मेरी पत्नीसे मिलना चाहते थे। जैसे ही वे उनके कमरेमें गए कि पत्नी जो मुखको डेढ़ गज लम्बे घूंघटसे ढ़क दिवालसे सटकर खड़ी हो गई। हमारे मित्र उनसे कुछ कहनेवाले ही थे कि वे कबकी नौ दो ग्यारह हो गई। मित्र महोदयने मुझे सब वातें सुनाई तब मुझ पर सैतान स्वार हो गया। मैंने उसके बाल जकड़ कर घसीटते हुए बाहर निकाल दिया और भीतरसे सांकल लगाली।

मलाईलाल—अरे अरे ! यह तुमने क्या अनर्थ कर डाला ?

मस्तराम—अनर्थ ! यूं कहो जीवन सुधार लिया। ऐसे जान-वरोंको पालनेसे क्या फायदा ? रोज मैं उससे तंग था। मुझे उसने भौंकनेवाला कुत्ता समझ लिया है या उल्लू ? कुछ सुनती ही नहीं थी वह। अच्छा हुआ बला टली।

वर्फीमल—लेकिन श्रीमतीजीकी क्या दशा हुई होगी ?

मस्तराम—भला क्या कहूं उसकी वेशरमीको, भूखी दिन भर दरवाजे पर ही बैठी रही। अभी उसे चार लात जमाकर सड़क पर खदेड़ आया हूं।

वर्फीमल—अब घर कब ले जाओगे उन्हें—

मस्तराम—घर ले जायगी मेरी बला। मेरी बात क्यों नहीं मानती थी वह ? मैंने भी खूब मजा चखाया। खूब याद रक्खेगी जीवनभर। ऐसोंकी यही उपयुक्त मजा है।

(एक गोरांग युवतीका प्रवेश। सिरपर हैट, पैरोंमें बूट, गर्म फ्राक, आंखोंमें ऐनक, हाथमें रिस्ट वॉच।)

मलाईलालकी ओर देखकर, अच्छा यहां घोंसलेमें आकर छिपे हो मिस्टर ! चलो। घर चलकर बताऊँगी फक्कड़पनेका मजा।

मलाईलाल—(हाथ जोड़कर) अपराध क्षमा हो।

युवती—(मस्तरामसे) गुडमोर्निंग डियर (हाथ मिलाती है) और कपोलोंपर एक स्नेह-चुम्बन अंकित कर देती है।

मस्तराम—गुडमौर्निंग डार्लिंग, आज तुम इधर कैसे निकल पड़ीं ?

युवती—(मलाईलालकी ओर इशारा कर) मैं इसके नौकरको खोजने निकली थी बदमाश घर नहीं चलता। मुफ्तकी रोटियां खाता है। मस्तरामके कन्धेपर हाथ रख-चलो डियर, यहां इन मूर्खोंकी चपल चौकड़ीमें कहांसे आ भटके। जानेदो उसे जहन्नुममें। चलो, इन जंगली लंगूरोंकी मजलिसमें क्यों समय गवावे।

(दोनों हँसते हँसते जाते हैं)

मलाईलाल—सर्वनाश होगया। पतिके सामने यह निर्लज्जता! आज तो वह तलाकका खुला अल्टीमेटम दे गई। एक स्त्रीके द्वारा पुरुषका यह अपमान?

बर्फीमल—अजी बस रहनेदो अपनी मर्दानगी। जब बीबीजी यहां बाइस्कोपकी रीलें दिखानेमें मशगूल थी तब आप भीगी बिल्ली बने अपने तहखानेमें बन्द थे। मैं तो तब जानता जब उसे भी सबक सिखा देते।

मलाईलाल—भाई, अपने मुँह मियामिट्ठू मत बनो। ऐसी स्त्रीसे तो परमात्मा बचावे। चलो, जान बची लाखों पाए। किसी तरह पीछा तो छूटा। ऊँह, मेरा क्या बिगड़ गया? मैं अभी दूसरी शादी कर लूँगा। क्या वह गई तो मेरा भाग्य ले गई?

बर्फीमल—चाहे जो हो, तुम्हारी मर्दानगी पर गहरी चपत तो जमा गई? और देख लो यह है स्त्रियोंकी स्वतंत्रताका फल।

नेपथ्यमें गान।

धर्म गया फिर कलयुग आया, भाई नहीं है भाईका।
कान दबाकर रहना लोगों, घरमें राज लुगाईका॥

ककड़ीमल—(आकर) तुम लोग कौन हो आदमी या स्त्री?

वर्फीमल—(हंसकर) मियां क्या ख्वाब देख रहे हो?

ककड़ीमल—भाई क्या बताऊं। मेरी तो अक्ल गुम हो रही है। मेरे लड़केकी बहू कलसे गायब है। पानी भरने कुएपर गई थी तबसे उसका पता नहीं है।

मलाईलाल—उसे घर पर कोई तकलीफ तो नहीं थी?

ककड़ीमल—तुम भी क्या बात करते हो। स्त्रियोंको तो प्राण जाते घरमें ही रहना चाहिए। माना कि उसका पति वेश्यागामी होनेसे भयंकर बीमारियोंका शिकार होकर नामर्द हो गया था। यह भी माना कि उसे सास ससुर तथा अन्य कुटुम्बी जन गालियां देते थे तथा कभी कभी मार भी देते हैं। यह भी सही है कि दिनरात पशुओंकी तरह काम करने पर भी उसे रूखी सुखी रोटी तथा पुराने फटे कपड़े मिलते थे। लेकिन फिरभी तो स्त्रियोंको ईश्वरसे भी अधिक पूज्य पतिदेवके चरणोंकी सेवासे विलीन नहीं होना चाहिए था। खैर, तो तुम कुछ नहीं जानते तो मैं आगे बढ़ता हूं। (जाता है)

मलाईलाल—समझ गए दोस्त, इतना दुख सहने पर भी स्त्रियोंको ऐसा करना चाहिएका उपदेश ठीक है? मैं समझ गया, स्त्रियोंको हमारी गीदड़ समाज लुटेरे पुरुष पारिवारिक अन्याय तथा अनुचित शिक्षाने ही कर्त्तव्यच्युत किया है। अबसे मैं शादी करनेका विचार सदाके लिए छोड़ता हूँ।

(कामसेनाका विलास-भवन। रंगीन दीवारों पर स्त्री-पुरुषोंके
सम्मिलित प्रणय चित्र हैं। सामने विशालकाय दर्पण है।
बगलमें एक शीशेदार आलमारी है जिसमें शृंगारकी
सामग्रियां हैं। मेज पर दो गुलदस्ते महक रहे
हैं। फर्श पर मनोहर कालीन बिछा है,
जिस पर अनन्तमती चुपचाप बैठी है।)

अनन्तमती— आज किसे अपनाऊँ।
आशाकी हीरक लड़ियोंका, हार किसे पहनाऊँ।
स्वप्न तालिकाके सब मुक्तक,
ढूंढ़े, उरके घाव गए पक,
अंतर तममें किस निर्मोमके, तारक आज लजाऊँ।
उलझी जिसमें सौरभ ज्वाला,
बहता निर्मल प्रेम पनाला,
धवल ज्योतियां गगन-देशकी, मानसमें झलकाऊँ।
आओ प्रिय विपदाओ आओ,
जीभर जीवन-नभ पर छाओ,
दिलमें साहस-ओज संजोकर जीवनज्योति जगाऊँ।

आजाओ, जीवनाकाश पर घुमड़ घुमड़ कर मेरे उद्देश्य दिवाकरको अपनी क्रोणमें विलुप्त करनेवाली बाधाओं आओ, जागृतिकी स्फुरणा-मय राह पर तेरा स्वागत है। तुम मेरी इन आंखोंके सामने प्रलयकारी चण्डिका बनकर कौतुक ताण्डव करो। मेरी प्रतिज्ञाको ज्वालामुखीकी अनिल लपटोंमें झुलसानेका मनभर प्रयत्न करो। मेरे सुखकी राहपर

कष्टोंकी गगनचुम्बी गिरिशृङ्गियां खड़ी करो। प्रलोभनोंकी नुमायश सजाओ; किन्तु ऐ मन! तू विचलित न होना। अरी विपदा सखियों! तुम मुझे जब भी अपनी परीक्षामें देखोगी मैं सदैव खरा सोना साबित होऊंगी। तुम चाहे जब जान अनजानमें मुझे विपत्तियोंके घनसे मारमार कर अपनी अभिलाषा पूर्ण करो, मुझे चाहे जब सोते जागते विपरीत परिस्थितियोंकी चिनगारीमें तपालो, मेरी निर्मलता मेरी कांति सहस्रगुनी होकर मुझे दमकाएगी।

कामसेनाका प्रवेश।

कामसेना—(मृदुतासे) मेरी बेटी! तू अनमनी क्यों बैठी है। उठ, मुँह हाथ धो, खाना खा, हँस बोल, देख तेरे प्रमोदके लिए कितनी सामग्रियें उपस्थित हैं। अरे तूने तो किसी चीजको हाथसे स्पर्श तक नहीं किया। बेटी, घर तेरा है। मैं तेरी मां हूं, मुझसे संकोच क्यों करती है?

अनन्तमती—मां, मैं तो अपने घर जाकर ही प्रमुदित हो सकूंगी। अपनी स्नेहमयी मां और प्यारी सहेलियोंकी यादमें तो मैं आंसू ही पी सकती हूँ। उनका विरह अब नहीं सहा जाता। मेरी प्यारी मां, मुझ पर दया करो। मेरी इतनी बात मानलो, मुझे अपने मां बापके पास भेजदो, बहुत कृपा होगी।

कामसेना—(इशारेसे) तू मेरा मतलब नहीं समझी पगली! मैं तुझे तेरे मनहूस घर भेजनेको थोड़े ही लाई हूँ, मैं तुझे जीवनका सच्चा आनन्द उपभोग करानेके लिए लाई हूँ। तेरा यह उभरता नशीला यौवन, आकर्षक मदभरा सौन्दर्य, रसीली आंखें और मिश्री मिला

स्वर क्या यूँही ठुकरानेकी चीज है ? वेटी, अब तू नादान नहीं है। कुछ दुनियादारी सीख, आज जो तू दर दर ठुकराई जा रही है, भला क्यों ? तू अपने रूप यौवनका अनादर करती है न इसीलिए मेरी बात मान ले । तेरा आंचल अशर्फियोंसे भर जायगा। बड़े बड़े रईसजादे नवयुवक तेरे पैरोंकी धूल चूमेंगे । और तू.........

अनन्तमती—माताजी, वासनाओंकी उमड़ती मदिरा जीवनको सन्तोषका स्वर्ग नहीं दिखा सकती । ये क्षणिक मोहक स्वप्न मायाकी दुरुह कंटीली झाड़ियोंमें उलझा सदाको विलीन हो जाते हैं। छिः रूप-यौवन और सतीत्वको चांदीकी चन्द मुद्राओंके लिए वेचना कितना घृणित व्यवसाय है यह । नारीत्वके उपहासका कैसा ज्वलंत तथा कुत्सित आदर्श है । मांजी, मनोकामनाएँ वासनाकी मादक खोली ओढ़कर निरंकुश और असीमित रह जाती हैं जिनका क्षेत्र अनन्त और अगाध है और जिसमें पद पदपर आकर्षणोंका संग्रह है, अतृप्तिका दुःखद पारावार है। रूप सौंदर्यकी यह नुमाइश क्या नारीत्वकी घृणितसे घृणित और रोमांचकारी प्रतिक्रिया नहीं है ? नारी पवित्र है, उदारताकी प्रतिमूर्ति है—लेकिन वह स्वार्थकी जीती जागती यामिनी भी है, नश्वर इंद्रिय सुखोंकी अभिलाषासे प्रेमको नारीत्वको खुलेआम निर्लज्जतासे वेचनेवाली भी । यह मेरा जीवनमें प्रथम अनुभव है । मां, ये संसारके विलास-भोगके कंटकोंसे गूंथा हुआ सुखका हार नीरस है, भयंकर है, कष्टप्रद है । प्रवल कामनाओं पर विजय पाना ही सत्यानन्दका सोपान है ।

कामसेना—(ऊबकर) वेटी, तेरी ये सूखी नीरस बातें मुझे नहीं सुहाती । मैं तुझे अपनी समझती हूँ। तुझे सच्चे दिलसे प्यार करती हूँ

इसीलिए तेरी यह दुःखद दशा देखकर मेरे रोम रोममें सिहरन हो उठती है। देख, तेरे ये मधुसे भरे हुए रस-भरे अधर किसी प्रेमीके वियोगमें मरुस्थल हो रहे हैं, तेरी ये दोनों कमलके फूलसी विशाल आंखें कष्टोंके गर्त्तमें गिरी जा रही है। तेरे कमनीय गुलाबी कपोल शून्यमें चिपटनेको व्याकुल होरहे हैं, क्या तू इनपर ध्यान नहीं देती? जिसका कोई प्रेमी न हो, जिसपर कोई मरनेवाला न हो, जिसकी झोलीमें विभव न हंसता हो—जिसके रूप सौंदर्यका कोई पुजारी न हो उसका जीवन निरुद्देश्य व्यर्थ है। प्रकृतिने उसे सुन्दर बनाकर अपनी कलाका महान् दुरुपयोग किया है। मैं कहती हूँ तेरे समान लावण्यमयी सौंदर्य प्रतिमा यहां एक भी नजर नहीं आती। जिस तरफ तू अपना तरल मदिर कटाक्ष बाण चला देगी लाखों झूम झूम जांयेगे। जिसकी ओर तेरी प्रेमभरी मुस्कुराहट बिखर पड़ेगी वे निहाल हो जांयगे। तेरी एक मुस्कानका मोल देनेके लिए हजारों रईसजादे लालायित होंगे। तेरी एक एक बातपर हजारों अशर्फियां बरस पड़ेंगीं। आनंदकी हरी-भरी वाटिकामें प्रेमकी मधुर सलिला भागीरथीमें तू जीवनका सुख लूटेगी, दुनियां तुझपर गौरव करेगी। तू हजारोंके लिए ईर्ष्याकी चीज बनेगी। मेरी प्यारी बेटी, यह पागलपन छोड़ दे। धर्मके चक्करमें मत पड़। कर्तव्यकी चहार-दीवारीमें अपने अमर-सुखको बन्दी मत बना। जीवन चार दिनके लिए हैं।

" कर मजा दुनियाका गाफिल, जिन्दगानी कब तलक।
जिन्दगानी भी रही तो, नौजवानी कब तलक॥ "

यह यौवन ही नारीकी ऐसी अनमोल वस्तु है जिसके सहारे वह

जिन्दगीकी सब कामनाएं पूर्ण कर सकती है। यह बार बार नहीं आता। एक बार गया फिर सदाको गया। एक बार भूल हुई फिर सदाको पश्चातापकी दुर्धष ज्वाला सिलगी। इसलिए मैं बारबार कहती हूं यह हठ छोड़ दे और मौज कर।

अनन्तमती—मांजी, जिस भारतमें 'नारी रूपं पतिव्रतम्, लज्जाहीनं न शोभन्ते।' का दिव्य नाद होरहा है, जिस पवित्र भूमिपर एक ही नहीं लाखों सुकुमारियां अपने सतीत्वकी रक्षाके लिए सर्वस्व बलिदान कर गई हैं, जिसके जर्रे जर्रेमें नारियोंकी त्याग तपस्या और कुर्बानियोंके शिलालेख खुदे हैं, जहांकी महिलाओंका उत्तम आदर्श आज भी विदेशियोंको स्तब्ध और विस्मित कर रही है वहींकी नारियाँ अपने जीवनको कुविचार तथा विलासिताकी राहपर ले जाकर अपनेको पतिता और निर्लज्जा बना रही है। जीवनकी अनमोल निधिके साथ धातुके कतिपय टुकड़ोंका यह क्रय-विक्रय कितना घृणास्पद है। धिक्कार है इस विश्वमोही मदनको! प्रलोभना मायाको! जो शरीरको आत्माके विरुद्ध ले जाती है।

मां, ये विषय नश्वर हैं और असीमित हैं। हम युग युगसे इनका सहास्य उपभोग कर रही हैं; लेकिन हमें कभी इनसे तृप्तिका स्वाद नहीं आता। बल्कि इसकी कामना निरंतर वृद्धिगता ही होती रहती हैं। यह मनुष्य जीवन बार बार नहीं मिलता। यही जीवन सर्वश्रेष्ठ है। इसीमें हमें अपरिमित मानसिक और शारिरिक क्षमता मिलती है। इसीमें हम अपनेको तथा अन्य विश्वके असंतुष्ट जीवोंको सन्मार्गकी ओर अग्रसर कर कल्याणमय बना सकते हैं। हमारा कर्तव्य है कि

हम त्याग तपस्या सेवा और अपूर्व बलिदानसे संसार-काननमें भटकते हुए शोक-संतप्त मानवोंको अमर आनन्दका पथ बतलाएं। इन्द्रियोंका दासत्व हटाकर इनकी आत्माको स्वतंत्र करें। प्यारी मां, आओ इस पवित्र कार्यमें मुझे सहयोग दो। तब देखना कि इस क्षायिक मिथ्या आनन्दकी अपेक्षा उसमें कितनी तृप्ति, कितना अनिर्वचनीय सुख और शांति है। कौड़ीके पीछे अशर्फियोंको बेचना मूर्खतापूर्ण है।

कामसेना—बेटी, ये धर्म कर्मकी बातें तो विद्वानोंकी विद्वत्ताकी परिचायक है और त्यागियोंको महात्मा बनानेको पारसमणि होसकती हैं। ये तो पुस्तकोंमें बन्दकर आलमारियोंमें सजानेकी चीजें हैं न कि जीवनमें उतारनेकी। पुत्री, रूप-यौवनके बिना नारी जीवन व्यर्थ है। और प्रेमके बिना रूप यौवनका मूल्य दो कौड़ी भी नहीं है। प्रेम-हीन जीवन मृत्यु है। प्रेमहीन गृह श्मशान है। यह प्रेम योगियोंकी चीज नहीं। वे तो माया और मदनसे सर्वथा उन्मुक्त हो ईश्वराराधानामें वृथा कष्ट सहते हैं। यदि जीवनका उद्देश्य कष्ट सहना या तपाना ही होता तो संसारमें नाना भोग विलासकी सामग्रियोंकी आवश्यकता ही क्या थी। और फिर मनुष्य जन्म पानेके लिए इतनी आतुरताका क्या काम था। असलमें जो व्यक्ति इस वासना पथपर असफल हुए है विघ्नोंकी आंधीनें जिनकी आशालताओंको तोड़ डाला है वेही निराश व्यक्ति धर्मकी दिशा-ओंमें कदम रखते हैं। अपने कटु और विफल अनुभवोंको भोले प्राणियोंके सन्मुख रख विरक्तिका पाठ सिखाते हैं। वरना जीवनका तो ध्रुव लक्ष्य ही आनन्द प्राप्ति है। तुम्ही कहो परभवमें सुख पानेकी आशासे इस भवमें समस्त सुखोपभोगको ठुकराना निरा पागलपन नहीं तो और क्या है? यह तो उस मूर्खकीसी बात हुई जो रत्न पानेके लिये

अपने हाथमें आए रत्नको तिरस्कृत कर फेंक देता है। यदि दूसरे भव सुखकी आकांक्षा है तो वर्तमान सुखोंसे मुख मोड़ना व्यर्थ है।

अनन्तमती—माताजी, यदि हम पैसेको रत्नकी आशासे फेंक देते हैं तो हमारा पागलपन बुद्धिमानीमें गर्भित होजाता है। और फिर सुख पानेकी आशासे तो त्याग–सेवाके पथका पथिक नहीं बना जाता। यह तो स्वार्थ है, एक तरहकी तिजारत है। नहीं आत्मानन्दकी प्राप्तिके लिए ही यह मार्ग अपनाना पड़ता है। इसमें जो अक्षय और अमर सत्यानन्द है उसका आंशिक आभास भी वासना विलासितामें नहीं मिल सकता। यह तो धूलको कोल्हूमें पेलकर तेल निकालने जैसी मूर्खता है। सोचो, जिस वस्तु या जिस अभिलाषाके पूर्ण होनेपर भी कभी शांति और तृप्ति जनित सुख नहीं मिलता वह आनन्द प्राप्तिका साधन कैसे कहा जा सकता है।

आजतक दुनियामें कोई भी ऐसा जीव नहीं हुआ जिसने इच्छाओंकी लगामको निरंकुश छोड़कर तृप्तिका आनन्द लूटा है। इच्छाओंकी कामनाओंकी कोई न कोई परिधि तो निश्चित होनी ही चाहिए। ब्रह्मचर्य व्रत सर्वोत्तम है। पति व्रत मध्यम है। दो पतिके रखनेकी बात भी किसी हद तक मानी जासकती है लेकिन इस वेश्याजीवनमें वासनाका कहीं अंन्त नहीं। यह चौमुखी तृष्णा जीवनको कष्टोंके तम-मय समुद्रमें डुबो देती है। मां, मैं खूब समझ चुकी हूं। प्राण जानेपर भी इस निकृष्ट-पथका अवलम्बन न करूंगी।

कामसेना—(स्वगत) यह ठीक ही कहती है। वास्तवमें मैंने अपना इतना जीवन व्यर्थ पापपंकमें फंसाया। वासना अनन्त

और असीम है। वह कभी हमें आनन्दमयी नहीं बना सकती। तो क्या करूं? मैंने तो निश्चय किया है कि अवश्य ही मैं इस गर्त्तमेंसे निकलकर पवित्रताकी ज्योति जगाऊंगी। धन्य है इसकी निर्भीक स्वर लहरी और जितेन्द्रियता। किन्तु नहीं मैं इसे यूंही न छोडूंगी मैं इससे प्रतिशोध लूंगी और बहुत भयंकर लूंगी। मैं इसे किसी तरह राजाके पास पहुंचा दूं तो मेरा मनोरथ अवश्य सिद्ध होगा। वह बहुत कामुक परस्त्री लंपट और आचरणभ्रष्ट है। देखूं यह कहांतक अडिग रहती है। (प्रकट) पुत्री, मैं तेरी बातोंसे बहुत प्रसन्न हूं। मैं तुझे कभी इस पाप पंकमें घुसनेकी प्रेरणा न करूंगी। और अब मैं अपने जीवनको सुधारकी ओर लेजाऊँगी। हां यहांकी महारानी बहुत धर्मज्ञ है। वे तुम्हें देखकर अवश्य प्रसन्न होंगी और किसी न किसीके साथ अवश्य ही तुम्हें घर पहुंचा देगी।

अनन्तमती—तो दयाकर मुझे वहीं भेज दो।

× × ×

शीला—प्रियतम, मैं आज एक नवीन दशामें हूँ। इस चतुर्दिक फैले हुए वायु मंडलमें मानो उल्लास दौड़ दौड़ कर मेरे गले लग रहा है। जान पड़ता है गगनका विशाल थाला मेरे लिए अमर सुधाकी मूशलाधार वर्षा कर रहा है। दिलमें आज एक नई उमंग है।

सुमन—(आश्चर्यसे) क्या कहा शीले, तो क्या सचमुच ही तुम भावी जननी बननेकी तैयारी कर रही हो? तब तो यह अति दुखद समाचार है।

शीला—(मुस्कराकर) क्यों इसमें दुखकी क्या आशंका है भला इससे अधिक शुभ और सुखद संदेश हमारे लिए और क्या

होगा? हमारा उजड़ा घर उर्वरा बनेगा। हमारा नीरस अंधकारमय गृहाकाश एक नन्हे बालचन्द्रसे जगमगा उठेगा। हमारा सूना घर आबाद होगा। इस कल्पनासे दिल हर्षसे उमड़ उमड़ आना चाहिए प्रियतम।

सुमन—(घबराकर) नहीं नहीं हमारे गुप्त काले कारनामें अब सहज ही प्रकट हो जाएंगे। दुनियां हमारी ओर देखकर घृणासे मुँह सिकोड़ लेगी। हमारी समाज हमें अपनेसे बाहर निकाल फेंकेगी। नहीं नहीं, यह नहीं हो सकता। इज्जत खोकर जीनेसे मौत भली। पानीमें रहकर मगरसे वैर नहीं किया जा सकता। समाजमें रहकर समाजका शत्रु मैं कैसे बन सकता हूं।

शीला—यही है तुम्हारी मर्दानगी! जरा सी शंकामें सारा पुरुषत्व खो बैठे। मैंने तो तुमसे पहिले ही कहा था। यदि तुम्हें समाजका इतना भय था तो पहले ही सोच लेना था। क्यों मुझे पाप सागरमें डुबोया। तो क्या तुम्हारा प्रेम मुझे बहकानेके लिए छलावा था? तुम्हारे वे उन्मत्तप्रण मिथ्या थे। तुम्हारी मधुर बातें क्या कृत्रिमताकी रंगसाजीमें रंगी थी। मैं नहीं जानती थी कि तुम मिथ्या प्रेमका राग अलापते हुए व ठीक परीक्षाके समय मुझे टकेका जवाब दे दोगे। तो क्या बहन चन्द्रकलाने भी मुझे धोखा दिया? छिः पुरुष जाति कितनी स्वार्थी नीच और तमोमयी है। मैं इतनी सावधान रहकर भी इन रक्त-लोभी पुरुषोंके मायाजालमें बंध ही जाती हूं।

ओफ! क्या वह दिन भूल गए जब तुम कह रहे थे कि स्त्री और पुरुषोंका प्रेम सर्वथा निष्कपट और निस्वार्थ होना चाहिए। प्रेम और

स्वार्थमें जमीन आसमानका फर्क है। लेकिन स्वयं तुम्हीं आज स्वार्थकी बलिवेदी पर निर्मल प्रेमको कुर्बान कर रहे हो। तुम्हारी इन असंयत भावनाओंका मतलब क्या है?

सुमन—मैंने तुम्हारा जीवनभरका ठेका तो ले नहीं लिया है। तुम्हें स्नेहकी आवश्यकता थी वह मैंने दिया। लेकिन मैं तुम्हारे लिए समाजको नहीं छोड़ सकता। तुम्हारा क्या विश्वास! आज यहां हो, कल वहां! इतनी बड़ी जिन्दगीमें न जाने तुमने कितनोंसे प्यार किया होगा? और कितनोंसे नाता तोड़ा होगा? तुम्हारा जीवन कितनी ही घृणित पेचीदगियोंसे भरा है। आज समाजमें तुम्हारी आबरू एक भ्रष्ट पतिता कलंकिनीसे अधिक बढ़कर नहीं है। फिर तुम्हारे बूते पर मैं समाजसे दुश्मनी मोल ले क्यों अपनेको मुशीबतोंमें डालूं?

शीला—यदि तुम मुझसे सम्बन्ध विच्छेद ही करना चाहते हो तो करलो। मैं इनकार नहीं करती! लेकिन व्यर्थ मुझे कलंकित न करो। तुम समझते हो कि मेरे पापपूर्ण जीवनकी जिम्मेवार मैं हूं? नहीं, यह समझना तुम्हारी ज्यादती है। सरासर भूल है! मुझे पाप-पथकी ओर अग्रसर करनेका उत्तरदायित्व समाज पर है, जो तुम जैसे बगुला-भक्तोंके कन्धों पर लदा है! उसी समाजके भाग्य-विधाता पुरुषोंके अत्याचारोंने ही पवित्रात्मा नारीका यह काया पलट किया है। और तुम्हीं लोग अपनी करतूतोंका सारा दोष नारीके मत्थे मढ़कर साफ बच जाते हो। तुम्हारी इस हरकतोंने ही समाजमें वेश्याओं और पतिताओंको जन्म दिया है। क्या तुम सच्चे दिलसे आत्माकी गवाहीपूर्वक कह सकते हो? मैं जिस रूपमें आज तुम्हारी आंखोंके

सामने हूं वह अपनी प्रसन्नतासे हूं। अपनी ही मानसिक अभिलाषाके चंगुलमें कुकृत्य करने पर उतारु हूं ? नहीं। यह सब तुम जैसे पुरुषोंकी क्षुद्र मनोवृत्तियोंका ही विषफल है।

सुमन—व्यर्थ बहस न करो। स्त्रियोंकी प्रकृति ही झगड़ालू होती है। लो मैं जाता हूं।

(क्रोधित होकर जाता है।)

शीला—(स्वगत) देखा इन मायावी पुरुषोंकी माया कौन जानता है ? देखनेमें ये कितने सीधे सादे और भोले जान पड़ते हैं लेकिन अन्तर तममें कितना कालापन है इनके ? रूप और सौन्दर्य, जिसे देखकर पुरुषोंका रसिक मधुकर दिल उन्मत्त हो जाता है कुछ क्षण तक ही प्रेमका पात्र रहता है। नया और पुराना आज नया कल पुराना। पुरुषोंका हृदय कितना मनमौजी है ? किसीका भय नहीं, उन्हें धर्म उनका क्रीत दास है, समाज उनके पैरोंकी धूल है। धर्म और समाज तो स्त्रियोंके लिए है। उनके मार्गमें कण्टक बननेके लिए उन्हें अवनति गर्त्तमें ढकेलनेके लिए ही स्वार्थी धर्म और समाजकी नींव पड़ी है।

ईश्वर कितना निर्दय है—क्या उसने पुरुषोंके पक्षमें उनको आनन्द देनेके लिए ही संसारका निर्माण किया है ?

गाती है—

मुक्ति क्या भवन माया द्वार।
जिसमें बैठ सदा करता है तू अन्याय अपार॥

पुरुषोंको सर्वेश बनाया,
उनमें शौर्य ओज दिखलाया।
क्रूर स्वतंत्र मुक्त बतलाया॥
-क्यों? जब सरला नारी पर, करते थे अत्याचार।
नारीको बलहीन बनाया,
पुरुषोंके आधीन बनाया,
प्रेम क्षमा गुण लीन बनाया,
किन्तु वही क्यों निष्ठुर पुरुषकी निधिकी खाती मार॥
जिसकी लाठी उसकी भैंस,
क्या यह था तेरा उद्देश,
तुझमें थी जब शक्ति अशेष,
तब क्यों शक्ति समान न दी क्यों दिया न सम अधिकार।
नारी दासी मानव स्वामी
तूँ भी तो पुरुषोंका हामी,
धूर्त बना है अन्तर्यामी,
क्या दोनोंके बिना एकसे, चला जगत व्यापार॥

× × ×

(हाँफती हुई व्यथित मना चन्द्रकलाका प्रवेश।)

चन्द्रकला—सखी सखी, गजब हो गया!

शीला—क्या हो गया? तुम इतनी उद्विग्न क्यों हो रही? बैठो जरा दम ले लो, फिर कहो क्या हो गया?

चन्द्रकला—क्या कहूँ? दम लेनेकी चैन हो जब न? सुमनकुमार भाग गया।

नौकर—अभी अभी कह रहा था कि वे कह गए हैं कि मुझे एक बहुत जरूरी कामसे कलकत्ते जाना है। सब कुछ यहीं छोड़कर वे चले गए। अब न जाने कब आएँगे।

शीला—चले गए तो जाने दो, हमारा क्या ले गए? हम भी आदमी है। कमा खा लेंगे किसीके सहारे थोड़े ही बैठे हैं?

चन्द्रकला—यह तुम क्या कह रही हो? अब वे शायद ही आएं तब दोनों अबला नारी उनके बिना क्या करेंगी? बताओ तुमने तो कहीं भला बुरा कहकर जानेको उत्तेजित नहीं किया था?

शीला—चन्द्रो बहन, मैं आज तुमसे एक बात पूछती हूं। मुझे तुम अपनी बहनकी तरह प्रेम करती रही हो। मुझसे कुछ छिपानेकी कोशिश न करना। क्या वे तुम्हारे विवाहित स्वामी थे?

चन्द्रकला—बहन, मैं भी तुम्हारे समान दुनियां परिवारकी बिछुड़ी नारी हूँ। मेरा विवाह एक धनी कुलमें हुआ था। मेरे मां बापने दहेजमें अपनेको लुटा डाला था फिर भी लोभी सास ससुरको सन्तोष न था। वे दिन रात मुझे व्यंग बाणोंसे हलाल करते थे लेकिन पतिदेवका मधुर प्रेम मेरे सब कष्टोंको धूलकी तरह बुहार फेंकता था। दुर्भाग्यसे मेरे प्रियतम किसी मोहिनीके नयनबाणोंमें बेतरह उलझ गए। अब मेरी सूरतसे उन्हें नफरत होने लगी। अब उनके प्यारकी जगह लातों घूसों और वाग्बाणोंकी बौछारें मुझे मिलने लगीं। फिर भी मैं भारतीय नारीकी तरह सब कष्टोंको हंस हंसकर झेलती थी। न जाने किस अमंगल घड़ीमें इस सुमनकी निगाह मेरे पर पड़ी। फिर इसने तरह तरहके जाल मेरे फंसानेके लिए बनाने

प्रारंभ किये। मैं इन रहस्योंसे अनभिज्ञ थी। वही मुझे प्रेमके बाग दिखाकर यहां ले आआ। कुछ दिनों बाद इसका भी प्रेम मुझपर कम हो चला। मैं जान गई यह सौन्दर्य रस लोलुपी भौंरा है। नए नए सौन्दर्यकी कामनामें इसका मन उलझा रहता है। इसकी पिपासाकी पूर्त्तिके लिए ही मैं तुम्हें फुसलाकर लाई थी। लेकिन वह फिर भी हमारी जीवन नौकाको खेनेमें असमर्थ हुआ। आखिर हमारा साथ छोड़ कर चला गया।

शीला—गढे मुर्दे उखाड़नेसे अब क्या फायदा? अब तो हमें अपने भविष्यके विषयमें सोचना चाहिए। अबला कह देनेसे काम न चलेगा। बताओ तुम क्या राय देती हो?

चन्द्रकला—मैं क्या बताऊं? आजतक मुझे कभी ऐसा अवसर न मिला था। हाय कैसी अशुभ वेला थी वह जब मैं इसकी नजरोंमें पड़ी। मैं तो वहीं भली थी। पड़ोसिनें मुझे आदरकी निगाहोंसे देखती थीं। पति तथा सास ससुरके दुर्व्यवहारने अवश्य मुझे घायल कर दिया था। फिर भी मुझे आत्म-सन्तोष था कि मैं अपने कर्त्तव्योंका समुचित पालन कर रही हूं! तब यह आत्म-ग्लानि नहीं थी। अच्छा, तो अब हमें यहीं रहना चाहिए, हम अनाथिनी बाहर कहां जायगी। जैसे बनेगा गुजर करेंगे, और जब हमारे पास कुछ न रहेगा तो मौतका दरवाजा तो बेरोक खुला है ही।

शीला—इतनी भीरु और कायर न बनो बहन! जरा हिम्मत और बुद्धिसे काम लो। हम अपने परिवार या समाजमें तो स्थान पा ही नहीं सकती हैं क्योंकि धर्मच्युत और कलंकिनी हो चुकी हैं।

यहां मुर्दोंकी तरह रहना हमें होगा नहीं। दूसरे रूप और यौवन हमारे दो जबर्दस्त दुश्मन हमारे पास अब भी हैं। रसलोलुपी पुरुषोंकी दृष्टि इस ओर अवश्य पड़ेगी और वे हमपर भांति भांतिके अत्याचार करेंगे तो फिर हम इन सबसे सुरक्षित और स्वतन्त्र मार्ग क्यों न अपना ले? चलो हम भी वेश्या बनकर इन मधुकर वृत्ति पुरुषोंसे प्रतिशोध लें। मियांकी जूती मियांका सर वाली कहावत चरितार्थ करें। क्यों बहन ठीक है न?

चन्द्रकला—क्या कहूं बहन, मन गवाही नहीं देता। फिर भी हमें यह अवश्य करना ही होगा। जीवन रक्षाका अन्य कोई सुगम मार्ग इसके अतिरिक्त नहीं है। तो फिर जहां सुमन गया है वही कलकत्ता ही हमारा केन्द्र हो, आते जाते जान अनजानमें कभी तो वह मिलेगा ही तब कहेंगे, देखो हम तुम्हारे सहारे नहीं रहे।

शीला—बस बहन यही तय रहा। इन स्वार्थी पुरुषोंसे और किसी तरह भी हम नहीं जीत सकते।

अनन्तमती—जीवन-संग्राम कितना कण्टकाकीर्ण है? और कर्तव्य-पथ कितना दुर्गम है? साधना चिर साधना मौतका खिलवाड़ है। कालकी गोदीमें थिरकता हुआ जीवन कितना मनोहर और मधुर है। लेकिन इस विश्वमें कितने जीव-धारी ऐसे है जो इस जीवनकी कीमत पहचानते हैं। यह संसारी जीवन कितना भ्रांतिपूर्ण है। क्षणिक कामना सुखोंकी मरीचिका आशा कितनी चित्ताकर्षक और हृदयहारिणी है?

—नेपथ्यमें गान,

ओ सुकुमारी;

विश्वकुंजकी सुरभित कुसुमित, कोमल कलिका प्यारी !
फूलो फूलोजी भर फूलो,
डाल डाल पर नाचो झूलोः
कन कनमें सुगंध बिखराओ, महके यह फुलवारी !
किंतु न सीखो नेह लगाना,
क्यों इसका फल है मिट जानाः
स्वार्थ राग मत गाना बलना, जगकी शुद्ध दुलारी !
कोर कोरमें छोर छोरमें,
मानसकी प्रति प्रति हिलोरमेंः
स्निग्ध धवल मधु संचित रखना, रखना फूली क्यारी !!

(गाते गाते तपस्विनीजीका प्रवेश।)

अनन्तमती—(खड़ी होकर प्रणाम कर)-देवी, यह क्षुद्र बालिका आपके पादारविन्दोंमें श्रद्धा-सहित प्रणाम करती है।

तपस्विनी—बेटी, सद्धर्मकी दिव्य ज्योति तेरा मंगल करे। यहां एकांतमें क्या कर रही थी बेटी ?

अनन्तमती—वात्सल्यमयी जननी, तुमने मुझे जीवन-दान दिया है, अभयदान दिया है। मैं शत-शत युगमें भी तुम्हारे ऋणसे उऋण नहीं हो सकती।

तपस्विनी—बेटी तेरी मदद मैंने नहीं, तेरी अविचल भावना शक्तिने की है। तेरी ही ध्रुवप्रतिज्ञा, तेरे ही मनोकामना विजयने मुझे

बुलाया था, जो अपनी रक्षा स्वत: कर सकता है—भाग्य भी उसका सहयोगी बननेको उत्सुक रहता है। हां, यह तो कहो मेरे आनेके बाद भीलराजने क्या किया? क्या तभीसे तुम वनमें एकांतवासिनी बन निष्काम साधना कर रही हो?

अनन्तमती—नहीं मां, वहांसे अनेकों विपदाएं झेलती हुई मैं यहांके दुराचारी नृप सिंहराजके पंजेमें आ पड़ी। वह मुझे भांति २ के प्रलोभन जालोंमें न फँसा सका तो बलात्कारका मार्ग अपनाया। तुम्हारी ही तरह किसी तेजस्विनी तपस्विनीने मेरी रक्षा की। वह दुष्ट मेरी इस विजय पर बहुत झुंझलाया और क्रोधित हो उसने इस निर्जन वनमें अपने नौकरके द्वारा छुड़वा दिया, तबसे मैं यहीं विश्वकी इन गंभीर समस्याओंपर विचार कर रही हूँ।

तपस्विनी—बेटी, मैं सब जानती हूँ, तू हिन्दू समाजका कोहनूर है। कर्त्तव्यकी वेदीपर अपने तन-मन-धन सर्वस्वको कुर्बान करनेका साहस नारी समाजमें सचमुच आदर्श है। नारियां सदासे दिव्य आत्मबलकी प्रतीक रही हैं—त्याग तथा आत्म-बलिदानकी जीती जागती प्रतिमाएं हैं। उन्हींके सतीत्वकी दृढ़ नींवपर भव्य भारत-वर्षकी कीर्ति-पताका लहरा रही है। किन्तु आज हमारी बहनें अपने वीरत्वसे अनभिज्ञ होकर वासना-विलासिताके चंगुलमें अपनी सतीत्व-रूपी अनमोल निधिको कौड़ीके मोल लुटा देती हैं। क्या इसका प्रतिकार करना हमारा कर्त्तव्य नहीं है?

अनन्तमती—(मौन होकर कुछ सोचती है।)

तपस्विनी—क्या सोच रही है बेटी?

अनन्तमती—मां, मैं इन स्वार्थी मनुष्योंके कार्यकलाप पर एक सरसरी निगाह डाल रही हूं। उसे देखकर मेरे मानसमें गहरी अव्यक्त वेदना जागरित हो रही है। पुरुषोंके मोहक मायापाशमें हमारी भोली बहनें सहज ही जकड़ जाती हैं। इसमें सन्देह नहीं, नारी वासनासे घृणा करती है। निर्मल विश्व-प्रेम उसके मनमें निरंतर उद्वेलित होता रहता है। किन्तु इन स्वार्थी मनुष्यरूपी अजगरसे वह किस तरह मोर्चा ले? क्या प्रकृतिने स्त्रीमें कम शारीरिक शक्ति और पुरुषोंमें उसकी अधिकता देकर संसारके प्रति अन्याय नहीं किया है? आप ही बताइए प्रकृतिकी इस निर्माण कला पर कैसे विजय पाई जा सकती है?

तपस्विनी—यह सच है कि इसी शारीरिक शक्तिके बल पर पुरुष गर्वोन्मत्त हो उठे हैं; लेकिन यह उनका नितान्त जंगलीपन है। यदि हमसे दुर्बल व्यक्तिके पास धन है तो क्या हमें उसे छीननेका हक सभ्यताने दे दिया है? इन पुरुषों और पशुओंमें कुछ फर्क नहीं। ऐसे ही पतित पुरुष अपनी गृहपत्नियोंको मारते तथा उनपर अमानुषीय अत्याचार करते हैं। सभ्यताका तकाजा यही है कि निर्बलों पर किसी प्रकारका अन्याय न करना; किन्तु यदि यह नीच बर्बर जाति अपने काले कारनामोंसे बाज नहीं आती तब हमें ही अपनी आत्मरक्षाका कोई न कोई सफल प्रयत्न करना चाहिए। क्या तुम नहीं जानती गायका भोला और सीधापन ही वधिकको मारनेका साहस देता है। नारियां इस कडुए जहरको विना चूं चा किए पी लेती हैं इसीसे पुरुष जाति उनपर मनमाने सितम ढानेमें संकोच नहीं करती। क्या स्त्री उदारताकी देवी और पवित्र स्नेहमयी वसुधाकी तरह क्षमाशीला है?

तो क्या इसी लिए वह अवला कहलाने लगी? नहीं, यह हमारी मानसिक दुर्बलता है, आत्मिक बलकी हीनता है। हम अपने पैरोंपर खड़ी होकर अपनी रक्षाका आप ही प्रयत्न करेंगी तव हम अवश्य सफल हो सकेंगी। अन्यथा अपनी जीवनरक्षाके लिये पुरुषोंसे सहायताकी आशा करना तो ठीक वैसा है जैसा चूहेका बिल्लीसे भिक्षा मांगना।

अनन्तमती—तो देवी, आपही उसका उपाय बतला सकती हैं।

तपस्विनी—हमें अपनी शारीरिक और मानसिक शक्तियोंका पूर्णतया विकास करना चाहिए। हमें समझना चाहिए कि हम पुरुषोंके उपभोगकी वस्तु तथा वच्चा पैदा करनेकी मशीन ही नहीं हैं प्रत्युत उनके जीवन-संग्रामके प्रत्येक स्थलोंकी महत्वपूर्ण साथिनी तथा स्नेहवत्सला जननी हैं। हम दान दात्री हैं दान पात्री नहीं हैं। आत्मबलको हमेशा अपनी मुट्ठीमें रखना चाहिए।

× × ×

(नैपथ्यमें हृदयवेधिनी आहें सुनाई पड़ती हैं।)

अनन्तमती—देवी देखिए, उधर एक महिला व्यथित चित्तसे नदी-किनारे खड़ी है? क्या आत्महत्याकी प्रबल प्रेरणा ही उसे यहां खींचकर तो नहीं लाई?

तपस्विनी तथा अनन्तमती शीघ्रतासे उस तरफ दौड़ती हैं कि वह महिला नदीमें कूद पड़ती है।

अनन्तमती—हमारी आशंका निर्मूल नहीं थी। देवी, आप कुछ भय न करें, मैं अभी तैरकर उसे जीवित ही निकाल लाती हूं।

अनन्तमती वेगसे सरितामें कूद पड़ती है और जल्दी जल्दी जाकर युवतीका हाथ पकड़ लेती है। और उसे खींचकर किनारे पर आ जाती है।

तपस्विनी—(देखकर) अभी तो कुछ खतरनाक हालत नहीं हुई है। हां, सर्दी वहुत कड़ाकेकी है। लो तुम भी अपने गीले कपड़े वदलो और साथमें इनके भी वदलवादो। देखो यहांसे थोड़ी दूर पर एक कुटिया है वहांसे गर्म कपड़े ले आओ, तबतक मैं लकड़ियां इकट्ठी कर आग जलाती हूं।

(युवतीको कपड़े वदल कर आगसे गर्मी आती है और वह होशमें आ आंखें खोल इधर-उधर देखती है।)

तपस्विनी—(प्रेमसे सिर सहलाकर) वेटी, कैसी तवियत है तेरी?

युवती—मुझ अभागिनीको मरने क्यों नहीं दिया! मां मैं जीकर ही क्या करूंगी?

तपस्विनी—वेटी, मुसीवतोंसे डरकर मरने क्यों चली थी तू? नारी तो अकर्मण्य नहीं होती! बावली कहींकी, मरनेसे तो छुटकारा होता नहीं। मुसीवतोंका तो हँस हँसकर वहादुरीसे सामना करनेसे ही छुटकारा मिलता है! बेटी, क्या अपनी दर्दभरी कहानी अपनी मांको नहीं सुनाएगी?

युवती—मां, तुमसे भी छिपाकर मैं अपनी पतित कहानी विश्वके किस कोनेमें रक्खूंगी? मेरा नाम शीला है। मेरे जीवनके कुत्सित कारनामें, जिनका सम्मिश्रण ही मेरा जीवन है, सुनकर कोई

भी कुलवती लज्जाशीला नारी घृणासे धिक्कार दिए विना न रहेगी। फिर भी तुम अद्भुत क्षमाशील हो। मेरी सगी मांसे लक्षगुनी स्नेहमयी हो, तुमसे मैं कुछ न छिपाऊँगी। मां, मैं समाजके निरंकुश अत्याचारोंकी जीती जागती आदर्श हूं। मां, अपने भीषण पापोंकी अन्तर्ज्वालामें जली जा रही हूं। हाय! मेरा उद्धार अव कैसे होगा? मेरे अक्षम्य अपराधोंका समाजमें कोई प्रायश्चित्त नहीं। उनका दण्ड तो घुल-घुलकर मरना ही है। हाय! मुझे आपने क्यों जिला दिया?

तपस्विनी—वेटी, अधीर न वनो, औषधि वीमारको ही लाभान्वित कर सकती है। धर्म पतितोंके ही लिए है। जो पतितको पावन नहीं कर सकता, जो नीचोंको ऊपर उठानेकी क्षमता नहीं रखता वह धर्म नहीं, धर्माभास है। समाजका भय दूर करो, अव तो तुम उस एकपक्षीय अन्यायी समाजके शिकंजोंसे उन्मुक्त पवित्र धर्मकी गोदीमें हो।

तुम अनुभव करो कि मैं पतिव्रता नारी हूं। मेरी वह पर्याय वदल गई है। यदि तुम्हें अपने दुराचरण पर आन्तरिक परिताप है तो कोई वजह नहीं कि तुम्हारी गणना उच्च महिलाओंमें न हो। भारीसे भारी निन्द्यतम अपराधको सच्चे पश्चात्तापकी भागीरथी एक क्षणमें धो देती है। और आगे उसे न करनेकी ध्रुव प्रतिज्ञा उसे अमर और पावनतम वना देती है। गिर जाना असफलता नहीं, गिरकर उठनेका प्रयास न करना ही असफलता है। वेटी, तुम अपनेको हीन न समझो। तुम्हारे शरीरमें भी दिव्य आत्मा निवास करती है जो अनन्त शक्तिसंपन्न और ज्योतिर्मयी है। वेटी, यह क्या तुम रो रही

हो; छिः पगली रोया जाता है कहीं। जो धर्म जितने अधिक पतितोंको उभारता है वह उतना ही विशेष श्रद्धास्पद और प्रशंसनीय होता है ठीक उसी तरह जो आत्मा जितने अधिक पाप-पङ्कमें धुसकर उसके अनुभवोंसे आगे बढ़नेका प्रयास करती है, वह अवश्य सफलीभूत होती है। धक्के पर धक्के खानेसे हम अनुभूत, प्रयोगी और स्थायी वीर बन जाते हैं। तुम यह मत सोचो कि अब हमारा उद्धार नहीं हो सकता। नहीं-नहीं बेटी, तुम अपनेको पवित्रात्मा समझो। विश्वके समस्त माया-जालको भेदनेके लिए कटिबद्ध होकर सेवा-पथको अपनाओ, तुम विश्व पूज्य हो सकती हो।

शीला—(चरणों पर गिरकर) देवी, लेकिन मैं किस मुँहसे अपने अपराधोंकी क्षमा मांगूँ। मैं अपने कृत दुष्कर्मोंका कड़वा प्रतिफल भोग रही हूँ। देवी, मैं अपने घृणित जीवनकी देन महा भयंकर व्याधियोंका भार लादे हूं। हाय! मेरी जीवन रक्षा नहीं हो सकेगी, काश कुछ दिनोंको भी मैं जीवित रह पाती। न जाने क्यो पुण्य कृत्योंका लोभ मुझे जीनेको तरसा रहा है।

तपस्विनी—बेटी, निश्चिन्त रहो तुम्हारी कामना अवश्य पूरी होगी। मैंने तुम्हीं जैसी बहिनोंके निष्काम-साधना व्रतके लिए "नारी-सेवासदन" नामकी एक संस्था कायम की है जो पतित बहिनोंको सद्धर्म-पथ पर अग्रसर करती है। चलो तुम भी वहां चलकर अपना नारी जीवन सफल करो (अनन्तमतीकी ओर इशारा कर) देखो, यह भी तुम्हारे समान ही परिवारसे बिछुड़ी आपत्तियोंकी मार खाई हुई एकाकिनी नारी है। फर्क सिर्फ यही है कि इसने अन्तरात्माकी पुकारको सुना है और उसीके अनुरूप विपदा-पर्वतोंके वारको फूलकी

तरह झेला है और तुम अन्तरात्माकी आवाजका उपहास कर मुसीबतोंके भारमें किंकर्त्तव्य विमूढ़ बनी हो। चलो, अधिक देर करना ठीक नहीं। रजनीकी श्याम-साड़ी विश्वकी रंगभूमिको ढंकती आरही है और आज तो अमावस्या है।

सबका प्रस्थान ।

× × ×

स्थान—नारी सेवा-सदन स्वास्थ्य-सदनका कमरा। पलंगपर एक रोगी बेसुध पड़ा है। उसकी टांगपर पट्टियां बंधी हैं। अनन्तमती और शांता तथा विमला दो छात्राएँ पास ही बैठी हैं।

विमला—सखी, देखो अब इनकी पलकें कुछ कुछ जागृत हो चली हैं। शरीरमें रक्त वाहिनी नलिकाएं अपना कार्य सम्हालने लगी हैं। मैं समझती हूँ अब कुछ ही क्षणोंमें रोगी होशमें आ जायगा।

शांता—एक बात पूंछू सखी अन्नो, जबसे तुमने इस वयोवृद्ध रोगीको देखा है तुम्हारी आत्मा संवेदनामयी और अद्वितीय स्नेहमयी हो चली है। खैर रोगीके प्रति प्रेम तो सभीको रहता है—लेकिन तुम्हारी दशा तो अजीब ही हो गयी है। इन्हें बार बार देखकर जैसे तुम कोई बीती कहानी दुहरा रही हो। तुम्हारी आंखोंमें छलते आंसू तुम्हारी गहरी आत्मीयताको व्यक्त करते हैं।

अनन्तमती—(संभलकर) बहन क्या कहूँ तुमसे, इनकी शक्ल सूरत देखकर मुझे धारणा होती है कि ये मेरे अवश्य कोई हैं और

इन्हें मैंने देखा है। इन्हें सचेत होने दो फिर मैं अपना भ्रम दूर करूँगी। कदाचिद् ये मेरे निकट-सम्बन्धी ही साबित हों।

शांता—मेरी अन्नोबहन, आज तो तुम्हारा मधुर संगीत सुननेको जी चाहता है। क्या मेरा अनुरोध टाल दोगी?

अनन्तमती—(हंसकर) मैं निहोरे करवाना पसन्द नहीं करती। मैं, और तुम्हारी बात टाल दूँ? यह कदाचिद् भी संभव नहीं।

(अनन्तमती गाती है।)

यदि मैं कोइलिया बनकर, मंडरा जाती जगती तरु पर।
तो अति होती मुदित, विश्वके लिए लिख गाने गाकर॥
अमर तरल शुचि विश्व-प्रेमका, करती मधुरिम चित्रांकन।
मनुज-हृदयके आशा वनको, मधु ऋतु करती आलिंगन॥
वह दिन देखूंगी कब विधि मैं, विश्व एक ही होगा प्राण।
विमल प्रेम निर्विमय हो सबमें, सब ही सबका रक्खें ध्यान॥

(रोगी सचेत हो अनन्तमतीका संगीत सुनने लगता है)

नारी और पुरुष हो सहमत, सहयोगी जीवन रणमें।
हो कटिबद्ध स्वकर्म हेतु, निष्काम प्रेमके बन्धनमें॥
सभी विश्ववासी गाएँगे, धवल प्रेमका मोहक गान।
आत्म त्याग अन्तरबल ही, हो श्रेष्ठ सत्य हो महिमावान॥
एक तान ऐक्यकी आकर, भर देगी जग छोरोंको।
शुद्ध प्रेमकी पावन सरिता, धो देगी जग कोरोंको॥

रोगी—(मुग्ध स्वरमें) वेटी, तू मानवी कोकिला है। तेरी अन्तर्वीणाकी मधुर झनकार मेरे हृदयक्षेत्रको अद्वितीय नवजीवन ला रही है। तेरे कण्ठसे निकले हुए ये स्वर मुझे वरवस तेरी ओर आकृष्ट कर रहे हैं। तुझे देखकर मेरे मानसमें हर्षका स्रोत उमड़ा पड़ रहा है। वेटी तू कौन है?

अनन्तमती—(लज्जित हो विनम्रतासे) महाशयजी, मैं एक क्षुद्र बालिका हूँ।

नारी-सेविका दलकी साधारण कार्यकर्त्री हूँ।

रोगी—(कुछ यादकर) मुझे कुछ याद नहीं आता, मैं यहां क्योंकर आगया? क्या तुम मेरा सन्देह दूर कर सकती हो?

अनन्तमती—आप कहीं जा रहे थे, मार्गमें कह नहीं सकती किस कारण आपको खतरनाक चोट लग गई। हम लोगोंने आपकी यह दशा देखकर यहीं लाना उचित समझा। आज चार दिनमें आपने आंखें खोली हैं। आपको स्वस्थ देखकर हमारी कामना पूर्ण हुई।

रोगी—(इधर उधर देखकर) वेटी, मुझे कहते संकोच होता है मेरे साथ—

विमला—हां हां आप निश्चिन्त रहिए, वे सकुशल हैं। बहन शांता जरा "बहिनजी" को तो बुला लाना और एक गिलास गर्म दूध भी लाना और हां माताजीको भी यह शुभ सूचना दे देना कि रोगी अब स्वस्थ हो रहे हैं।

रोगी—बेटी क्या तुम बता सकोगी ? नारी सेविका-दलका उद्देश्य तथा कार्यक्रम क्या है ?

विमला—अवश्य, किन्तु हमारी अपेक्षा माताजी आपको अधिक स्पष्ट रूपमें बता सकेंगी, इसलिए कृपया क्षमा करें । लीजिए वह भी आ गईं ।

(तपस्विनी तथा " बहिनजी " आती हैं । बालिकाएँ उठकर प्रणाम करती हैं । तपस्विनीजी सबको स्नेह दृष्टिसे देखतीं हैं ।)

तपस्विनी—(रोगीसे) कहिए महाशयजी, आपका स्वास्थ्य तो अब ठीक है न ? किसी तरहकी तकलीफ तो नहीं है आपको ।

रोगी—(उठकर) आपकी कृपा है देवी ! यदि आप न होती तो मैं न जाने किस मरणासन्न दशामें होता । मेरी इच्छा है आप नारी सेविका-दलके उद्देश्य तथा कार्यक्रम बताकर मेरे सन्देह दूर करें ।

तपस्विनी—सहर्ष सुनिए ! वर्त्तमानमें हमारी नारी समाज बहुत ही गिरी दशामें और निज कर्त्तव्य-विमुख हो रही है । समाज तथा पुरुष जाति उनपर नये नये सितम ढ़ा रही है । मनमाने अत्याचार कर रही है । इस संस्थाका उद्देश्य अपनी इन्हीं भूली भटकी बहनोंको सन्मार्ग पर लगाना है । जो लड़कियां सेवा-पथ पर चलकर अपना जीवन सफल बनाना चाहेंगी उनके लिए यहां यथाशक्ति उत्तम प्रयत्न किए गए हैं । और जो गृहलक्ष्मी बनना चाहेंगी

उन्हें सत्पात्रके हाथों सौंप दिया जायगा। जब आपका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हो जाय तब आप यहांका निरीक्षण कीजिएगा।

रोगी—देवी, मैं अब पूर्ण स्वस्थ हूँ और अभी देखनेकी इच्छा रखता हूँ चलिए।

(सब चलते हैं। दो लड़कियां नाम और परिचय बताती जा रही हैं।)

देखिए यह शिल्पगृह है। यहां बालिकाओंको दस्तकारी तथा शिल्पकला सिखाई जाती है। यह साहित्य सदन है यहां बहिनें पुस्तकावलोकन करती हैं, तथा साहित्य-सेविका बनती हैं। यह हस्तकला मन्दिर है, यहां करघेसे वस्त्र निर्माण कला तथा सूत कातना, बुनना आदि सिखाया जाता है। यह आनन्द सदन है, यहां अवकाशके समय बहनें पवित्र मनोविनोद करती हैं। देखिए, यह अतिथिगृह है, यहां आगन्तुकोंका स्वागत सत्कार किया जाता है। इससे कुछ दूर यह संगीत भवन है। इस तरफ दाहिने बाजूमें गोशाला है और बाएँ बाजूमें भोजनालय है। अब आप थक गए होंगे, इस बागके बीचोंबीच भारत माताका तथा ईश्वरका मन्दिर है, उसे कल देखिएगा, और इसके बाहर वहां जो पेड़ दिखाई दे रहे हैं वह बहिनोंका प्राकृतिक कार्य है। चलिए आप स्वास्थ्य-गृहमें चलकर आराम कीजिए।

अंगवती—बेटी (अनंतमती) तुझे देखकर मेरा हृदय उमड़ा पड़ रहा है। मनमें अपूर्व ममता जागरित हो रही है। तेरी शक्ल

अनन्तमती ।

सूरत तथा मधुर स्वर लहरी अनन्तमतीकी याद दिलाती है। हाय उसे बिछुड़े आज १५ वर्ष गुजर गए बेटी अपना परिचय देकर मुझे सन्देह रहित करो।

अनन्तमती—(मांके पैरों पर गिरकर गद् गद् स्वरसे) मां, मैं ही तुम्हारी अभागिनी बेटी हूँ (मुझे क्षमा करो।)